

प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा  
( डी.एल.एड. )

पाठ्यक्रम-506  
समावेशी-संदर्भ में बच्चों को समझना

ब्लॉक-2  
बच्चों का व्यक्तित्व विकास



राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान  
A 24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,  
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309  
वैबसाइट : [www.nios.ac.in](http://www.nios.ac.in)

<b>EXPERT COMMITTEE</b>		
<p><b>Dr. Sitansu S. Jena</b> Chairman, NIOS, NOIDA</p> <p><b>Sh. B.K.Tripathi</b> IAS, Principal Secretary, HRD, Govt. of Jharkhand, Ranchi</p> <p><b>Prof. A.K. Sharma</b> Former Director, NCERT, New Delhi</p> <p><b>Prof. S.V.S. Chaudhary</b> Former Vice Chairperson, NCTE, New Delhi</p> <p><b>Prof. C. B. Sharma</b> School of Education, IGNOU, New Delhi</p> <p><b>Prof. S.C. Agarkar</b> Professor, Homi Bhabha Centre for Science Education , Mumbai</p>	<p><b>Prof.C.S. Nagaraju</b> Former Principal, RIE (NCERT),Mysore</p> <p><b>Prof. K. Doraisami</b> Former Head, Department of Teacher Education and Extension, NCERT,New Delhi</p> <p><b>Prof. B. Phalachandra,</b> Former Head, Dept of Education &amp; Dean of Instruction, RIE (NCERT), Mysore</p> <p><b>Prof. K. K. Vashist</b> Former Head, DEE, NCERT, New Delhi</p> <p><b>Prof. Vasudha Kamat</b> Vice Chancellor, SNDT Women's University, Mumbai</p>	<p><b>Dr. Huma Masood</b> Education Specialist, UNESCO, New Delhi</p> <p><b>Prof. Pawan Sudhir</b> Head, Deptt. of Art &amp; Aesthtic Education, NCERT,New Delhi</p> <p><b>Sh. Binay Pattanayak</b> Education Specialist, UNICEF, Ranchi</p> <p><b>Dr. Kuldeep Agarwal</b> Director(Academic), NIOS,NOIDA</p> <p><b>Prof. S.C. Panda</b> Sr. Consultant(Academic), NIOS, NOIDA</p> <p><b>Dr. Kanchan Bala Kachroo</b> Executive Officer(Academic), NIOS,NOIDA</p>
<b>COURSE COORDINATOR</b>		
<p><b>Prof. B. Phalachandra,</b> Former Head, Dept of Education &amp; Dean of Instruction, RIE (NCERT), Mysore</p>		
<b>LESSON WRITERS</b>		
<p><b>Dr. Sharmista,</b> Lecturer BGS. B.EdCollege, Mysore</p> <p><b>Dr. T. N. Raju,</b> I/C Principal BES B.EdCollege,Bangalore</p> <p><b>Dr. Kavya Kishore,</b> Lecturer, IASE, Bangalore</p> <p><b>Dr. Parimala,</b> Guest Faculty Dept of Women Studies, Maysore University</p> <p><b>Dr. Jayanthi Narayan</b> Consultant, Special Education, (LD &amp; ID), Former Dy. Director, National Institute for the Mentally Handicapped, Secunderabad</p>	<p><b>Ms. Lakshmi Prasad. C</b> Student Counsellor SSN College of Engineering, Rajiv Gandhi Salai Kalavakkam , Tamil Nadu</p> <p><b>Dr. D. Rekha,</b> Project coordinator, V-Lead, Mysore</p> <p><b>Dr. S. Bhaskra</b> Retd Principal, RV Teachers College, Bangalore</p> <p><b>Mr. H. L. Satheesh,</b> Teacher, DM School, RIE, Mysore</p>	<p><b>Dr. I.P. Gowramma,</b> Asstt. Prof, RIE, Mysore</p> <p><b>Ms.Vidya Pramod,</b> Faculty, CBR Net work Bangalore</p> <p><b>Dr.Asha Kamath</b> Assistant Professor, Regional Institute of Education , Mysore</p> <p><b>Ms. Kalapana Prakash</b> Programme Co-ordinator KPAMRC Bangalore</p>
<b>CONTENT EDITOR</b>		
<p><b>Prof. S.K. Panda,</b> Professor STRIDE, IGNOU, New Delhi</p>		
<b>TRANSLATORS</b>		
<p><b>Dr. Ravinder Pal</b> Retd. Sr. Lecturer, DIET, New Delhi</p>	<p><b>Ms. Anuradha</b> Lecturer, DIET New Delhi</p>	<p><b>Dr. Satyavir Singh</b> Principal, S.N.I. College, Pilana, Baghpat (U.P.)</p>
<p><b>Dr. Anil Kumar Teotia</b> Sr. Lecturer, SCERT, New Delhi</p>		
<b>PROGRAMME COORDINATOR</b>		
<p><b>Dr. Kuldeep Agarwal</b> Director(Academic), NIOS, NOIDA</p>	<p><b>Prof.S.C.Panda</b> Sr. Consultant (Teacher Education), Acad. Deptt, NIOS, NOIDA</p>	<p><b>Dr. Kanchan Bala Kachroo</b> Senior Executive Officer (Teacher Education), Acad. Deptt, NIOS, NOIDA</p>
COVER CONCEPTUALISATION & DESIGNING	TYPESETTING	SECRETARIAL ASSISTANCE
<p><b>Mr. D.N. Upreti</b> Publication Officer, Printing, NIOS,NOIDA</p> <p><b>Mr. Dhramanand Joshi</b> Executive Assistant, Printing, NIOS NOIDA</p>	<p><b>M/S Shiyam Graphics</b> 431, Rishi Nagar, Delhi-34</p>	<p><b>Ms. Sushma</b> Junior Assistant, Academic, Department, NIOS, NOIDA</p>

## अध्यक्ष का संदेश .....

प्रिय अधिगमकर्ता,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लगभग 2.02 करोड़ अधिगमकर्ताओं के साथ वर्तमान में यह विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षण प्रणाली है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पास अपने शैक्षिक एवं व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए देश में और उसके बाहर 15 से अधिक क्षेत्रीय केंद्रों, 2 उपकेंद्रों और 5000 अध्ययन केंद्रों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय तन्त्र है। यह अधिगमकर्ताओं को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से केंद्रिक गुणवत्ता-शिक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण का उपागम उपलब्ध कराता है। इसके कार्यक्रमों का वितरण मुद्रित सामग्री के माध्यम से मुखाभिमुख शिक्षण से युग्मित, सूचना एवं संचार तकनीकि, श्रव्य-दृश्य कैसेट्स, आकाशवाणी प्रसारण, दूरदर्शन प्रसारण आदि से अनुपूरित होता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक स्तर पर अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अधिकार संपन्न किया गया है। प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्रस्ताव राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा उस क्षेत्र में कार्यरत अन्य अभिकरणों के सहयोग से विकसित किया गया है। यह संस्थान शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार विभिन्न राज्यों में अप्रशिक्षित अंतःसेवी शिक्षकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में एक बहुत ही नवीन एवं चुनौतीपूर्ण द्वि-वर्षीय उपाधि प्रदान करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के इस उपाधि पाठ्यक्रम में आप सबका स्वागत करते हुए मुझे सुखानुभूति हो रही है। मैं आपके राज्य के बच्चों के प्रारंभिक-शिक्षा में योगदान के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के अनुसार सभी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो गया है। हम समझते हैं कि एक अध्यापक के रूप में आपका अनुभव, एक अच्छा शिक्षक होने के लिए आवश्यक अपेक्षित कौशल आपको पहले ही प्रदान कर चुका है। चूंकि कानून द्वारा अब यह अनिवार्य है अतः आपको यह कार्यक्रम पूर्ण करना पड़ेगा। मैं आश्वस्त हूं कि आपके द्वारा अब तक संचित ज्ञान और अनुभव निश्चय ही आपको इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करेगा।

प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम में प्रशिक्षण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विधि के माध्यम से दिया जाता है और एक शिक्षक के रूप में आपके नियमित कार्य को बाधित हुए बिना आपको पेशेवर रूप से प्रशिक्षित होने का विस्तृत अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से आपके उपयोग के लिए विकसित स्व-अनुदेशात्मक सामग्री आपको सेवा के लिए योग्य होने के अतिरिक्त आपकी समझ सृजित करने और एक अच्छा शिक्षक होने में सहायक होनी चाहिए।

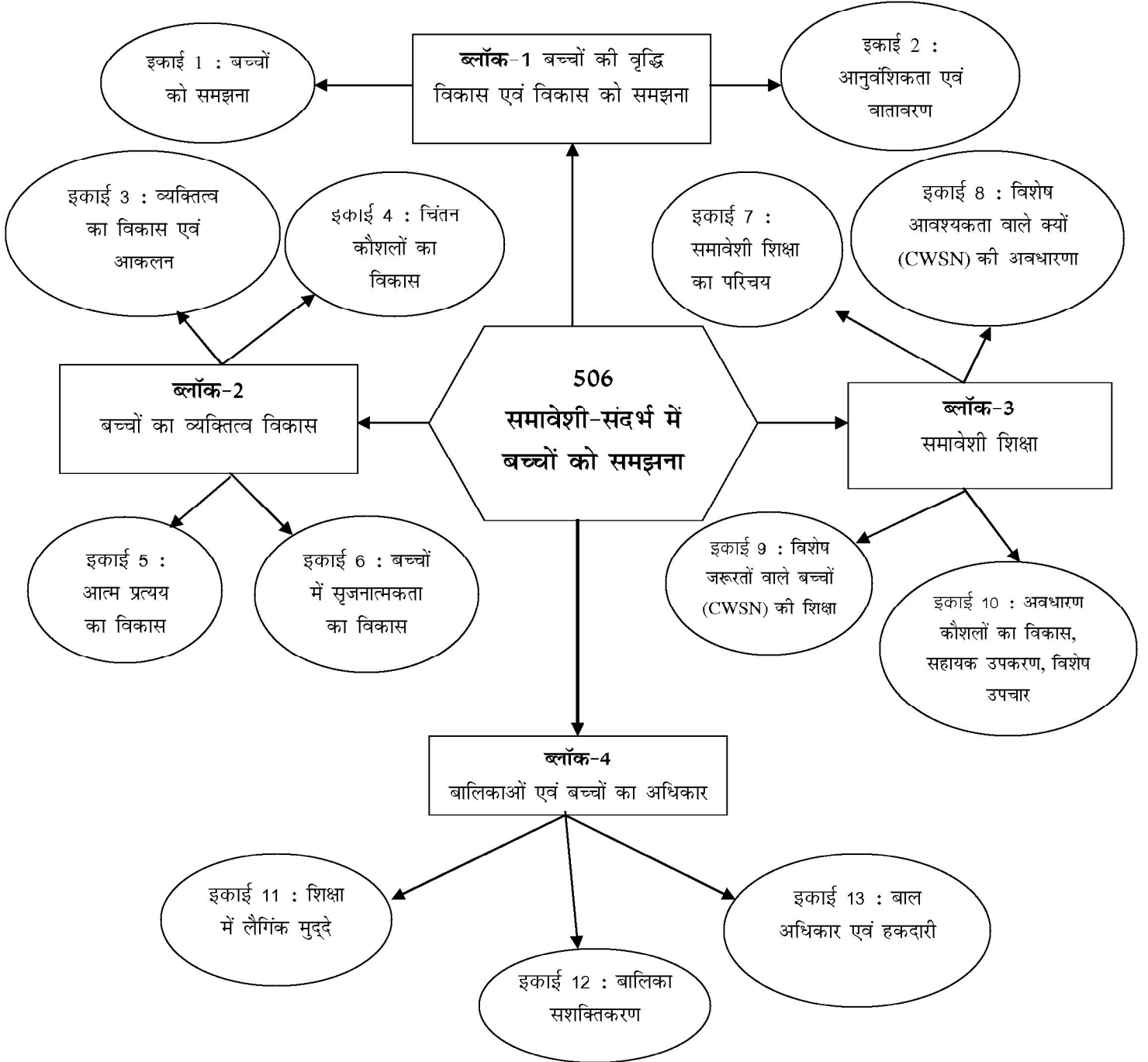
इस महान प्रयत्न में शुभकामनाओं सहित!

एस.एस. जेना

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

**पाठ्यक्रम अवधारणा मानचित्र**  
**पाठ्यक्रम-506 “समावेशी-संदर्भ में बच्चों को समझना”**





श्रेय अंक (8=6+2)

खण्ड	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
ब्लॉक-1 बच्चों की वृद्धि विकास एवं विकास को समझना	इकाई 1	बच्चों को समझना	6	3	<ul style="list-style-type: none"> <li>आपके विद्यालय के बच्चों के वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।</li> </ul>
	इकाई 2	आनुवंशिकता एवं वातावरण	6	3	<ul style="list-style-type: none"> <li>अपनी कक्षा के शिक्षार्थियों पर आनुवंशिक प्रभावों की सूची बनाओ।</li> <li>अपने विद्यालय में एक ही परिवार से भाई बहनों पर वातावरण के प्रभाव से संबंधित गुणों का पता लगाओ।</li> </ul>
ब्लॉक-2 बच्चों का व्यक्तित्व विकास	इकाई 3	व्यक्तित्व का विकास एवं आकलन	8	4	<ul style="list-style-type: none"> <li>अपनी कक्षा के शिक्षार्थियों में व्यक्तित्व की विशेषताओं में अंतर स्पष्ट कीजिए।</li> </ul>
	इकाई 4	चिंतन कौशलों का विकास	8	4	<ul style="list-style-type: none"> <li>आपके विद्यालय शिक्षार्थियों में प्रश्न पूछने संबंधी कौशल के विकास के तरीकों की पहचान करना।</li> </ul>
	इकाई 5	आत्म प्रत्यय का विकास	10	5	<ul style="list-style-type: none"> <li>आत्म प्रत्यय के विकास हेतु कक्षा कक्ष शर्तों की पहचान करना।</li> </ul>
	इकाई 6	बच्चों में सृजनात्मकता का विकास	9	7	<ul style="list-style-type: none"> <li>अपनी कक्षा में सृजनात्मकता में वृद्धि हेतु आपके द्वारा पैदा की जाने वाली परिस्थितियों को सूचीबद्ध करना।</li> </ul>
ब्लॉक-3 समावेशी शिक्षा	इकाई 7	समावेशी शिक्षा का परिचय	6	3	<ul style="list-style-type: none"> <li>आपके विद्यालय में समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों को सूचीबद्ध करना।</li> </ul>
	इकाई 8	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) की अवधारणा	7	4	<ul style="list-style-type: none"> <li>अपने विद्यालय में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अधिगम संबंधी जरूरतों की पहचान करना।</li> </ul>
	इकाई 9	विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा	9	6	<ul style="list-style-type: none"> <li>गृह-आधारित शिक्षा के लिए क्रियात्मक योजना तैयार करना।</li> </ul>
ब्लॉक-4 बालिकाओं एवं बच्चों का अधिकार	इकाई 10	अवधारण कौशलों का विकास सहायक उपकरण, विशेष उपचार	9	3	<ul style="list-style-type: none"> <li>अपने विद्यालय में किसी भी प्रकार की बाधा के संदर्भ में विशेष उपचारों पर सेमिनार</li> </ul>
	इकाई 11	शिक्षा में लैंगिक मुद्दे	9	6	<ul style="list-style-type: none"> <li>लैंगिक मुद्दों पर अपने विद्यालय की भूमिका की पहचान करना।</li> </ul>
	इकाई 12	बालिका सशक्तिकरण	9	6	<ul style="list-style-type: none"> <li>अपने विद्यालय की बालिकाओं में जीवन कौशलों के विकास में अपनी भूमिका को सूचीबद्ध करना।</li> </ul>

	<b>इकाई 13</b>	बाल अधिकार एवं हकदारी	9	6	<ul style="list-style-type: none"> <li>अपने विद्यालय एवं आस-पास के क्षेत्र में बाल अधिकारों के हनन को सूचीबद्ध करना।</li> </ul>
		<b>शिक्षण</b>	15		
			120	60	30
<b>कुल योग</b>			<b>120+60+60=240</b>		

## ब्लॉक-2

### बच्चों का व्यक्तित्व विकास

इकाई 3 : व्यक्तित्व का विकास एवं आकलन

इकाई 4 : चिंतन कौशलों का विकास

इकाई 5 : आत्म प्रत्यय का विकास

इकाई 6 : बच्चों में सृजनात्मकता का विकास

---

## खंड प्रस्तावना

---

### ब्लॉक 2 : बच्चों का व्यक्तित्व विकास

विद्यार्थी के रूप में आप खण्ड 2 : बच्चों का व्यक्तित्व विकास का अध्ययन करेंगे। इस खण्ड में व्यक्तित्व विकास, चिंतन कौशल तथा सृजनात्मकता से संबंधित चार इकाईयां हैं। प्रत्येक इकाई कुछ भागों तथा उपभागों में विभाजित है। इससे पहले आप खण्ड 1 : बाल विकास एवं वृद्धि के आधार का अध्ययन कर चुके हैं।

### इकाई 3 : व्यक्तित्व का विकास एवं मूल्यांकन

यह इकाई आपको व्यक्तित्व की अवधारणा तथा इसकी प्रकृति को समझने में मदद करेगी। आप व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों की सूचीबद्ध कर सकेंगे। आप व्यक्तित्व विकास के कुछ सिद्धांतों जैसे व्यक्तित्व का मनोविश्लेषण सिद्धांत, व्यक्तित्व का गुण सिद्धांत इत्यादि पर चर्चा कर सकेंगे। आप व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं जैसे—आत्मप्रत्यय, प्रेरणा, अभिरुचि तथा मूल्य इत्यादि के बारे में जान सकेंगे। यह इकाई आपको व्यक्तित्व के आकलन हेतु विभिन्न तरीकों को जानने तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक की भूमिका को समझने में मदद करेगी।

### इकाई 4 : चिंतन कौशलों का विकास

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप बच्चे में चिंतन, कौशलों के विकास की आवश्यकता का वर्णन कर सकेंगे। आप बच्चों में चिंतन कौशलों के विकास के महत्त्व को जान सकेंगे। आप विभिन्न सिद्धांतों जैसे—पियाजे का सिद्धांत, बुनर का सिद्धांत तथा सूचना प्रक्रिया सिद्धांत इत्यादि के माध्यम से चिंतन कौशलों के विभिन्न चरणों को जान सकेंगे। आप अपसारी चिंतन, अभिसारी चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन के विकास तथा चिंतन के विभिन्न उपकरणों की व्याख्या कर सकेंगे। आप चिंतन कौशलों के विकास में शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका को समझ सकेंगे।

### इकाई 5 : आत्म प्रत्यय का विकास

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप बच्चों में आत्म प्रत्यय की अवधारणा एवं इसको प्रभावित करने वाले कारकों को समझ सकेंगे। आप मूल्यों के विकास की प्रक्रिया तथा अनुशासन की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे। आप अभिरुचि को परिभाषित करने में समक्ष हो सकेंगे तथा इसके विभिन्न घटकों की सूचीबद्ध कर सकेंगे। यह इकाई आपको बच्चों में अच्छी अभिरुचि के विकास में अध्यापक की भूमिका को समझने में मदद करेगी। आप प्रेरणा एवं प्रेरणा के विकास तथा प्रेरणा के स्तर को बढ़ाने के तरीकों को जान सकेंगे।

## इकाई 6 : बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करना

यह इकाई आपको सृजनात्मकता का अर्थ एवं इसकी प्रकृति की समझने में सहायता करेगी। आप बच्चों में विभिन्न प्रकार की सृजनात्मकता को ढूंढने के योग्य हो सकेंगे तथा सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को जान सकेंगे। आप सृजनात्मकता को बढ़ाने वाली विभिन्न युक्तियों जैसे—मानसिक झंझावात (Brain Storming) अनुदेशनात्मक सामग्री, प्रश्न पूछना इत्यादि की चर्चा कर सकेंगे। आप सृजनात्मकता के बढ़ाने हेतु अधिगम सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया तथा इसमें सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के महत्त्व को समझने के योग्य हो सकेंगे। आप विभिन्न उपकरणों की मदद से सृजनात्मकता का आकलन करने के योग्य हो सकेंगे।

## विषय सूची

क्रम. सं.	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	इकाई 3 : व्यक्तित्व का विकास एवं मूल्यांकन	1
2.	इकाई 4 : चिंतन कौशलों का विकास	22
3.	इकाई 5 : आत्म प्रत्यय का विकास	52
4.	इकाई 6 : बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करना	73



---

## इकाई-3 व्यक्तित्व का विकास एवं आकलन

---

### संरचना

- 3.0 प्रस्तावना
- 3.1 अधिगम उद्देश्य
- 3.2 व्यक्तित्व की प्रकृति और संकल्पना
- 3.3 व्यक्तित्व की विशेषताएं
- 3.4 व्यक्तित्व के सिद्धांत
  - 3.4.1 व्यक्तित्व का गुण सिद्धांत
  - 3.4.2 व्यक्तित्व के मनोविश्लेषण सिद्धांत
- 3.5 व्यक्तित्व का विकास
  - 3.5.1 स्वयं की अवधारणा (आत्म-अवधारणा)
  - 3.5.2 अभिप्रेरणा
  - 3.5.3 अभिवृत्ति
  - 3.5.4 मूल्य
    - 3.5.4.1 मूल्यों की सूची
    - 3.5.4.2 मूल्य प्रदान करने के तरीके व साधन (शिक्षा की भूमिका)
- 3.6 व्यक्तित्व का मूल्यांकन
- 3.7 व्यक्तित्व के विकास में शिक्षकों की भूमिका
- 3.8 सारांश
- 3.9 प्रगति जाँच के उत्तर
- 3.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 3.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

---

### 3.0 प्रस्तावना

---

पिछली इकाई में हमने आनुवंशिकता व पर्यावरण की भूमिका पर चर्चा की है। इस इकाई में हम व्यक्तित्व के विकास व उसके मूल्यांकन पर चर्चा करेंगे। इस इकाई में हम मुख्यतः व्यक्तित्व की प्रकृति और संकल्पना, व्यक्तित्व की विशेषताएं, व्यक्तित्व के सिद्धांत, व्यक्तित्व का मूल्यांकन व व्यक्तित्व के विकास में शिक्षकों के योगदान पर ही अपना ध्यान केंद्रित करेंगे।



टिप्पणी

### 3.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- व्यक्तित्व का अर्थ बता पाएंगे।
- व्यक्तित्व की विशेषताओं की सूची बना लेंगे।
- व्यक्तित्व मूल्यांकन के प्रति जागरूकता विकसित कर लेंगे।
- बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षकों की भूमिका का वर्णन कर पाएंगे।

### 3.2 व्यक्तित्व की प्रकृति और संकल्पना

‘परसनेलिटी’ एक लेटिन शब्द ‘परसोना’ से बना है जिसका अर्थ है रोमन अभिनेताओं द्वारा पहना जाने वाला मास्क। इस प्रकार व्यक्तित्व या ‘परसनेलिटी’ का अर्थ है दूसरों के नजरिए में कोई व्यक्ति कैसा है। व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के बारे में सम्पूर्ण जानकारी है—

उसकी शारीरिक, भावात्मक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक व आध्यात्मक बनावट।

साधारण शब्दों में व्यक्तित्व निम्न चीजों से बनता है :

1. हम कैसे दिखते हैं।
2. हम कैसी वेशभूषा पहनते हैं।
3. हम कैसे बात करते हैं।
4. हम कैसे चलते हैं।
5. हम कैसे कोई कार्य करते हैं।



#### प्रगति जाँच-1

व्यक्तित्व से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....





### 3.3 व्यक्तित्व की विशेषताएं

1. व्यक्तित्व वह है जो व्यक्ति है।
2. प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अनोखा है।
3. व्यक्तित्व स्थिर नहीं है, गतिशील है।
4. व्यक्तित्व एक संपूर्ण इकाई की तरह कार्य करता है।
5. व्यक्तित्व आनुवंशिकी व पर्यावरण दोनों से मिलकर बना उत्पाद है।
6. व्यक्तित्व पूरी तरह से सामाजिक है।
7. व्यक्तित्व का पर्यावरण से लगातार समायोजन है।
8. कुछ विशेष परिस्थितियों में व्यक्तित्व पर्यावरण को प्रभावित करता है।
9. व्यक्तित्व हमेशा कुछ विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास है।
10. व्यक्तित्व स्वयं-अनुभूति है। हम पशुओं के व्यक्तित्व की बात नहीं करते।



#### प्रगति जाँच-2

व्यक्तित्व की दो विशेषताएं लिखो।

.....

.....

.....

### 3.4 व्यक्तित्व के सिद्धांत

व्यक्तित्व के कुछ मुख्य सिद्धांत इस प्रकार हैं :

#### 3.4.1 व्यक्तित्व का गुण सिद्धांत

जी.डब्ल्यू. आलपोर्ट, आर.बी. कैटल और एच.जे. आइसेंक व्यक्तित्व के गुण सिद्धांत के मुख्य प्रतिपादक हैं। गुण व्यक्तित्व का ऐसा आयाम है जिसे मापा जा सकता है और जो किसी व्यक्ति के अनुरूप व्यवहार का वर्णन करता है। संख्यात्मक तौर पर आयाम के रूप में गुण व्यापक



टिप्पणी

सकारात्मक सिरे से चरम नाकारात्मक सिरे तक मापन का व्यापक पैमाना है। मनुष्य के व्यक्तित्व के अर्थपूर्ण मापन के लिए गुण को किसी व्यक्ति की सबसे विशिष्ट व स्थिर विशेषता होनी चाहिए। गुण सिद्धांतवादकों के अनुसार, यदि हम स्वयं को कुछ मूल विशेषताओं तक सीमित रखें जो मनुष्य के व्यक्तित्व में स्थिर व विशिष्ट हों तो व्यक्तित्व के वर्णन की समस्या सरल हो जाती है। सिद्धांतवादक अक्सर आसानी से दिखने वाले गुणों व उन गुणों में जो गहराई तक और मूल व्यक्तित्व के समीप होते हैं, में अंतर करते हैं। गुण सिद्धांत में आसानी से दिखने वाले गुणों को 'सतही गुण' और गहराई में पाए जाने वाले गुणों को 'स्रोत गुण' कहते हैं।

बारह मूल गुण हैं :

1. उत्तेजना विषाद भावनात्मक रूप से अभिव्यक्ति; स्पष्ट, सौम्य	बनाम	अभिविदिलता सुरक्षित, कम बोलना, चिन्तित
2. सामान्य मानसिक क्षमता बुद्धिमान, स्मार्ट, मुखर	बनाम	मानसिक दोष बुद्धू, सुस्त, दबा हुआ
3. भावनात्मक रूप से स्थिर विक्षिप्त लक्षणों से दूर, जीवन के प्रति यथार्थवादी	बनाम	भावनात्मक रूप से विक्षिप्त विभिन्न प्रकार के विक्षिप्त लक्षण, काम से जी चुराने वाला, अपरिपक्व
4. प्रभुत्व स्व-मुखर, आत्मविश्वासी, आक्रामक, संतुष्ट	बनाम	विनम्रता, विनम्र, अनिश्चित;
5. उद्वेलन हंसमुख, खुशनुमा, विनोदी	बनाम	अवतोलन उदास, निराशावादी, सुस्त
6. सकारात्मक चरित्र संरक्षक, लोगो को ध्यान देने वाला	बनाम	निर्भर चरित्र, चंचल, सामाजिक कार्यों को अनदेखा करने वाला
7. साहसिक उत्तेजना विषाद लोगों को मिलना पसंद करना, विपरीत सेक्स में अधिक रूचि	बनाम	पिछड़ी अभिविदिलता शर्मीला, विपरीत सेक्स में कम रुचि
8. संवेदनशील भावनात्मक रूप से निर्भर, अपरिपक्व	बनाम	परिपक्व, कठोर, संयमित स्वतंत्र विचारों वाला, आत्मनिर्भर, परिपक्व, मिलकर रहने वाला, ध्यान खींचने वाला
9. सामाजीकृत, सुसंस्कृत मानसिकता सभ्य, ठहरा हुआ, तैयार, अंतर्दर्शनात्मक, संवेदनशील	बनाम	अशिष्टता अनाड़ी, असामाजिक, असभ्य
10. विश्वसनीय उत्तेजना विषाद, विश्वसनीय, समझदार	बनाम	संविभ्रम; पागलपन शक करने वाला, ईष्या करने वाला





- |  |      |   |
|--|------|---|
| 11. रूढ़िमुक्त, निश्चिन्तता<br>अपारम्परिक, सनकी, पागलपन<br>जैसी गड़बड़ियां करने वाला | बनाम | परम्परागत, व्यवहारिक<br>पारम्परिक, भावमुक्त |
| 12. दुनियादारी<br>तार्किक मानसिकता, शांत, एकांत पसंद                                 | बनाम | सादगी<br>भावुक मन, लोगों पर ध्यान देने वाला |

### 3.4.2 व्यक्तित्व के मनोविश्लेषण सिद्धांत

#### (अ) सिगमंड का व्यक्तित्व सिद्धांत

सिगमण्ड फ्रायड (1856-1939) मनोविश्लेषण के प्रतिपादक थे। उनका मनोविश्लेषण का सिद्धांत गतिशील है और इस धारणा पर आधारित है कि व्यक्तित्व और व्यक्तित्व विकास संघर्ष और घटनाओं द्वारा निर्धारित होते हैं जो मुख्यतः अचेतन प्रकृति के होते हैं और गहराई से अध्ययन करने पर ही समझ आते हैं। फ्रायड की व्यक्तित्व रचना ईद, अहं व सुपर अहं पर आधारित है। व्यक्तित्व के यह हर पहलू बाकी दो व्यक्तित्व के पहलुओं से एक तीन स्तरीय प्रणाली में जुड़े हुए हैं—ईद, अहं (ईगो) व सुपर अहं (सुपर ईगो)।

ईद पूर्णतः अचेतन है; अहं (ईगो) आंशिक रूप से चेतन है, और सुपर अहं (सुपर ईगो) पूर्णतः चेतन है। ईद व्यक्तित्व का प्राथमिक पहलू है। फ्रायड मानते हैं कि ईद अंधी प्रवृत्तियों का समूह है। इसकी कोई तार्किक व्यवस्था नहीं है। वास्तव में कई विरोधाभासी प्रवृत्तियां एक साथ उपस्थित हो सकती हैं। ईद नीतिहीन है। इसमें मूल्यों का कोई अर्थ नहीं है। यह अच्छाई और बुराई में कोई भेद नहीं कर सकता। इसमें आनंद का सिद्धांत प्रभावी है। ईद की प्रक्रियाएं अचेत है। इसे व्यक्तित्व की क्रियात्मक व अचेतन पहलू के रूप में सबसे अच्छे ढंग से वर्णित किया जा सकता है।

#### कामेच्छा और शिशु कामुकता

कामेच्छा ईद संरचना का वह भाग है जो शुद्ध रूप से यौन गतिविधि से अपनी संतुष्टि चाहता है। यौन संतुष्टि अन्य संतुष्टियों की भांति ही है और इसे किसी व्यक्ति की सामान्य आवश्यकता ही मानना चाहिए। फ्रायड इसे जीव के संपूर्ण प्रयास के रूप में मानते हैं। फ्रायड इस बात पर बल देते हैं कि कामेच्छा प्रत्येक जीव में, शिशु में भी उपस्थित होती है। हर बच्चा एक व्यवस्थित रूप से निर्धारित यौन उत्तेजना के साथ पैदा होता है। कामेच्छा निम्नलिखित क्षेत्रों के माध्यम से निर्धारित की जा सकती है :

1. ओरल (मुख) क्षेत्र : जन्म से दो वर्ष तक। इस आयु में बच्चे को होंठ चूसने से मजा मिलता है।
2. गुदा क्षेत्र : दो से तीन वर्ष तक। इस आयु में बच्चे को गुदा से निष्कासन व गुदा पर हाथ फेरने में मजा आता है।
3. जननांग क्षेत्र या फैंलिक अवस्था : 3 वर्ष से 5 वर्ष तक। बच्चे को अपने जननांग छूने से संतुष्टि प्राप्त होती है।



टिप्पणी

4. विलंबता अवस्था (लेटेंट स्टेज) : 6 वर्ष से 13 वर्ष की आयु सामाजिक दबाव के कारण कामुकता से दूर रहने की विलंबता अवस्था है।
5. फिक्सेशन अवस्था (स्थायी जुड़ाव अवस्था) : किशोरावस्था की इस अवस्था के दौरान समलैंगिक और विषमलैंगिक रूचियों का विकास होता है।

फ्रायड ने पाया कि उसके अधिकतर मरीज यौन संबंधों पर रोक यानि सैक्स की गैर संतुष्टि के कारण पीड़ित हैं। यौन इच्छाओं की संतुष्टि एक समावेशित व्यक्तित्व के विकास में मदद करती है।

#### ( ब ) अल्फ्रेड एडलर ( 1870-1937 )

एडलर के अनुसार यौन आवेग नहीं अपितु आत्मस्थापन प्रमुख प्रेरणा है। अल्फ्रेड के सिद्धांत ने यौन की भूमिका को कम कर दिया जिसपर फ्रायड ने इतना बल दिया था। एडलर सोचते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति एक अनोखी जीवन शैली विकसित करने का प्रयास करता है जिसमें यौन इच्छा की मामूली भूमिका है। एडलर का मानना है कि बचपन की अपर्याप्तता आरंभ में हीन भावना विकसित करने मुख्य रूप से जिम्मेदार है। हीन भावना का उदय जीवन में अपूर्णता या कमी के कारण होता है। यह विकास के उच्च स्तर की प्राप्ति में सहायक होता है। हमारे पास देमोस्थेनिस का उदाहरण है जो बचपन में हकलाता था लेकिन वह विश्व का सबसे बड़ा वक्ता बना। इसी प्रकार अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपनी युवावस्था में काफी कमजोर थे लेकिन बाद में नियमित व्यायाम द्वारा शारीरिक रूप से बलवान व्यक्ति बन गए। अपनी हीनता को दूर करके श्रेष्ठता की भावना प्राप्त करने के प्रयास व्यक्ति की जीवन शैली में उसके व्यवहार द्वारा प्रदर्शित होता है। कई तरीके हैं जिनके द्वारा व्यक्ति श्रेष्ठता प्राप्त करने का प्रयास करता है। जीवन शैली एक सिद्धांत है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व कार्य करता है। यह जीवन शैली दो कारकों से प्रभावित होती है—अंदर का स्वयं (इनर सेल्फ) तथा पर्यावरण को प्रभावित करने वाले बल। व्यक्ति के प्रारंभिक जीवन के अनुभवों का व्यक्ति की जीवन शैली पर काफी प्रभाव होता है।

एडलर मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति एक स्वयं की रचना बनाता है जो उसकी आनुवंशिक विरासत व पर्यावरण से प्राप्त अनुभवों पर आधारित होता है। एडलर कहते हैं कि जबकि जीवन शैली यांत्रिक है, 'सृजनात्मक स्वयं' अन्वेषित है और कुछ ऐसा बनाता है जो पहले कभी था ही नहीं। यह 'सृजनात्मक स्वयं' जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है। यह पोषण द्वारा प्रभावित होता है। एडलर सामाजिक अंतःक्रिया के प्रभाव पर बल देता है। दूसरों की भलाई के लिए कार्य करना व्यक्ति की अपनी कमजोरियों व हीन भावना को कम करने में मदद करता है। यह उसे अपनी श्रेष्ठ भावनाओं को प्रगट करने में सहायक है।

#### ( स ) कार्ल जंग ( 1875-1961 )

जंग ने व्यक्तित्व को अंतर्मुखी व बहिर्मुखी सम्प्रत्यों के रूप में माना है जो हमारी दैनिक भाषा के भाग बन चुके हैं। जंग के अनुसार, मानसिक क्रियाकलाप चार प्रभावी रूप लेते हैं : अनुभूति, सोच, अंतर्ज्ञान और भावना। सोच और भावना एक दूसरे से दो ध्रुवों की भांति विपरीत हैं परन्तु





दोनों प्रवृत्तियाँ व्यक्ति में एक ही समय में साथ-साथ पाई जाती हैं। यदि व्यक्ति की प्रभावी मानसिक क्रिया सोचना है तो अचेतन भावना की ओर हो जाता है। इसी प्रकार, अनुभूति और अंतर्ज्ञान एक दूसरे के विपरीत हैं। दोनों व्यक्ति में एक ही समय में कार्य करते हैं।

### बहिर्मुखी और अंतर्मुखी की सामान्य विशेषताएं

बहुमुखी	अंतःमुखी
1. वाक कुशलता	1. बोलने से लिखने में बेहतर
2. चिंतनमुक्त	2. चिंतित रहने की प्रवृत्ति
3. दूसरों के साथ कार्य करना पसंद करता है।	3. अकेले काम करना पसंद करता है।
4. मैत्रीपूर्ण	4. अपने तक सीमित रहता है।
5. जल्दी शर्मसार नहीं होता	5. आसानी से शर्मसार हो जाता है।
6. खेलकूद में रुचि	6. पुस्तकों व पत्रिकाओं में रुचि
7. वास्तुनिष्ठ आंकड़ों द्वारा नियंत्रित	7. विषयनिष्ठ भावनाओं द्वारा प्रभावित
8. लचीली व अनुकूलन योग्य	8. लचीलापन रहित
9. अपनी वस्तुओं व बीमारियों को ध्यान नहीं देते	9. ध्यान देते हैं।
10. उत्तेजनात्मक	10. विनम्र
11. बेईमान	11. ईमानदार
12. लोकप्रिय	12. लोकप्रिय नहीं।

अधिकतर व्यक्ति बहुमुखी और अंतःमुखी दोनों प्रकार के लक्षण दर्शाते हैं और उन्हें उभयवर्ती कहा जाता है।

जहां इतनी सारी विरोधाभासी व भिन्न प्रवृत्तियाँ क्रियाशील हों वह एक तरफा विकास होना स्वाभाविक है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक पहलू दूसरे पर प्रभावी हो जाता है और उसे पूरी तरह ढक लेता है। जंग का मानना है कि पूर्ण व्यक्तित्व तीन घटकों से बना है—चेतन अहं (ईगो); व्यक्तिगत अचेतन और सामूहिक अचेतन।

- (i) **चेतन अहं (ईगो)**—यह वास्तव में 'होने' का आभास है जो सोचने, महसूस करने व याद करने के चेतन पहलुओं को सम्मिलित करता है।
- (ii) **व्यक्तिगत अचेतन**—यह व्यक्ति के भूले-बिसरे व दबे हुए अनुभवों को मिलाकर बना है जो चेतन की पहुंच के भीतर हैं। इसमें व्यक्ति के सामाजिक वातावरण में प्राप्त अनुभव भी शामिल हैं।



टिप्पणी

(iii) सामूहिक अचेतन—ये प्रकृति में पुराने अनुभव हैं। यह वह भंडार है जिसमें से बाकी सभी व्यवस्थाएं उदय होती हैं।



### प्रगति जाँच-3

व्यक्तित्व के किन्हीं दो सिद्धांतों के बारे में लिखो।

.....

.....

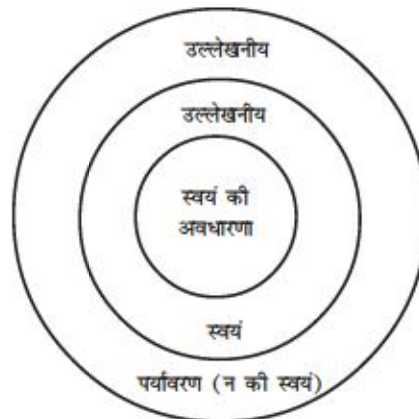
.....

## 3.5 व्यक्तित्व का विकास

इस भाग में हम चर्चा करेंगे कि व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू किस प्रकार विकसित किए जा सकते हैं। इन पहलुओं में स्वयं की अवधारणा, अभिप्रेरणा, अभिवृत्तियां व मूल्य शामिल हैं।

### 3.5.1 स्वयं की अवधारणा ( आत्म-अवधारणा )

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास काफी हद तक उसके अपने बारे में विचारों पर निर्भर करता है। एक सकारात्मक स्वयं की अवधारणा से एक सौहार्दपूर्वक विकसित, सुविकसित व्यक्तित्व बनता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि बच्चों में शुरू से ही एक सकारात्मक स्वयं की अवधारणा विकसित करवाई जाए जो सामाजिक रूप से वांछनीय हो। बच्चे के बपने बारे में विचार को ही स्वयं की अवधारणा कहते हैं। पर्यावरण के उस भाग में जिसमें वह रहता है, उसका उल्लेखनीय स्वयं कहलाता है और बाकी का पर्यावरण जिसकी वह जानकारी रखता है और जिससे वह प्रतिक्रिया करता है, उल्लेखनीय पर्यावरण या महसूस किया जाने वाला पर्यावरण कहलाता है, स्वयं नहीं। स्वयं की अवधारणा वह है जो व्यक्ति अपने वास्तविक स्वयं के बारे में सोचता है। यह 'मैं' है।







एक नवजात शिशु दुनिया को एक भ्रमित द्रव्यमान के रूप में पाता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, वह वस्तुओं में अंतर करना सीखता जाता है। वह अपनी व पराई वस्तुओं में भेद करता है। वह अपने आसपास की दुनिया को महसूस करता है और उससे प्रतिक्रिया करता है। स्वयं की धारणा परिपक्वता के साथ-साथ बदलती है। धारणा में परिवर्तन के कारण व्यवहार में भी परिवर्तन आने लगता है। प्रशंसा और आरोप, पुरस्कार और दंड तथा शिक्षक का व्यक्तित्व बच्चों में स्वयं की अवधारणा को प्रभावित करते हैं। महान व्यक्तियों के जीवन से सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित करने की प्रेरणा मिलती है। इसलिए विद्यार्थियों को उनकी जीवनियां पढ़ने के लिए कहना चाहिए। शिक्षक को उन्हें यथार्थवादी लक्ष्यों को निर्धारित करने के लिए मार्गदर्शन करना चाहिए जो उनकी पहुंच के अनुरूप हैं। अवास्तविक लक्ष्यों के निर्धारण से हताशा एवं निराशा विकसित होने की संभावना रहती है।

### 3.5.2 अभिप्रेरणा

'अभिप्रेरणा' शब्द का अभिप्राय है एक या अधिक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कार्य करने की प्रवृत्ति जागृत करना। अभिप्रेरणा कार्य को जागृत करने, बनाए रखने व नियंत्रित करने की प्रक्रिया है।

कक्षा में अभिप्रेरणा: विभिन्न तकनीकें

- (क) कक्षा अधिगम में विद्यार्थियों को शिक्षक से लगातार अभिप्रेरणा की आवश्यकता होती है ताकि उनकी प्रतिभाओं का अभिप्रेरणा विकसित करने में अधिकतम उपयोग हो सके। बच्चों में उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं संबंधी व्यक्तिगत अंतर होते हैं जो उनके व्यक्तित्व व सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि पर आधारित होते हैं। इसलिए शिक्षकों को भी अभिप्रेरणा तकनीकों में विभिन्नता लानी होगी और उन्हें विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग में लाना होगा। दूसरे शब्दों में प्रत्येक शिष्य को व्यक्तिगत रूप से लक्ष्य की दिशा की ओर ले जाना होगा जिसके बारे में वह जानता है कि और उसे प्राप्त करना चाहता है।
  - (ख) लक्ष्य शिष्यों की पहुंच के भीतर होने चाहिए और उन्हें प्राप्य लगने चाहिए।
  - (ग) शिष्य यह पता लगाने में सक्षम होना चाहिए कि वह लक्ष्य की प्राप्ति कर पा रहा है या नहीं। यदि नहीं तो कमी कहां है।
  - (घ) शिक्षक को अभिप्रेरणा की केवल एक तकनीक पर सख्ती से व पक्की तरह चिपके नहीं रहना चाहिए बल्कि उसे विवेकपूर्ण व वैज्ञानिक ढंग से सभी तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए।
1. **आकर्षक भौतिक वातावरण** : शिक्षक को कक्षा के भौतिक वातावरण का ध्यान रखना चाहिए। कक्षा के भीतर व बाहर कोई ध्यान भंग करने वाले कारक नहीं होने चाहिए। शोर, तेज प्रकाश व कुछ अवांछनीय नज़ारे बच्चों का ध्यान भंग करते हैं और रुचि कम कर देते हैं। असाधारण तापमान भी परेशानी उत्पन्न करता है। एक ही प्रकार की क्रियाएं भी बोरियत पैदा करती हैं।



## टिप्पणी

कक्षा कक्ष हवादार व आकर्षक ढंग से सजाए जाने चाहिए। स्कूल परिसर में फूल वाले पौधे होने चाहिए। सफाई पर पर्याप्त जोर देना चाहिए।

2. **जन्मजात आवेगों का बाहर निकलना :** छोटे बच्चों के अधिकतर व्यवहार जन्मजात आवेगों द्वारा निर्देशित होते हैं। बच्चे स्वभाव से बड़े जिज्ञासु होते हैं। वे बहुत सारी क्रियाएं करना चाहते हैं। हर नई व अजीब वस्तु उन्हें आकर्षित करती है। एक प्रभावी शिक्षक जिज्ञासा के इस आवेग को प्रोत्साहित करेगा। वह नया पाठ हमेशा किसी उसके बहुत ही नए व अजीब पहलू से शुरू करेगा। इसी प्रकार बच्चे कई वस्तुएं बनाना चाहते हैं। शिक्षक को उन्हें नई चीजें बनाने, उनका सर्जन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
3. **शिक्षक द्वारा प्रोत्साहन रूपांतर :** यह साधारणतः देखा गया है कि बच्चे एक चीज/क्रिया में लंबे समय तक ध्यान नहीं दे पाते। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की प्रभाविता काफी हद तक निर्भर करती है शिक्षक के व्यवहार में प्रयोग किए गए प्रोत्साहन रूपांतर पर। शिक्षक के व्यवहार में कुछ सामान्य कक्षा में रूपांतर इस प्रकार हैं :
  - (i) शिक्षक का कक्षा में गति करना
  - (ii) शिक्षक द्वारा किए गए इशारे
  - (iii) आवाज के पैटर्न में बदलाव
  - (iv) संवेदना केंद्र में बदलाव
  - (v) मुद्रा में परिवर्तन
4. **सुदृढीकरण :** प्रशंसा व निंदा (दोष)। इन्हें इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है:
  - (क) सकारात्मक मौखिक सुदृढीकरण—शिष्य के उत्तर देने के बाद शिक्षक मौखिक रूप से अच्छा, बहुत अच्छा, सही, ठीक है आदि कहकर खुशी का संकेत देता है।
  - (ख) सकारात्मक गैर-मौखिक सुदृढीकरण—इसमें शामिल हैं—सिर हिलाना, मुस्कराना, शिक्षक का शिष्य की ओर मैत्रीपूर्ण बढ़ना, देखना, शिष्य के उत्तर को शिक्षक द्वारा बोर्ड पर लिखना।
  - (ग) नकारात्मक गैर-मौखिक सुदृढीकरण—इसके अंतर्गत 'इशारे' आते हैं जैसे परिहास करना, त्योंरियां चढ़ाना, गुस्सा दिखाना, अधीरता दिखाना।
  - (घ) नकारात्मक मौखिक सुदृढीकरण—इसमें शिक्षक द्वारा इस प्रकार की टिप्पणियां आती हैं—नहीं, गलत, अच्छा नहीं है, बुरा उत्तर, बिल्कुल नहीं आदि।
5. **बाह्य अधिगम :** पुरस्कार और दंड। पुरस्कार व दंड देने की प्रक्रिया को सुदृढीकरण कहते हैं। पुरस्कार चाहे सामग्री के रूप में हों या प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक हों, बच्चे के सम्मान, आवश्यकताओं, सुरक्षा आदि की पूर्ति करता है व इन्हें बढ़ावा देता है और इस प्रकार प्रोत्साहन के रूप में कार्य करता है। गरीब बच्चों में सामग्री द्वारा पुरस्कार





- अधिक प्रभावी होता है जबकि अमीर घर के बच्चों को प्रतीकात्मक पुरस्कार से खुशी मिलती है।
6. **खुशी और दर्द** : व्यवहार के सबसे पुराने सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति उन खुशी देने वाले अनुभवों को ढूंढते हैं जिनसे हमें संतुष्टि मिलती है और दर्दभरे अनुभवों से वे दूर भागते हैं। इस सिद्धांत का कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर पूरा प्रभाव है। शिक्षक को खुशी देने वाले व संतुष्टि प्रदान करने वाले अनुभवों का प्रयोग करना चाहिए ताकि वे आगे सीखने के लिए अभिप्रेरित रहें।
  7. **प्राप्त लक्ष्य** : प्रत्येक पाठ में एक लक्ष्य होना चाहिए जहां हमें पहुंचना है। तभी विद्यार्थी उस विशेष दिशा में अपने प्रयासों को जारी रख सकते हैं। यह लक्ष्य विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिए जाने चाहिए।
  8. **सफलता का अनुभव** : सफलता का अनुभव एक विद्यार्थी को क्रियाकलाप जारी रखने के लिए प्रेरित कर सकता है। इसलिए शिक्षक को स्कूल के कार्य (पाठ्यक्रम संबंधी व सहपाठ्यक्रम संबंधी) इस प्रकार बनाने चाहिए कि उनमें विभिन्नता हो और हर विद्यार्थी को अपने स्तर पर सफलता का अनुभव हो। उसे सफलता के अनुभव या सुदृढीकरण, अधिगम के हर स्तर पर नियमित रूप से व अक्सर मिलते रहने चाहिए, विशेषकर आरम्भ में व मुश्किल अवस्था में।
  9. **प्रतियोगिता और सहयोग** : प्रतियोगिता क्रियाकलाप के लिए एक प्रेरणा है। परन्तु व्यक्तिगत आधार पर प्रतियोगिता असमान हो सकती है और कुछ विद्यार्थियों के लिए खतरनाक हो सकती है। समूहों में प्रतियोगिता से जीत या हार के अनुभव पूरे समूह में बंटने की संभावना बना देती है। सहयोग भी प्रेरणा प्रदान करता है क्योंकि यह शिक्षार्थियों को सामाजिक परिस्थितियां प्रदान करता है जहां उन्हें सामाजिक स्वीकृति व अपनेपन की आवश्यकताओं की पूर्ति से संतुष्टि मिलती है।
  10. **प्रगति का ज्ञान** : विद्यार्थियों को अपनी प्रगति का आभास कि वे किस प्रकार अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं, अभिप्रेरणा का एक प्रभावी रूप है। यह उन्हें अधिक प्रयास करवाने में सहायक है। प्रत्येक बच्चे का प्रगति चार्ट न केवल बच्चे को उसकी प्रगति के बारे में बताता है, बल्कि उसे अधिगम क्रियाकलापों में लगाए रखता है।
  11. **नवीनता** : अपनी प्रतिभाओं को चरम सीमा तक निखारने (आत्म-यर्थाधीकरण) के प्रयास में विद्यार्थी नया और कुछ अलग करने की खोज करते हैं। फील्ड ट्रिप, यात्राएं, नाटक, खेलकूद, साहित्यिक गतिविधियां आदि विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करने उनकी 'आत्म यर्थाधीकरण' की आवश्यकता की पूर्ति में सहायक होते हैं। परन्तु उनकी सुरक्षा की जरूरत के कारण उन्हें पहले से पता होना चाहिए कि नए अनुभव कब और कैसे प्रदान किए जाएंगे।
  12. **बच्चों में व्यक्तिगत विभिन्नताएं** : बच्चों की रुचियां व क्षमताएं भिन्न-भिन्न होती हैं। सभी बच्चों को हर समय, हर पाठ के लिए एक ही ढंग से प्रेरित नहीं किया जा सकता।



टिप्पणी

यह शिक्षक की जिम्मेवारी है कि वह बच्चों की रुचियों व क्षमताओं का पता लगाए और उसी के अनुसार उन्हें प्रेरित करें।

13. **शिक्षण कौशल** : शिक्षक के शिक्षण-कौशल अभिप्रेरणा को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। कक्षा में विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने के लिए आवश्यक शिक्षण-कौशलों की सही संख्या बताना आसान नहीं है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग किए जाने वाले सामान्य शिक्षण कौशलों की सूची इस प्रकार है :

- (i) पाठ को प्रस्तावित करने का कौशल
- (ii) प्रश्न पूछने का कौशल
- (iii) बच्चों के उत्तरों से निपटने का कौशल
- (iv) प्रोत्साहन रूपांतरण का कौशल
- (v) चॉक बोर्ड को प्रयोग करने का कौशल
- (vi) शिक्षण सहायक सामग्री व अन्य उपकरणों को प्रयोग करने का कौशल
- (vii) गैर मौखिक संकेतों का प्रयोग करने का कौशल
- (viii) सुदृढीकरण करने का कौशल
- (ix) चित्र व उदाहरण प्रयोग करने का कौशल
- (x) विषय वस्तु को समझाने का कौशल (विवरण देने का कौशल)
- (xi) स्पष्टीकरण करने का कौशल
- (xii) नियोजित पुनरावृत्ति करवाने का कौशल
- (xiii) सामूहिक चर्चा के लिए प्रेरित करने का कौशल
- (xiv) बच्चों से निष्कर्ष निकलवाने का कौशल
- (xv) शिक्षक द्वारा खुशनुमा व्यवहार दिखाने का कौशल
- (xvi) पाठ को अंत करने का कौशल
- (xvii) उपयुक्त शिक्षण विधियां प्रयोग करने का कौशल

14. **शिक्षक की अपनी प्रेरणा और शिक्षण में रुचि**—शिक्षक को स्वयं बच्चों में और वह क्या पढ़ा रहा है (विषय वस्तु) में रुचि लेनी चाहिए। यदि शिक्षक स्वयं कार्य में रुचि नहीं लेता तो वह बच्चों को कभी अभिप्रेरित नहीं कर सकता। कहा जा सकता है कि एक





शिक्षक जो कई वर्षों से एक ही विषय, उन्हीं कक्षाओं में पढ़ा रहा है, अपनी रुचि खो देता है। परंतु ऐसा होता नहीं है। विषय वस्तु एक ही हो सकती है परंतु बच्चे प्रति वर्ष बदलते रहते हैं। विषय वस्तु भी बदल रही है और अधिक विकसित हो रही है। अनुभव के साथ-साथ शिक्षक एक ही विषय वस्तु को पढ़ाने के नए उपागम व नई विधियां खोज लेता है।

### 3.5.3 अभिवृत्ति ( एटीच्यूड, रवैया )

शिक्षा के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य है कि बच्चों में ऐच्छिक अभिवृत्तियों का विकास किया जाए। बच्चे कई अभिवृत्तियां अवश्य विकसित करें जैसे अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति, स्वयं, मित्रों व कुछ आदर्शों के प्रति अभिवृत्ति। अभिवृत्ति या रवैया एक स्वभाविक तत्परता है जिसे किसी संस्था, व्यक्ति या वस्तु के प्रति एक नियमित रूप से सीखा गया है और वह व्यक्ति का प्रतिक्रिया करने का एक विशेष तरीका बन गया है। उदाहरण के लिए किसी का भोजन या पेय, खेलकूद, गणित या प्रजातंत्र के प्रति रवैया उसकी अभिवृत्ति है। इसमें व्यक्तित्व के कुछ पहलू शामिल हैं जैसे रुचियां, तारीफ, सामाजिक व्यवहार। अभिवृत्तियां सीखी जाती है या ग्रहण की जाती हैं।

### 3.5.4 मूल्य

मूल्य उन आदर्शों के लिए बने हैं जिनके लिए मनुष्य जीता है। वे जीवन के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो किसी के शारीरिक, सामाजिक व मानसिक स्वास्थ्य के अनुकूल हैं। मूल्यों को हम इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं:

- (i) जो हम मानते हैं- प्रकट मूल्य
- (ii) जो हम व्यवहार में लाते हैं-परिचालन मूल्य
- (iii) जिन्हें हम अनुभवों से सीखते हैं ताकि पुरातन पारंपरिक मूल्यों को नीवन परंपराओं में बदल सकें।

#### 3.5.4.1 मूल्यों की सूची

- |                     |                    |                              |
|---------------------|--------------------|------------------------------|
| 1. अनुशासन          | 20. सहानुभूति      | 39. परस्पर प्रेम ( भाईचारा ) |
| 2. कर्तव्य          | 21. राष्ट्रीय एकता | 40. निष्ठा                   |
| 3. सहिष्णुता        | 22. नेतृत्व        | 41. दयालुता                  |
| 4. समानता           | 23. श्रम की गरिमा  | 42. उदारता                   |
| 5. व्यक्ति की गरिमा | 24. समाजवाद        | 43. समर्पण                   |
| 6. मैत्री           | 25. समय बद्धता     | 44. अच्छा चरित्र             |
| 7. स्वतंत्रता       | 26. मानवता         | 45. नैतिक गुण                |
| 8. विनम्रता         | 27. समाज सेवा      | 46. अध्यात्मिकता             |
| 9. ईमानदारी         | 28. नियमितता       | 47. शिष्टता                  |



टिप्पणी

- |                            |                           |                             |
|----------------------------|---------------------------|-----------------------------|
| 10. अच्छा व्यवहार          | 29. अंतःराष्ट्रीय समझ     | 48. शालीनता                 |
| 11. सादा जीवन              | 30. देशभक्ति              | 49. अच्छा स्वभाव            |
| 12. न्याय                  | 31. आत्म-नियंत्रण         | 50. अंतर्दृष्टि             |
| 13. राष्ट्रीय चेतना        | 32. धैर्य                 | 51. त्याग                   |
| 14. शांति                  | 33. आत्मविश्वास           | 52. सादा जीवन और उच्च विचार |
| 15. दूसरों के प्रति सम्मान | 34. जिज्ञासा              |                             |
| 16. अहिंसा                 | 35. बुद्धिमता             |                             |
| 17. ज्ञान के लिए जिज्ञासा  | 36. उच्च सोच              |                             |
| 18. आज्ञाकारिता            | 37. उत्तरदायित्व की भावना |                             |
| 19. स्वाभिमान              | 38. निडरता                |                             |

### 3.5.4.2 मूल्य प्रदान करने के तरीके व साधन ( शिक्षा की भूमिका )

मूल्य विकसित करने के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि मूल्य सिखाए नहीं जाते अपितु विद्यार्थी उन्हें स्वयं ग्रहण करते हैं। यदि हम बार-बार विद्यार्थियों को कहें कि सदैव सच बोलो, झूठ बोलना पाप है, तो न तो वे सच बोलना शुरू कर देंगे और न ही झूठ बोलना बंद कर देंगे। परंतु यदि शिक्षक उपदेश देने की बजाय स्वयं सच्चाई का रास्ता अपनाए और विद्यार्थी उसे हमेशा सच बोलते ही पाएं तो शायद इसका प्रभाव उन पर पड़ेगा और वे सच का रास्ता अपना लेंगे। उदाहरण के लिए गांधी जी ने राजा हरीश चन्द्र का नाटक देखा और इस नाटक का उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपने बाकी जीवन में केवल सत्य का मार्ग अपनाया। इसीलिए मूल्यों के लिए कहा जाता है कि मूल्य पढ़ाए नहीं जाते बल्कि बच्चे उन्हें देखकर अपना लेते हैं। इसलिए विद्यालय और शिक्षक मिलकर यह प्रयास करें कि विद्यार्थियों में ऐच्छिक मूल्य विकास के लिए अवसर दिए जाएं। ये मूल्य स्कूल के वातावरण व शिक्षकों के आचार-व्यवहार में भी झलकने चाहिए।

जो भी कुछ कहा गया है उसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा विभिन्न माध्यमों द्वारा दी जा सकती है। ये तरीके व माध्यम नीचे दिए गए हैं:

1. **प्रार्थना सभा**—स्कूल में शिक्षण कार्य आरंभ होने से पहले यह आवश्यक है कि प्रार्थना सभा आयोजित की जाए। इसकी अवधि 15-20 मिनट की होनी चाहिए। कोई शक नहीं कि प्रार्थना सभा में ईश्वर की प्रार्थना होनी चाहिए। परंतु इसके अतिरिक्त धार्मिक चर्चाओं, देशभक्ति के गीत, नैतिकता पर भाषण समय के अनुसार शिक्षकों व विद्यार्थियों में द्वारा प्रस्तुत किए जाने चाहिए। इस प्रकार के प्रावधान प्रार्थना सभा में होने चाहिए।
2. **अनिवार्य विषय**—अनिवार्य विषय से अभिप्राय है कि नैतिक शिक्षा को एक विषय के रूप में स्कूलों के अंदर अनिवार्य रूप से पढ़ाना चाहिए। इस विषय में सभी धर्मों से लिया ज्ञान होना चाहिए। इसमें सभी धर्मों के सिद्धान्तों का निचोड़ होना चाहिए। इस विषय को पढ़ाने के लिए सप्ताह में कम से कम दो कालांश जरूर दिए जाने चाहिए।





3. **पाठ्यक्रम की पुनः व्यवस्था**—मूल्य शिक्षा प्रदान करने के लिए पाठ्यक्रम को पुनः व्यवस्थित करना पड़ेगा। कुछ विषयों में इस प्रकार के परिवर्तन करने चाहिए कि इन विषयों द्वारा सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय मूल्य भी विकसित किए जा सकें। इतिहास, भूगोल, सामाजिक ज्ञान, भाषाओं, साहित्य, कला व संगीत द्वारा यह संभव है।
4. **विस्तार व्याख्यान**—संस्था में समय-समय पर ऐसे विद्वान बुलाने चाहिए जिनका नैतिक विषयों से अटूट रिश्ता है। ये बुलाए गए विद्वान विस्तार व्याख्यान के तहत मनुष्य की भलाई से संबंधित अपने विचार प्रकट करें।
5. **भाषण प्रतियोगिताएं**—शैक्षिक मूल्यों पर आधारित विषयों पर स्कूल में भाषण प्रतियोगिताएं करवाई जानी चाहिए। विद्यार्थियों को इनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
6. **नाटक तथा एकांकी**—नाटक तथा एकांकी द्वारा स्कूलों में मूल्य शिक्षा आसानी से दी जा सकती है। इनके द्वारा नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है।
7. **जन्मोत्सव मनाना**—स्कूल में उन आदर्श व्यक्तियों के जन्मोत्सव मनाए जाने चाहिए जिन्होंने जीवन भर उच्च आदर्शों के उपदेश दिए और समाज के सम्मुख उन आदर्शों को प्रस्तुत भी किया। उदाहरण के लिए महात्मा गांधी, गुरु नानक, गुरु गोबिंद सिंह, बुद्ध, जवाहरलाल नेहरू, और एस. राजाकृष्णन के जन्मदिन स्कूल में मनाने चाहिए। इनके जन्मदिन मनाने से विद्यार्थियों को इनके मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलेगी।
8. **अंतःराष्ट्रीय दिनों को मनाना**—कई अंतःराष्ट्रीय दिवस हैं जिन्हें स्कूल में मनाना चाहिए जैसे विश्व शांति दिवस, मानव-अधिकार दिवस आदि। ऐसा करने से विद्यार्थियों में विश्व एकता का विकास होगा।
9. **मास मीडिया का प्रयोग**—विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा देने के लिए मास मीडिया का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। अखबारें, पत्रिकाएं, दूरदर्शन और रेडियो विद्यार्थियों में मूल्यों संबंधी जागरूकता उत्पन्न करवाने में सहायक हैं।
10. **राष्ट्रीय सेवा योजना**—विद्यार्थियों में समाज सेवा व राष्ट्रीय सेवा का भाव राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा विकसित किया जा सकता है। समाज सेवा से संबंधित कार्य करते हुए विद्यार्थियों में नैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास करवाया जा सकता है।
11. **मूल्य परक पत्रिकाएं**—विद्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं में इस प्रकार के लेख सम्मिलित करने चाहिए जिसके द्वारा विद्यार्थियों को कुछ शिक्षा मिले, जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास हो।
12. **शिक्षक की भूमिका**—शिक्षक को शैक्षिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। ऊपर लिखे सभी संसाधन शिक्षक को प्रयोग करने चाहिए। ऊपर लिखे सभी संसाधन शिक्षक को प्रयोग करने चाहिए। इस संदर्भ में हम शिक्षक की भूमिका पर पहले ही चर्चा कर चुके हैं। इस दुनिया में बच्चा जो भी कुछ सीखता है, दूसरों की नकल करके



टिप्पणी

सीखता है। बच्चों के लिए शिक्षक उनका आदर्श है और वे शिक्षकों की जीवन शैली की नकल करते हैं। शिक्षकों को बच्चों में मूल्यों को विकसित करने के लिए अपने आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए। शिक्षक का रवैया खुला होना चाहिए। एक शिक्षक मूल्य परक शिक्षा तभी प्रदान करता है जब वह स्वयं उसमें विश्वास करता हो। शिक्षक का यह प्रयास होना चाहिए कि जब भी मूल्यों के संदर्भ में कोई बात हो, वह उस पर बल देकर मूल्य परक शिक्षा प्रदान करे। समाज में शिक्षक ही एक ऐसा व्यक्ति है जिसके द्वारा बच्चों में सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास संभव है। इसलिए शिक्षक का व्यक्तिगत जीवन साफ, सुथरा, बाकी लोगों से ऊँचा और नकल करने लायक हो ताकि वह बच्चों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव छोड़ सके।



#### प्रगति जाँच-4

व्यक्तित्व के विकास के उत्तरदायी कारकों को बताएं।

.....

.....

.....

### 3.6 व्यक्तित्व का मूल्यांकन

मूल्यांकन की विधियों को मोटे तौर पर इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं :

- (i) वस्तुनिष्ठ विधियां
- (ii) व्यक्तिपरक विधियां
- (iii) प्रक्षेपी विधियां

पहली बात, विधियां और तकनीकें मानकीकृत और गैर-मानकीकृत में भी वर्गीकृत की जा सकती हैं। कुछ स्वयं रिपोर्टिंग विधियां भी हैं जिसमें जिस व्यक्ति का मूल्यांकन करना होता है वह अपनी रिपोर्ट स्वयं देता है। ऐसी विधियों में आता है आत्मकथा, साक्षात्कार, प्रश्नावली, और व्यक्तिगत सूची। दूसरे, कुछ रेटिंग तकनीकें हैं जिनमें मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि लोग किसी व्यक्ति के बारे में क्या कहते हैं। इस विधि में सभी प्रकार के रेटिंग स्केल, जीवनी, केस हिस्ट्री आदि आते हैं।

तीसरे, हम व्यवहारगत तरीके प्रयोग करते हैं जिनमें वास्तविक जीवन में किसी व्यक्ति का वास्तविक व्यवहार देखा जाता है।

चौथे, कुछ प्रक्षेपी तरीके हैं जो किसी व्यक्ति के काल्पनिक परिस्थितियों में की गई प्रतिक्रिया को प्रयोग करते हैं।

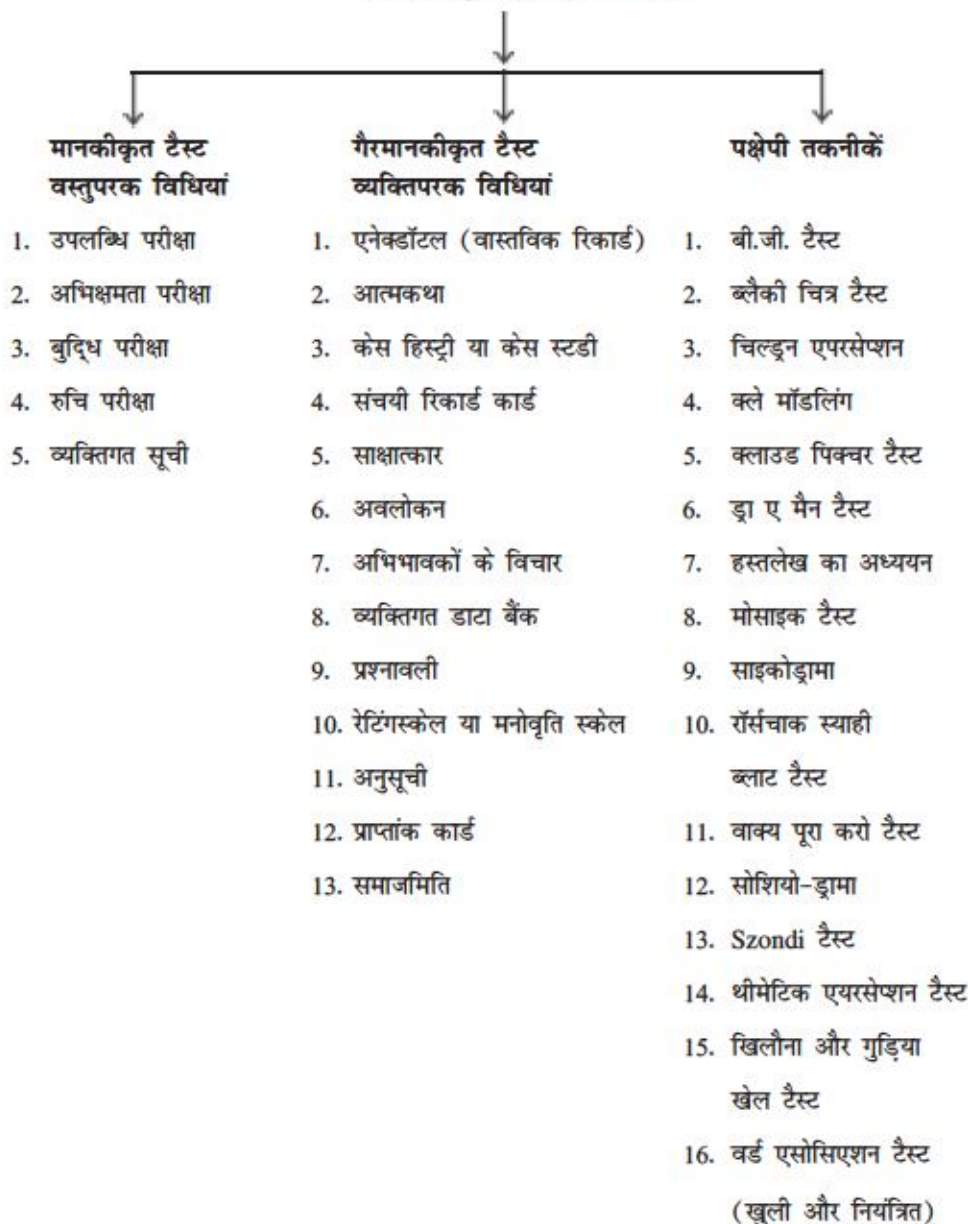




अंत में कुछ मशीनें व तकनीकी उपकरण हैं जिनसे कम व्यक्तित्व के चरों का आकलन कर सकते हैं।

टिप्पणी

व्यक्तित्व मूल्यांकन की विधियां



प्रगति जाँच-5

व्यक्तित्व मूल्यांकन की कौन-कौन सी विधियां हैं?

.....

.....

.....



टिप्पणी

### 3.7 व्यक्तित्व के विकास में शिक्षकों की भूमिका

शिक्षकों के लिए कुछ महत्वपूर्ण मार्गदर्शन इस प्रकार हैं :

- **ध्यान देना**—निम्नलिखित बातें उल्लेख लायक हैं :

1. व्यक्तित्व विकास के सबसे अच्छे तरीकों में से एक है बच्चों पर पूरा ध्यान देना
2. ध्यान देने की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है।
3. यदि बच्चे कोई प्रश्न पूछें, शिक्षक को तुरंत जवाब देना चाहिए। वे महत्वपूर्ण हैं और हमारा उनकी ओर ध्यान देना आवश्यक है। यदि शिक्षक उन्हें अनदेखा कर देगी तो वे यह धारणा बना लेंगे कि उन्हें अनदेखा किया जा रहा है और वे आत्मविश्वास खो देंगे।

- **अनुशासन**

1. शिक्षक को सही, खुलकर बोलने वाला, ईमानदार व प्यार करने वाला होना चाहिए परंतु साथ ही अडिग और एकसमान व्यवहार वाला।
2. बहुत हल्के नियमों का कोई पालन नहीं करता और बहुत कठोर नियम निभाए नहीं जाते।
3. अनुशासन को बच्चों की आवश्यकता अनुसार ढाल लेना चाहिए।

- **उदाहरण**

1. बच्चे कार्यों से प्रभावित होते हैं क्योंकि कार्य शब्दों से अधिक जोर से बोलते हैं।
2. शिक्षक को सावधानी पूर्वक रहना चाहिए। हो सकता है कि वह एकमात्र पुस्तक हो जिसे कुछ बच्चे पढ़ते हैं।

- **मजा**

शिक्षक को कभी-कभी बच्चों के साथ मजे करने चाहिए। इसका अपना एक शैक्षिक मूल्य है।

- **प्रेरणा**

शिक्षकों को प्रेरणा प्रदान करने का राज है—

1. वह जाने कि वह क्या कर रहा है।
2. वह जो करता है, उसे प्यार करे।
3. वह जो करता है, उसमें विश्वास रखे।
4. **प्रेम**—यह एक आम कहावत है—‘बच्चे से प्रेम करो, वह तुमसे प्रेम करेगा। उससे नफरत करो, वह तुमसे नफरत करेगा।’





- **धीरज**—एक बच्चे को प्रेम से प्रशिक्षित करने के लिए बहुत धीरज की आवश्यकत होती है।
- **प्रशंसा**
  1. बच्चे प्रशंसा पर है पलते हैं। यह शिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।
  2. यदि बच्चा आलोचना के साथ रहता है, वह निंदा करना सीखता है। यदि वह प्रशंसा के साथ रहता है, वह अपनी पूर्ण क्षमता से मेहनत करता है।
  3. बच्चे की उसके अच्छे व्यवहार के लिए प्रशंसा करना महत्वपूर्ण है बजाय कि उसके बुरे व्यवहार के लिए डांटना।
- **समझ**

बच्चे को समझने के लिए शिक्षक पहले स्वयं को समझे। इस बात को बल देकर कहा जा सकता है कि शिक्षक बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में सभी पहलुओं पर ध्यान नहीं देता। शिक्षक से आशा की जाती है कि वह बच्चों के लिए सबकुछ हो—एक चिकित्सक जो उनकी शारीरिक व मानसिक सेहत का ध्यान दे, ताकि उनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा हो, एक दार्शनिक जो मेहनत से उन्हें सच की खोज में मार्गदर्शन करे, एक नीतिज्ञ जो उन्हें अच्छाई ग्रहण करने के लिए प्रेरित करे, एक कलाकार जो उन्हें सुंदरता खोजने में मदद करे। शिक्षक को एक मंत्री होना चाहिए जो बच्चों की हर आवश्यकता की पूर्ति करने का प्रयास करे। ऐसा मंत्रालय समर्पित सेवा की मांग करता है।

### प्रगति जाँच-6

क्या शिक्षक बच्चे के व्यक्तित्व के विकास के लिए जिम्मेवार है? यदि हां, तो कैसे?

.....

.....

.....

## 3.8 सारांश

‘परसनेलिटी’ शब्द लेटिन शब्द ‘परसोना’ से लिया गया है जिसका अर्थ है रोमन अभिनेताओं द्वारा पहना जाने वाला मुखौटा। इस प्रकार व्यक्तित्व का अर्थ है दूसरों की नजर से किसी व्यक्ति को देखना। व्यक्तित्व वह है ‘जो व्यक्ति है’। प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग है। व्यक्तित्व गतिशील है, ठहरा हुआ नहीं है। व्यक्तित्व एक संयुक्त ईकाई के रूप में कार्य करता है। व्यक्तित्व आनुवंशिकता व पर्यावरण के योग से बना है। व्यक्तित्व के कई सिद्धांत हैं जो व्यक्तित्व विकास के बारे में बताते हैं और उनके महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रभाव हैं। एक बच्चे की



टिप्पणी

अपने बारे में, अपनी अभिवृत्तियों के बारे में समझ, प्रेरणा जो उसे प्राप्त होती है, मूल्य जिन्हें वह सीखता है सब उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायक हैं। बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षक की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्तित्व को वस्तुपरक, व्यक्तिपरक व प्रक्षेपित विधियों द्वारा मापा जा सकता है।

### 3.9 प्रगति जाँच के उत्तर

#### प्रगति जाँच-1

व्यक्तित्व एक व्यक्ति के बारे में समग्र जानकारी है—उसकी शारीरिक, भावात्मक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक व आध्यात्मिक बनावट।

#### प्रगति जाँच-2

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग है। व्यक्तित्व गतिशील है, स्थिर नहीं।

#### प्रगति जाँच-3

व्यक्तित्व का गुण सिद्धांत और आत्म विश्लेषण सिद्धांत।

#### प्रगति जाँच-4

आत्म अवधारणा, प्रेरणा, अभिवृत्तियाँ और मूल्य

#### प्रगति जाँच-5

(i) वस्तुपरक विधियाँ (ii) व्यक्तिपरक विधियाँ (iii) प्रक्षेपण विधियाँ

#### प्रगति जाँच-6

हां। शिक्षक को बच्चों की ओर ध्यान देना चाहिए। उन्हें समझना चाहिए और प्रेम व प्रशंसा से बर्ताव करना चाहिए ताकि वे अच्छे व्यक्तित्व का विकास कर पाएं।

### 3.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अग्रवाल जे.सी., बाल विकास व अधिगम प्रक्रिया, शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली 2003
- बेनी ए.मेरी और जॉहनसन वी. लॉइस, "क्लास्सूम ग्रुप बिहेवियर" ग्रुम डाइनेमिक्स इन ऐजुकेशन, द मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क 1964
- डन्डापानी. एस, 'एडवान्सड ऐजुकेशनल साइकॉलॉजी', अनमोल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली 2000



- हरलॉक ई.बी., डेवेलपमेंटल साइकोलॉजी, ए लाइफ-स्पेन एपरोच, पांचवा एडीशन, टाटा मेक ग्रा हिल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली, 1980
- जोहन एम स्टीफनस, 'द साइकोलॉजी ऑफ क्लासरूम लर्निंग', होल्ट, राइनहार्ट एण्ड विन्सटन इंक, न्यूयार्क, 1966
- काव्यकिशोर पी.बी. 'फण्डामेंटलस ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी : लर्निंग एण्ड इंस्ट्रक्शन, अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली 2011
- जॉहन मेन्डर, एम.ए., क्लासरूम टीचिंग, न्यूइनस एजुकेशनल पब्लिशिंग कंपनी, लंदन, 1950
- स्किनर, सी.ई., एजुकेशनल साइकोलॉजी, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1962

### 3.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. व्यक्तित्व को परिभाषित करें।
2. व्यक्तित्व की क्या विशेषताएं हैं?
3. व्यक्तित्व का मापन करने के विभिन्न तरीके क्या हैं?
4. व्यक्तित्व के किसी एक सिद्धांत को स्पष्ट करें।





## इकाई-4 चिंतन कौशलों का विकास

### संरचना

#### 4.0 प्रस्तावना

#### 4.1 अधिगम उद्देश्य

#### 4.2 बच्चे में सोच कौशल का विकास क्यों?

##### 4.2.1 चिंतन कौशल क्या हैं?

##### 4.2.2 बच्चे में चिंतन कौशल विकसित करने की आवश्यकता एवं महत्त्व

#### 4.3 चिंतन को सुविधाजनक बनाने की अवस्थाएं, प्रकार व उपकरण

##### 4.3.1 चिंतन की अवस्थाएं

###### 4.3.1.1 पियाजे का सिद्धांत

###### 4.3.1.2 ब्रूनर का सिद्धांत

###### 4.3.1.3 सूचना प्रसंस्करण सिद्धांत

##### 4.3.2 चिंतन के प्रकार

##### 4.3.3 चिंतन के उपकरण

###### 4.3.3.1 पृछताछ

###### 4.3.3.2 अवधारणाएं

###### 4.3.3.3 माइंड मैप्स

###### 4.3.3.4 संज्ञानात्मक रिसर्च ट्रस्ट (सी ओ आर टी)

#### 4.4 आलोचनात्मक, संसृत व विभिन्न चिंतन का विकास

##### 4.4.1 आलोचनात्मक चिंतन

###### 4.4.1.1 आलोचनात्मक चिंतन के विकास की अवस्थाएं

###### 4.4.1.2 आलोचनात्मक चिंतन वालों की विशेषताएं

##### 4.4.2 संसृत (अभिसरण) चिंतन

###### 4.4.2.1 कक्षा में संसृत चिंतन

##### 4.4.3 विभिन्न (अलग) चिंतन

###### 4.4.3.1 भिन्न चिंतन को प्रोत्साहित करने के तरीके

###### 4.4.3.2 सृजनात्मक चिंतन की अवस्थाएं

###### 4.4.3.3 सृजनात्मक चिंतन वालों की विशेषताएं



- 4.4.3.4 सृजनात्मक चिंतन में बाधाएं
- 4.4.3.5 सृजनात्मक चिंतन विकसित करने के तरीके
- 4.5 चिंतन के आधार पर तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए बच्चे का सशक्तिकरण
  - 4.5.1 निर्णय लेना
  - 4.5.2 निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक
  - 4.5.3 छह चरणों की निर्णय लेने की प्रक्रिया
  - 4.5.4 चिंतन किस प्रकार बच्चों में बेहतर निर्णय लेने में सहायक है।
- 4.6 कक्षा में बच्चों की प्रश्न पूछने के कौशल में मदद करना
  - 4.6.1 प्रश्न पूछने के कौशल क्या हैं?
  - 4.6.2 बच्चों में प्रश्न पूछने के कौशल का विकास करना।
  - 4.6.3 शिक्षा के क्षेत्र में प्रश्न पूछने के तरीकों का उपयोग
  - 4.6.4 प्रश्न पूछने के लाभ
  - 4.6.5 कक्षा में बच्चों में प्रश्न पूछने के कौशल को बढ़ावा देने के लिए मार्गदर्शन
- 4.7 स्कूल व शिक्षक की चिंतन कौशल विकसित करने में भूमिका
  - 4.7.1 शिक्षक बच्चों में चिंतन कौशल किस प्रकार बढ़ा सकते हैं
  - 4.7.2 बच्चों में चिंतन कौशल विकसित करने के लिए प्रयोग की जाने वाले चिंतन कौशल
- 4.8 सारांश
- 4.9 प्रगति जाँच के उत्तर
- 4.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 4.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

## 4.0 प्रस्तावना

‘सोचना सबसे मुश्किल कार्य है, शायद यही कारण है कि इतने कम लोग इसमें भाग लेते हैं।’—हैनरी फोर्ड

गैरेट के अनुसार चिंतन एक ऐसा व्यवहार है जो अक्सर अंतर्निहित और छिपा हुआ है और जिसमें आमतौर पर प्रतीकों (विचारों, छवियों और अवधारणाओं) का प्रयोग किया जाता है।

विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर चिंतन को एक प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है जिसमें भूत, वर्तमान व भविष्य की बाहरी घटनाएं आंतरिक रूप में प्रदर्शित होती हैं और इसमें वह वस्तु या घटना भी सम्मिलित हो सकती है जो व्यक्ति द्वारा प्रत्यक्ष रूप से देखी या अनुभव नहीं की जा सकती।



टिप्पणी

कुछ अन्य परिभाषाओं के आधार पर चिंतन को ऐसा व्यवहार कहा जा सकता है जो आई हुई समस्याओं का हल ढूँढने में मदद करता है।

चिंतन प्रक्रिया में शामिल विभिन्न घटक हैं संकेत, प्रतीक, अवधारणाएं, मोटर गतिविधियां, भाषा, छवियों, अनुभव, अपनापन और मानसिक कार्य। एक व्यक्ति की चिंतन कई कारकों द्वारा प्रभावित होती है, जैसे बुद्धि की प्रकृति, मानसिक अवस्था, दृष्टिकोण और मूल्य, रुचियां और आवश्यकताएं, आदतें और समायोजन, परिवार और स्कूल के वातावरण, वृद्धि और विकास के चरण, व्यक्तित्व के कारक, मानसिक स्वास्थ्य और इरादे और अंत में व्यक्ति की भावनाएं। इस इकाई में हम चिंतन कौशलों से संबंधित पहलू जैसे बच्चों में चिंतन कौशल विकसित करने की आवश्यकता और महत्त्व, विभिन्न प्रकार की चिंतन, आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक चिंतन में मुख्य अंतर, तर्कसंगत निर्णय में शामिल चरण, बच्चों में प्रश्न पूछने के कौशलों को कैसे बढ़ावा दें, आदि पर चर्चा करेंगे।

#### 4.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- बच्चों में चिंतन कौशल विकसित करने की आवश्यकता बता देंगे।
- संसृत चिंतन और भिन्न चिंतन में अंतर कर लेंगे।
- तर्कसंगत निर्णय लेने के चरणों को बता देंगे।
- बच्चों में प्रश्न पूछने के कौशल विकसित करने के लिए अनुकूल माहौल प्रदान कर पाएंगे।
- कक्षा में चिंतन कौशल विकसित करने के लिए उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्री बना पाएंगे और/अथवा प्रयोग कर पाएंगे।

#### 4.2 बच्चे में चिंतन कौशल का विकास क्यों?

'अच्छा बनने के लिए अच्छा सोचो'

किसी देश के अच्छे नागरिक बनने के लिए या काम की दुनिया की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए या मानव क्षमता का उपयोग करने के लिए केवल शिक्षित होना पर्याप्त नहीं है। बच्चे एक अनिश्चित और प्रत्याशित भविष्य का सामना करने के लिए दक्षताओं की एक विविध रेंज से सुसज्जित हैं। इस युग में लोग जीवनभर अलग-अलग समय पर विविध संदर्भों में विभिन्न समस्याओं को झेल रहे हैं। आजकल नौकरी बाज़ार में और समाज में ऐसे लोगों की खोज है जो समझ सकें, फैसला कर सकें, नए ज्ञान और प्रक्रियाओं को भाग ले सकें। विकासशील देश में ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो विभिन्न स्रोतों से सूचना ग्रहण कर सकें, उसकी सच्चाई का पता लगा सकें व उसे प्रयोग कर सही फैसले ले पाएं। शिक्षकों के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण



कार्य है कि वे ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम विकसित करें जो सभी व्यक्तियों को प्रभावी विचारक बना दें।



### 4.3 चिंतन कौशल क्या हैं?

चिंतन कौशल वे मानसिक प्रक्रियाएं हैं जिन्हें हम किसी अनुभव का अर्थ निकालने के लिए प्रयोग करते हैं। यह निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रति सजग तरीके से सोचने की मानव क्षमता को दर्शाता है। इस तरह की प्रक्रियाओं में शामिल हैं याद रखना, प्रश्न पूछना, अवधारणाएं बनाना, योजना बनाना, तर्क करना, कल्पना करना, समस्या को सुलझाना, निर्णय लेना, फैसले करना, शब्दों को विचारों में बदलना आदि। चिंतन कौशल सोचने की एक व्यवहारिक क्षमता है जिसे कुछ हद तक प्रभावी या कुशल कहा जाता है। ये बुद्धिमान व्यवहार की आदतें हैं जिन्हें अभ्यास द्वारा सीखा जाता है। उदाहरण के लिए अभ्यास द्वारा बच्चे कारण बताने में या प्रश्न पूछने में अच्छे हो सकते हैं।

कई शोधकर्ताओं ने मानव चिंतन में महत्वपूर्ण कौशलों को पहचानने का प्रयास किया है और इनमें से सबसे प्रसिद्ध ब्लूम का वर्गीकरण है। ज्ञान, समझ व प्रयोग निम्न स्तर के चिंतन कौशल हैं जबकि विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन उच्च चिंतन कौशल हैं।

#### 4.3.2 बच्चे में चिंतन कौशल विकास की आवश्यकता एवं महत्त्व

चिंतन कौशल हमें हमारे अनुभव से सीखने और बुद्धि का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाते हैं। चिंतन कौशल की गुणवत्ता बढ़ाना सीधे-सीधे बेहतर अधिगम से संबंधित है और इसी से समाज की बेहतरी के अवसर बढ़ेंगे। माइक फ्लीथम के अनुसार हमारी विकासशील दुनिया में सोचने की क्षमता किन्हीं निश्चित कौशलों या ज्ञान से अधिक वांछनीय होती जा रही है। हमें समस्या सुलझाने वाले, निर्णय लेने वाले, और नवीन आविष्कारकों की जरूरत है। और इसके लिए हमें सीखने-सीखाने के नए ढंग प्रयोग में लाने होंगे। हमें अपने बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करना है न कि अतीत के लिए। जैसे-जैसे व्यक्ति अधिक कुशल हो जाता है, सोचने वाला केवल सूचना ग्रहण करने से सूचना पर विचार करने वाला, उसे प्रयोग करने वाला और अंत में सूचना की खोज व सृजन करने वाला बन जाता है। मनुष्य के मस्तिष्क का अधिकतर विकास शिशु काल की प्रारंभिक अवस्था में हो जाता है। 6 वर्ष की आयु तक अधिकतर बच्चों का मस्तिष्क व्यस्क मस्तिष्क का 90% हो जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि शुरू के वर्षों में जब मस्तिष्क का विकास हो रहा है, चिंतन कौशल विकसित करने के उपाय करना अधिक प्रभावी होगा बजाय कि बाद में। बच्चों की चिंतन विकसित करने के तरीकों और अधिगम कौशलों में बढ़ती हुई रुचि यह पता लगने का परिणाम है कि मस्तिष्क कैसे काम करता है, लोग कैसे सीखते हैं और कुछ प्रयासों से बच्चों की चिंतन और बुद्धि में निखार आ सकता है। यदि सोचने से ही बच्चे अधिगम का अर्थ निकालते हैं तो चिंतन कौशल विकसित करने से वे जीवन और अधिगम से ज्यादा फायदा उठा पाएंगे। एक चिंतन कौशल उपागम सलाह देता है कि शिक्षार्थी को अपने बारे में एक विचारक एवं अधिगमकर्ता के रूप में जागरूकता अवश्य विकसित करनी



टिप्पणी

चाहिए और बुद्धिमान व्यवहार की आदतें विकसित करनी चाहिए जो जीवन पर्यन्त अधिगम के लिए आवश्यक हैं।

### प्रगति जाँच-1

1. ब्लूम के वर्गीकरण के अनुसार निम्न स्तरीय चिंतन कौशलों और उच्च स्तरीय चिंतन कौशलों के नाम लिखो।

.....

.....

.....

## 4.4 चिंतन को सुविधाजनक बनाने की अवस्थाएं, प्रकार व उपकरण

### 4.4.1 चिंतन की अवस्थाएं

शोध निष्कर्षों से पता लगता है कि सोचने की क्षमता व्यक्ति के वृद्धि एवं विकास से संबंधित है। छोटे बच्चे अमूर्त चिंतन कौशलों का अधिक प्रयोग करते हैं जबकि व्यस्क व्यक्ति अमूर्त संदर्भ में सोचने के लिए भी सक्षम है। जीन पियाजे, ब्रूनर और सूचना प्रोसेसिंग के सिद्धांत चिंतन के विकास को अवस्था अनुसार समझाते हैं।

#### 4.4.1.1 पिआजे के सिद्धांत

पिआजे ने व्यक्तियों में संज्ञानात्मक विकास के क्रमिक चरणों में चिंतन के विकास का संतोषजनक स्पष्टीकरण प्रदान करने का प्रयास किया है। पिआजे के विचार में संज्ञानात्मक विकास के पीछे अनुकूलन का हाथ है। दुनिया के साथ सीधी प्रक्रिया का मानसिक छवि बनाने की प्रक्रिया को अनुकूलन कहते हैं। अनुकूलन के दो मुख्य घटक हैं: आत्मसात और समायोजन। आत्मसात दुनिया की पहले से ग्रहण की गई अवधारणाओं, स्कीमा और विचार के तरीकों को आधार पर समझने की क्रिया है जिसमें नया ज्ञान पूर्व उपस्थित मानसिक व्यवस्था में फिट करने की कोशिश की जाती है।

समायोजन पूर्व उपस्थित अवधारणाओं या मानसिक व्यवस्था को नई सूचना या बाहरी दुनिया के नए पहचाने गए आयामों के अनुसार परिवर्तित करने का प्रयास है। पिआजे के अनुसार इन दो घटकों के बीच तनाव अनुकूलन और संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है। संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएं इस प्रकार हैं:

- **संवेदी मोटर अवस्था**—शिशु धीरे-धीरे सीख लेते हैं कि उनके द्वारा किए गए कार्यों और बाहरी दुनिया के बीच एक रिश्ता है। वे जान लेते हैं कि वस्तुओं को वे अपने ढंग से प्रयोग करके प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। वे पेशीय क्रियाकलापों और संवेदी अनुभवों द्वारा





आसपास की दुनिया के बारे में जानते हैं। संवेदी मोटर अवस्था के अंत तक बच्चे जान लेते हैं कि वस्तुएं तब भी मौजूद होती हैं जब सामने दिखाई नहीं देती।

- **पूर्व-परिचालन अवस्था**—इस अवस्था में शिशुओं में वस्तुओं और घटनाओं की मानसिक छवियां बनाने की क्षमता विकसित हो जाती है। वे शाब्दिक संकेतों के रूप में सोचना शुरू कर देते हैं। हालांकि उनकी चिंतन प्रक्रियाएं पहली अवस्था की अपेक्षा उच्चस्तरीय होती हैं वे इगो सेन्ट्रिस्म (अहंकेन्द्रित) होने की वजह से सीमित हो जाती हैं। उनके लिए यह जानना कठिन होता है कि दूसरे लोग दुनिया को उससे अलग ढंग से अनुभव कर सकते हैं। वे किसी आयाम के अनुसार वस्तुओं को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित नहीं कर पाते। यानि उनमें क्रमबद्धता नहीं होती। उनमें संरक्षण-ज्ञान भी नहीं होता। वे नहीं जानते कि वस्तु की बाहरी रूप बदलने के बावजूद भी वस्तुओं की भौतिक विशेषताएं अपरिवर्तित रहती हैं।
- **मूर्त परिचालन अवस्था**—संरक्षण-ज्ञान में पारंगतत्रा मूर्त परिचालन अवस्था की शुरुआत है। इस अवस्था में बच्चे बड़ों की तरह सोचने लगते हैं बजाय कि छोटी उम्र के बच्चों की तरह। उन्हें संबंध परक नियमों व क्रमबद्धता की समझ आ जाती है। उन्हें उलटफेर की समझ आ जाती है—यह तथ्य कि भौतिक परिवर्तन होने पर जो किया है उससे उल्ट करे तो वापिस पहली अवस्था आ जाती है। इस अवस्था में बच्चे तार्किक चिंतन करना शुरू कर देते हैं।
- **औपचारिक परिचालन अवस्था**—इस अवस्था में बच्चे अमूर्त वस्तुओं/घटनाओं के बारे में चिंतन सकते हैं। वे काल्पनिक निगमनात्मक तर्क कर सकते हैं यानि एक सामान्य सिद्धांत से विशिष्ट परिकल्पनाएं बनाना। इस अवस्था में वे प्रस्ताव-संबंधी तर्क करने में सक्षम हो जाते हैं, तर्क जिसमें व्यक्ति मौखिक दावे की वैधता का आकलन कर सकते हैं तब भी जब ये संभावनाओं की बात हो न कि वास्तविक घटनाओं की।

#### 4.4.1.2 ब्रूनर का सिद्धांत

ब्रूनर के अनुसार व्यक्ति की चिंतन प्रक्रियाएं कई क्रमिक अवस्थाओं से गुजरती हुई परिपक्वता, प्रशिक्षण और अनुभवों से विकसित होती हैं। ये अवस्थाएं हैं—अभिनय संबंधी प्रतिनिधित्व; प्रतिष्ठित प्रतिनिधित्व, और प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व।

- अभिनय संबंधी प्रतिनिधित्व अवस्था में बच्चे वस्तुओं और घटनाओं को पेशीय प्रतिक्रियाओं और गतिविधियों द्वारा प्रदर्शित करते हैं। उनकी चिंतन प्रक्रियाएं गैर-मौखिक क्रियाकलापों द्वारा प्रदर्शित होती हैं।
- **प्रतिष्ठित प्रतिनिधित्व अवस्था**—इस अवस्था में बच्चे वस्तुओं और घटनाओं को संवेदी छवियों और या मानसिक चित्रों के रूप में प्रदर्शित करते हैं।

#### 4.4.1.3 सूचना प्रोसेसिंग सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार, चिंतन उस सूचना से संबंधित है जो कोई पर्यावरण से अपनी ज्ञानेन्द्रियों



टिप्पणी

द्वारा प्राप्त करता है। उसकी प्रकृति और चिंतन प्रक्रिया निर्भर करती है कि किस प्रकार सूचना ग्रहण करके उसका प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) किया गया और उसे कितनी गहराई तक समस्या सुलझाने में या एक रणनीति/योजना बनाने में प्रयोग किया गया। इसकी अवस्थाएँ हैं:

संवेदी प्रसंस्करण, स्मृति से प्रासंगिक सूचना की पुनर्प्राप्ति, और सूचना में फेर बदल करना।

#### 4.4.2 चिंतन के प्रकार

यह सत्र विभिन्न प्रकार की चिंतन पर प्रकाश डालता है।

**संसृत चिंतन**—चिंतन की प्रकार है जो किसी समस्या के लिए एक अच्छे उत्तर देने पर जोर देती है। यह प्रश्न का एक सर्वोत्तम और अधिकतर सही उत्तर देने की ओर प्रयास करती है।

**भिन्न/अलग चिंतन**—यह एक विषय को विभिन्न भागों में तोड़ता है ताकि विषय के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्राप्त हो सके।

**अमूर्त चिंतन**—इसकी विशेषता है कि यह अवधारणाओं को प्रयोग करने, सामान्यीकरण बनाने व समझने की क्षमता रखती है। जैसे विभिन्न घटनाओं, विशिष्ट वस्तुओं द्वारा सांझे रूप में प्रयोग किए गए गुण या पेटर्न।

**मूर्त चिंतन**—इसमें वास्तविक वस्तुओं और घटनाओं की प्रभुता है और अवधारणाएं, सामान्यीकरण आदि का अभाव है।

**चिंतनशील चिंतन**—यह आलोचनात्मक चिंतन प्रक्रिया का भाग है। यह विशेषकर विश्लेषण करने और जो भी कुछ हुआ है उसके बारे में फैसले करने से संबंधित है।

ड्यूई (1933) के अनुसार चिंतनशील चिंतन एक सक्रिय, लगातार, और किसी मान्यता पर सावधानीपूर्वक विचार या ज्ञान का एक प्रकार, इस ज्ञान का समर्थन करने के कारण, और इस ज्ञान द्वारा बने निष्कर्ष को बढ़ावा देना है।

आगमनात्मक चिंतन प्रक्रिया को अक्सर 'सामान्यीकरण' कहा जाता है कि क्योंकि इसमें तथ्यों के विशिष्ट विवरण से सामान्य सिद्धांत या निष्कर्ष की ओर बढ़ा जाता है। यह संभावना पर आधारित है न कि निश्चितता पर।

निगमनात्मक चिंतन का मानना है कि यह तार्किक रूप से आवश्यक है कि यदि सभी दावे ठीक हैं तो निष्कर्ष भी ठीक होगा। यदि निगमनात्मक तर्क को सही रूप में प्रयोग किया जाए, सही बिंदु या तर्क सही निष्कर्ष या परिणाम देंगे।

**तार्किक चिंतन**—यह एक ऐसी चिंतन प्रक्रिया है जो हमेशा तर्क का प्रयोग करके निष्कर्ष निकालती है। जिन समस्याओं या परिस्थितियों में तार्किक चिंतन का उपयोग होता है उसमें जरूरत है संरचना की, तथ्यों के बीच संबंधों की और तर्कों के क्रम की जिसका कोई अर्थ निकलता है।





### 4.4.3 चिंतन के उपकरण

चिंतन उपकरण वे तकनीकें हैं जो हमें हमारे मस्तिष्क को व्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से उपयोग करने में सहायता करते हैं। चिंतन उपकरणों के प्रयोग से निर्धारित विचार सुव्यस्थित रूप से जोड़े जा सकते हैं। प्रश्न पूछना, अवधारणाएं, मानसिक नक्शे, संज्ञानात्मक रिसर्च ट्रस्ट (CORT) कुछ उपकरण हैं जो चिंतन को बढ़ावा देते हैं।

#### 4.4.3.1 प्रश्न पूछना

“जो व्यक्ति प्रश्न पूछता है, वह सोचता है।”

—विलियम विलेन

बच्चों में चिंतन कौशल विकसित करने का एक सबसे आसान व सरल तरीका है प्रश्नों को सही तरह शब्दों में पिरोना। जब शिक्षक और अभिभावक ऐसे प्रश्न पूछना सीख जाते हैं जो बच्चों की चिंतन प्रक्रियाओं को उत्तेजित कर सकें तो हर उम्र के बच्चों के लिए अधिगम मजेदार हो सकता है। प्रश्न पूछना एक ऐसा उपागम है जो दूसरों को सूचना ग्रहण करने में, समझ का परीक्षण करने में, रुचि विकसित करने में और व्यक्ति की कुछ चीजों को समझने की क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

एक WH प्रश्न (क्यों, कैसे वाले प्रश्न) प्रभावशाली, प्रेरणादायक और कल्पनाशील जांच सूची है जिससे हम बना सकते हैं :

- आंकड़े एकत्र करने वाले प्रश्न जब समस्या सुलझाने का पहला चरण है और आंकड़े एकत्र करने हैं।
- विचार प्रेरक प्रश्न (जैसे ब्रेनस्टॉर्मिंग या माथापच्ची के दौरान)
- मूल्यांकन विकल्पों के मापदंड बनाने में।

ब्लूम के वर्गीकरण के अनुसार विभिन्न प्रकार के प्रश्नों में विभिन्न स्तर की चिंतन की आवश्यकता होती है। ज्ञान, समझ व प्रयोग अधिक मूर्त चिंतन कौशल हैं। विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन में अमूर्त चिंतन कौशलों की आवश्यकता होती है और उन्हें आलोचनात्मक चिंतन कौशल कहते हैं।

ज्ञान कौशल के परीक्षण के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द हैं—कितने, कब, कहां, सूची बनाओ, परिभाषित करो, वर्णन करो, पहचानो आदि जो तथ्य आधारित उत्तर देते हैं और बच्चे की पुनःस्मरण और पहचान कौशलों का परीक्षण करते हैं। बोद्धात्मक कौशल पता लगाने के लिए वर्णन करो, स्पष्ट करो, अनुमान लगाओ, पहचानो, विभेदन करो आदि शब्दों का प्रयोग होता है जो बच्चे को अनुवाद करने, व्याख्या करने व बहिर्वेशन करने (विशेष से सामान्य के लिए) प्रेरित करता है। प्रयोग कौशल का परीक्षण करने के लिए प्रदर्शित करो, प्रयोग करो, चित्रित करो, दिखाओ, हल करो, जांच करो, वर्गीकृत करो आदि शब्दों का प्रयोग होता है जो बच्चों को ज्ञान का प्रयोग नई व अपरिचित परिस्थितियों में करने के लिए प्रेरित करता है।

विश्लेषण कौशलों के लिए अंतर करो, विश्लेषण करो, स्पष्ट करो, तुलना करो, पृथक करो,





टिप्पणी

वर्गीकृत करो, व्यवस्थित करो आदि शब्दों का प्रयोग करो ताकि बच्चे दी गई सूचना को अलग भागों में पृथक के लिए प्रेरित हो।

संश्लेषण कौशल का परीक्षण करने के लिए जोड़ो, पुनः व्यवस्थित करो, विकल्प ढूंढो, सृजन करो, डिजाइन करो, खोजो, क्या हो यदि, जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है ताकि बच्चे विभिन्न अवयवों को जोड़ कर एक नया पैटर्न बनाने के लिए प्रेरित हों।

मूल्यांकन कौशलों को जांचने के लिए आंकलन करो, निर्णय लो, मापन करो, चुनो, स्पष्ट करो, निष्कर्ष निकालो, तुलना करो, संक्षिप्त करो आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है ताकि बच्चों को निर्धारित मापदंडों के अनुसार फैसले लेने के लिए प्रेरित किया जाए।

#### 4.4.3.2 अवधारणाएं

अवधारणाएं सामान्य विचार हैं जिन्हें हम अपने अनुभवों को पहचानने व व्यवस्थित करने में प्रयोग करते हैं। यदि शब्द भाषा की शब्दावली है तो अवधारणाएं विचारों की शब्दावली है।

अरस्तु ने एक बार कहा था कि बुद्धिमान व्यक्ति 'अवधारणाओं का मास्टर' है।

अवधारणा की रचना में शामिल हैं :

- चिन्ह-शब्द। संकेत जो अवधारणा को नाम देते हैं।
- संदर्भ शब्द-अवधारणा के उदाहरण
- गुण-वे गुण जो सभी अवधारणाओं में हैं।

अवधारणा निर्माण व्याख्या और सामान्यीकरण की प्रतिक्रिया प्रक्रिया द्वारा होता है।

व्याख्या अवधारणा के उदाहरण ढूंढने की प्रक्रिया है जबकि सामान्यीकरण एक वस्तुओं के समूह द्वारा दर्शाने वाले समान गुणों पर ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया है।

#### 4.4.3.3 मानसिक नक्शे

एक मानसिक नक्शे को एक चित्र प्रस्तुति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें अवधारणाओं के एक दूसरे से संबंधित होने के तरीके दर्शाए गए हों। यह एक बहुत ही अच्छा अधिगम उपकरण है। यह समय की बचत करता है क्योंकि इसमें केवल मूलशब्द (या अवधारणाएं) प्रयोग की जाती हैं ताकि बेहतर समझ विकसित हो, सुपर स्मृति के सात सिद्धांतों (चित्रण करना, जोड़ना, चीजों को सबसे बेहतर बनाना, कल्पना, रंग, लय, और सम्पूर्णता) का प्रयोग करके किसी की स्मरण क्षमता का बढ़ाता है।

मानसिक नक्शे नोट्स लेने (सुनने), मौखिक प्रस्तुती (बोलने) और लिखने में भी उपयोगी हैं।

मानसिक नक्शे बनाने के चरण इस प्रकार हैं :



- विषय को केंद्र में लिखें
- उसके आसपास उपविषय लिखें
- प्रत्येक उपविषय के लिए मुख्य बिंदु व संबंधित जानकारी लिखें।
- अपनी कल्पना शक्ति से चित्र बनाकर इसे अच्छा और स्मृति के लायक बनाएं।

#### 4.4.3.4 संज्ञानात्मक रिसर्च ट्रस्ट (CoRT)

CoRT (संज्ञानात्मक रिसर्च ट्रस्ट) चिंतन विधि का मूलभाव चिंतन के विभिन्न पहलुओं पर सीधे ध्यान केंद्रित करना है और इन पहलुओं को निश्चित अवधारणाओं और उपकरणों में परिवर्तित करना ताकि उन्हें हम जहां चाहें प्रयोग कर सकें। यह विद्यार्थियों की चिंतन का दायरा बढ़ाने के लिए डिजाइन की गई है। CoRT के चिंतन उपकरण हैं: C और S (कानसिक्व्यूएस यानि परिणाम व सीक्व्यूएल यानि उसकी अगली कड़ी)।

- AGO (Aims यानि बड़े उद्देश्य, Goals यदि छोटे लक्ष्य, Objectives यानि उद्देश्य)
- OPV (Other People's Views) यानि दूसरे लोगों के विचार
- APC (Alternatives, Possibilities, Choices) यानि विकल्प, संभावनाएं एवं रास्ते
- PMI (Plus, Minus, Interesting Ideas) यानी अच्छे, बुरे और रुचिकार विचार
- FIP (First Important Priorities) यानी पहली महत्वपूर्ण प्राथमिकता और
- CAF (Consider All Factors) यदि सभी कारकों पर गौर करें।

सभी कारकों पर गौर करें (CAF) में व्यक्ति सभी कारकों की सूची बनाते हैं और हर एक कारक पर ध्यान देते हैं।

पहली महत्वपूर्ण प्राथमिकता (FIP) में व्यक्ति को दिए गए कई अलग-अलग संभावनाओं और विकल्पों में से एक को छांटना पड़ता है।

अच्छा, बुरा, रुचिकार (PMI) में व्यक्ति सभी अच्छे बिंदुओं की सूची बनाता है, फिर बुरे बिंदुओं की और फिर रुचिकार बिंदुओं की। विकल्प, संभावनाएं एवं रास्ते (APC) में व्यक्ति नए विकल्प और रास्ते खोजते हैं बजाए कि पुरानों के साथ चिपके रहें।

दूसरे व्यक्तियों के विचार (OPV) में व्यक्ति अपने विचारों के दायरे से बाहर निकलकर बाकी सबके विचारों पर भी ध्यान देता है जो किसी परिस्थिति में उलझे हुए हैं।

बड़े उद्देश्य, लक्ष्य और उद्देश्य में व्यक्ति उद्देश्यों को चुनता है और परिभाषित करता है ताकि उसे अपने उद्देश्य स्पष्ट हों और दूसरों को उद्देश्यों की भी समझ हो।

परिणाम और अगली कड़ी (C & S) में व्यक्ति तत्कालीन, कम अवधि (1-2 वर्ष), मध्यम अवधि (2-5 वर्ष) और लंबी अवधि के परिणामों पर गौर करते हैं।





टिप्पणी

### प्रगति जाँच-2

1. पिआजे के सिद्धांत के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएं लिखें।

.....  
.....  
.....

2. CoRT चिंतन उपकरण के नाम लिखें।

.....  
.....  
.....

## 4.5 आलोचनात्मक, संसृत व भिन्न चिंतन का विकास

तकनीकी प्रगति के इस युग में हम विभिन्न प्रकार की सूचनाओं से घिरे हुए हैं। विश्व स्तर की चुनौतियों व संकटों का सामना करने के लिए व्यक्तियों में निम्न क्षमताएं होनी चाहिए:

- स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता
- संबंध स्थापित करने की क्षमता
- मूल्यांकन करने की क्षमता
- प्रश्न करने की क्षमता
- विश्लेषण करने की क्षमता
- सृजनात्मक चिंतन की क्षमता

### 4.5.1 आलोचनात्मक चिंतन

आलोचनात्मक चिंतन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को चिंतनशील, उचित, फैसला लेने के लिए सूचना को एकत्र करके, व्याख्या करके व मूल्यांकन करने के लिए तर्कसंगत चिंतन बनाने के लिए चुनौती देती है। आलोचनात्मक चिंतन का विकास शिक्षा का परम लक्ष्य होना चाहिए। जॉहन डुई आलोचनात्मक चिंतन को एक आम चिंतन की बजाए चिंतनशील चिंतन के रूप में परिभाषित करते हैं। उनके अनुसार यह ज्ञान या सूचना की विश्वसनीयता और निष्कर्ष की सक्रिय, लगातार और सावधानी से विचार करने की प्रक्रिया है। शिक्षकों को अपने मस्तिष्क को पोषित करना चाहिए ताकि वे सूचना के साथ इस प्रकार की आलोचनात्मक प्रतिक्रिया करने में निपुण हो जाएं। आलोचनात्मक चिंतन प्रदर्शित करने के लिए विद्यार्थियों को व्याख्या करने,





विश्लेषण करने, तर्क और मूल्यांकन करने के कौशल विकसित करने होंगे। विद्यार्थी, जिनमें आलोचनात्मक चिंतन कौशल विकसित हो जाते हैं, अच्छे अंक प्राप्त करते हैं, शिक्षक और पाठ्यपुस्तकों पर का निर्भर रहते हैं, ज्ञान का सर्जन करते हैं, मूल्यांकन करते हैं, समाज की संरचनाओं को चुनौती देते हैं और बदलते हैं।

प्रश्न पूछने की आदत का विकास आलोचनात्मक चिंतन का मूल आधार है। एडवर्ड ग्लेसर के अनुसार आलोचनात्मक चिंतन के पीछे कुछ क्षमताएं हैं। वे हैं :

- समस्या पहचानने की क्षमता
- उन समस्याओं को दूर करने के लिए व्यावहारिक तरीके पता लगाने की क्षमता
- उचित जानकारी को इकट्ठा करके एक विशेष उद्देश्य के लिए इकट्ठा करने की क्षमता
- अनकही मान्यताओं और मूल्यों को पहचानने की क्षमता
- सही, स्पष्ट व अंतर करके भाषा की समझ व प्रयोग की क्षमता
- बयानों और प्रमाणों के मूल्यांकन की क्षमता
- कथनों के बीच तार्किक जुड़ाव पहचानने की क्षमता
- सही निष्कर्ष व सामान्यीकरण बनाने की क्षमता
- निकाले गए निष्कर्ष व सामान्यीकरण का परीक्षण करने की क्षमता

#### 4.5.1.1 आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने की अवस्थाएं

आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने में शामिल 6 अवस्थाएं इस प्रकार हैं :

- अवस्था एक—अचिंतनशील विचारक (व्यक्ति चिंतन संबंधी महत्वपूर्ण समस्याओं से अनजान है)
- अवस्था दो—चुनौतीपूर्ण विचारक (व्यक्ति चिंतन संबंधी समस्याओं की जानकारी रखता है)
- अवस्था तीन—शुरुआती विचारक (व्यक्ति सुधार करने की कोशिश करता है लेकिन बिना नियमित अभ्यास के)
- अवस्था चार—अभ्यासी विचारक (व्यक्ति नियमित अभ्यास की जरूरत समझता है)
- अवस्था पांच—उन्नत विचारक (व्यक्ति अभ्यास के हिसाब से आगे बढ़ता है)
- अवस्था छः—पारंगत विचारक (व्यक्ति कुशल है और व्यावहारिक चिंतन उसका दूसरा स्वभाव है)

आलोचनात्मक चिंतन का विकास तब होता है जब—

- हम यह मान लेते हैं कि चिंतन के साथ कुछ गंभीर समस्याएं हैं।
- नियमित अभ्यास शुरू कर देते हैं।



टिप्पणी

#### 4.5.1.2 आलोचनात्मक चिंतन विचारकों की विशेषताएं :

सर फ्रांसिस बरटन ने गौर किया है कि जिन व्यक्तियों को आलोचनात्मक विचारक कहा जाता है वे इस प्रकार होते हैं :

- जिज्ञासु
- वस्तुओं के बीच रिश्ते और भिन्नता देखते हैं।
- प्रश्न पूछते हैं।
- चिंतन करते हैं।
- कई विचारों पर गौर करते हैं।
- अपने दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं, प्रमाणों और कारणों के आधार पर तर्क करते हैं।
- सूत्रों की विश्वसनीयता पर निर्णय लेने के लिए सक्षम होते हैं और सूचना के बारे में स्वतंत्र निर्णय लेते हैं।
- सभी प्रकार की धोखाधड़ी से सचेत रहते हैं।

#### 4.5.2 संसृत चिंतन

संसृत चिंतन को जोय पॉल गिलफोर्ड ने भिन्न चिंतन का विपरीत शब्द कहा है। इसका सामान्य अर्थ है मानक प्रश्नों (जिनमें अधिक रचनात्मकता की आवश्यकता नहीं है) का सही उत्तर देने की क्षमता। उदाहरण के लिए विद्यालय के अधिकतम कार्य, और बुद्धि परीक्षण के लिए मानकीकृत बहु-विकल्पी टेस्ट।

एक प्रकार की चिंतन है जो किसी समस्या के लिए एक मात्र, अच्छी तरह से स्थापित उत्तर देने पर जोर देती है। यह किसी प्रश्न का एक, सर्वोत्तम और अधिकतर सही उत्तर देने की ओर प्रयास करती है। संसृत चिंतन गति, स्टीकता, और तर्क पर जोर देती है और परिचित को पहचानने, तकनीक का पुनःउपयोग करने और संग्रहित जानकारी को इकट्ठा करने पर केंद्रित है। यह उन परिस्थितियों में सबसे अधिक प्रभावी होती है जहां उत्तर तैयार होते हैं और उन्हें केवल पुनःस्मरण करना होता है या निर्णय लेने की रणनीति से निकाला जा सकता है। संसृत चिंतन का एक आलोचनात्मक पक्ष है कि यह एकमात्र सर्वोत्तम उत्तर तक ले जाता है और इसमें अस्पष्टता की कोई गुंजाइश नहीं है। इस तरह उत्तर या तो सही हैं या गलत। संसृत चिंतन के बाद जो हल मिलता है व अधिकतर सबसे उत्तम संभावित उत्तर होता है।

संसृत चिंतन ज्ञान से भी जुड़ी हुई है क्योंकि इसमें मौजूदा ज्ञान में मानकीकृत प्रक्रियाओं द्वारा हेर-फेर की जा सकती है। ज्ञान सृजनात्मकता का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। यह विचारों का स्रोत है, हल खोजने के रास्ते बताता है, और प्रभावित व नवीनता के मापदंड प्रदान करता है। संसृत चिंतन को सृजनात्मक समस्या समाधान के उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी समस्या को सुलझाने के लिए आलोचनात्मक चिंतन का प्रयोग कर रहा है तो वह होश में निर्णय करने के लिए मानकों या संभावनाओं का उपयोग करता है।





### 4.5.2.1 कक्षा में संसृत चिंतन

संसृत चिंतन को व्यावहारिक रूप में कई परिस्थितियों में प्रयोग किया जा सकता है। संसृत चिंतन का सबसे स्वभाविक प्रयोग परीक्षा में बहु-विकल्पी प्रश्नों के उत्तर देते समय होता है। जब कोई विद्यार्थी दिए गए उत्तरों में से संभावित उत्तर पर चिंतन करता है तो वह उस अवधारणा के दायरे में ही संसृत चिंतन द्वारा विकल्प ढूँढ़ता है। यह मदद करता है उस एकमात्र, सर्वोत्तम उत्तर ढूँढ़ने में जिसका मापन किया जा सकता है। इस उदाहरण में संसृत चिंतन सभी उपलब्ध उत्तरों का आंकलन करती है और उनकी एक दूसरे से तुलना करती है ताकि सभी विकल्पों को संकीर्ण करके एक सर्वोत्तम उत्तर तक पहुंच सकें।

संसृत चिंतन बच्चे की शिक्षा में एक बुनियादी उपकरण है। आज अधिकतर शिक्षा के अवसर मानकीकृत परीक्षाओं से जुड़े होते हैं जो अक्सर बहु-विकल्पी प्रकार के होते हैं। इसलिए, छोटी उम्र से ही संसृत चिंतन को बढ़ावा देना आवश्यक है क्योंकि इससे बच्चे एकमात्र सही उत्तर पता लगाने की क्षमता विकसित करेंगे। बच्चों में संसृत चिंतन को बढ़ावा देने के तरीके हैं : जिगसॉ पहेली जो केवल एक तरीके से सही हो सकती है, सरल गणित के प्रश्न जिनका एकमात्र सही उत्तर होता है। यह बच्चों को उन विषयों के एकमात्र सर्वोत्तम उत्तर ढूँढ़ने का महत्व बताएंगे जिनमें संसृत चिंतन की आवश्यकता होती है जैसे गणित या बहु-विकल्प टेस्ट।

### 4.5.3 भिन्न चिंतन

भिन्न चिंतन का लक्ष्य है एक छोटे समय अंतराल में एक विषय पर कई अलग-अलग विचार उत्पन्न करना। इसमें एक विषय को उसके विभिन्न घटकों में तोड़ना शामिल है ताकि विषय के विभिन्न पहलुओं पर समझ पैदा हो सके। भिन्न चिंतन सामान्यतः एक सहज, मुक्त तरीके से होती है जिसमें विचार बेतरतीब, अव्यस्थित तरीके से उत्पन्न किए जाते हैं। भिन्न चिंतन के बाद विचार और सूचना संसृत चिंतन द्वारा व्यवस्थित की जाती है ताकि विभिन्न विचार पुनः संगठित, संरचित तरीके से रखे जाएं।

#### 4.5.3.1 भिन्न चिंतन को प्रोत्साहित करने के तरीके

- **ब्रेनस्टॉर्मिंग या माथापच्ची**—यह एक तकनीक है जिसमें सृजनात्मक एवं असंगठित तरीके से विचारों की एक सूची तैयार की जाती है। माथा-पच्ची का लक्ष्य थोड़े समय में अधिक से अधिक विचारों को उत्पन्न करना। माथा-पच्ची का मूल उपकरण है “पिपी बैकिंग” या “पीठ पर लद कर चलना”। इसमें एक विचार का प्रयोग करके दूसरे विचारों को बढ़ावा दिया जाता है। माथा-पच्ची के दौरान सभी विचार रिकार्ड किए जाते हैं, कोई विचार नकारा नहीं जाता, न ही किसी की आलोचना होती है। जब विचारों की एक लंबी सूची बन जाती है तो फिर उनका पुनरावलोकन करके उनके मूल्य या योग्यता के आधार पर रखा जाता है।
- **जर्नल बनाना**—जर्नल बनाना अचानक उत्पन्न हुए विचारों को रिकार्ड करने का एक प्रभावी तरीका है। एक जर्नल के द्वारा व्यक्ति विभिन्न विषयों पर अपने विचारों का





## टिप्पणी

संकलन कर सकता है जो बाद में विचारों की संदर्भ पुस्तिका बन सकती है। लोगों को कभी-कभी असामान्य समय और स्थानों पर अंतर्दृष्टि हो सकती है। इन विचारों को एक जर्नल में एकत्र करके बाद में उन्हें व्यवस्थित करके लेखों में विकसित किया जा सकता है।

- **स्वतंत्र लेखन**—स्वतंत्र लेखन के समय व्यक्ति एक विशेष विषय पर ध्यान केंद्रित करता है और कुछ समय के लिए उस पर बिना रुके लिखता जाता है। कोशिश होती है कि जो भी दिमाग में आए लिखते जाओ, बिना रुके, बिना ठीक करने के प्रयास के। इससे थोड़े समय में किसी विषय के बारे में विभिन्न विचार उत्पन्न करना जिन्हें बाद में व्यवस्थित या पुनः रचित करके कोई व्यवस्था का पैटर्न बना सकते हैं।

- **दिमागी या विषय नक्शा बनाना**

दिमागी या विषय नक्शे में माथा-पच्ची करके उत्पन्न विचारों को चित्र या दृश्य नक्शा बनाना जिसमें विचारों का आपसी संबंध दर्शाया गया हो। केंद्रीय विचार या विषय को बीच में लिखते हैं। फिर विषय की शाखाएं बनाकर उसके विभिन्न पहलू प्रदर्शित किए जाते हैं। यह एक दृश्य/चित्र या नक्शा बन जाता है जिसे लेखक आगे विषय को विकसित करने के लिए प्रयोग कर सकता है।

- **छः सोचने वाले हैट**

यह विधि इस चिंतन पर आधारित है कि मानव मस्तिष्क कई भिन्न तरीकों से सोचता है जिन्हें जानबूझ कर चुनौती दी जा सकती है। इसलिए यह विधि एक संरचित तरीके से प्रयोग करने के लिए योजनाबद्ध की जाती है ताकि कोई विशेष विषय पर सोचने के रणकौशल विकसित किए जाएं। एडवर्ड डे बोनो ने छह स्पष्ट दिशाओं की पहचान की है जिनमें मस्तिष्क को चुनौती दी जा सकती है। इनमें से प्रत्येक दिशा मस्तिष्क चुने गए विषय के कुछ पहलुओं को पहचानेगा और चेतन विचारों में लाएगा। छह स्पष्ट दिशाओं को रंग दिए गए हैं :

- **सफेद**—आंकड़ों और सूचनाओं पर केंद्रित है।
- **लाल**—भावों, अंतर्दृष्टि और महसूस करने पर केंद्रित है।
- **पीला**—सकारात्मक चिंतन व लाभ पर केंद्रित है।
- **काला**—सावधानी, आलोचनात्मक फैसले पर आधारित है।
- **हरा**—सृजनात्मक चिंतन पर आधारित है।
- **नीला**—प्रक्रिया नियंत्रण, सोचने के बारे में सोचना है।



### 4.5.3.2 सृजनात्मक चिंतन की अवस्थाएं

ग्राहम वालास ने पाया कि चाहे लोगों की सृजनात्मक चिंतन में व्यक्तिगत अंतर होते हैं, इसमें एक दोबारा होने वाला पैटर्न है। सृजनात्मक चिंतन पांच अवस्थाओं में होती है :

**अवस्था-1 तैयारी**—एक व्यक्ति जो एक महत्वपूर्ण समस्या के लिए सृजनात्मक हल विकसित करता है, कई घंटे उस समस्या में खोया रहता है, ज्ञान इकट्ठा करने में व उस पर कार्य करने में।

**अवस्था-2 उष्मायन**—सृजनात्मक हल अक्सर एक उष्मायन काल के बाद ही बनकर निकलते हैं। उष्मायन का अभिप्राय है वह अन्तराल जिसमें व्यक्ति सक्रिय रूप से समस्या पर काम नहीं करता और अन्य बातों की ओर ध्यान देता है।

**अवस्था-3**— सृजनात्मकता में अक्सर अचानक अंतर्दृष्टि या उद्बोधन होता है। ऐसे समय में, लोग कहते हैं कि वे अचानक हल की पहली रोशनी देखते हैं जिसे वे महीनों या वर्षों से खोज रहे थे।

**अवस्था-4 मूल्यांकन**— उद्बोधन के बाद काफी प्रशुद्धीकरण की आवश्यकता होती है। विचार पर सोचकर उसे परीक्षण लायक बनाना, फिर उसका परीक्षण करना। जब यह प्रमाणित हो जाता है कि सृजनात्मक हल कार्य कर रहा है, तभी अंतिम निष्कर्ष निकाला जाता है।

**अवस्था-5 पुनरावृत्ति**—अंतर्दृष्टि कई बार असंतोषजनक होती है और सोचने वाला फिर से सृजनप्रक्रिया के आरंभ में पहुंच जाता है। कई बार अंतर्दृष्टि संतोषजनक होती है पर कुछ सुधार की आवश्यकता होती है।

### 4.5.3.3 सृजनात्मक चिंतन विचारक की विशेषताएं

सृजनात्मक चिंतन वाले व्यक्तियों में कुछ बातें समान होती हैं। वस्तुपरक एवं व्यक्तिपरक परीक्षणों से मिले प्रमाणों से पता चलता है कि सृजनात्मक व्यक्तियों में निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:

- वे जटिलता और कुछ हद तक घटनाओं में असंतुलन पसंद करते हैं।
- वे साइकोडायनेमिकली (मानस गति यानि चेतन व अचेतन मानसिक प्रक्रियाओं में प्रतिक्रिया) अधिक जटिल होते हैं और उनकी व्यक्तिगत संभावनाएं भी अधिक है।
- वे अपने निर्णय लेने में अधिक स्वतंत्र हैं।
- वे अधिक प्रभावी और स्व:मुखर हैं।
- वे भावनाओं के नियंत्रण के लिए दबाव के तरीके को नहीं मानते।

एक व्यक्तित्व का आयाम 'ओरिजेन्स' सृजनात्मक लोगों से संबंधित माना जाता है। जिनमें यह आयाम अधिक होता है वे दूसरों द्वारा निर्धारित परम्परागत उपागमों का प्रतिरोध करते हैं और अपने हिसाब से काम करते हैं, बेशक इसे विद्रोही या परंपरा विरोधी माना जाए।





टिप्पणी

#### सृजनात्मक विचारक

- जिज्ञासु होते हैं।
- समस्याएं ढूंढते हैं।
- चुनौती का मज़ा लेते हैं।
- सकारात्मक होते हैं।
- फैसलों को स्थगित कर पाते हैं।
- कल्पनाओं से आराम से पेश आते हैं।
- समस्याओं को मौकों के रूप में देखते हैं।
- समस्याओं को रुचिकर मानते हैं।
- समस्याओं को भावनात्मक रूप में स्वीकारते हैं।
- मान्यताओं को चुनौती देते हैं।
- जल्दी हार नहीं मानते, लगन से मेहनत करते हैं।

#### 4.5.3.4 सृजनात्मक चिंतन में बाधाएं

बिना प्रश्न किए सहमत होना व्यक्ति की प्राकृतिक सृजनात्मक क्षमता को रोकता है। हमें सच्चाई को मानना चाहिए बजाए कि सृजनात्मकता को प्रेरित करने के रास्ते खोजना। हर व्यक्ति हर समय सृजनात्मक चिंतन की क्षमता रखता है परन्तु उसे उन काल्पनिक मानसिक बाधाओं को हटाना होगा जो उसने उस रास्ते से ग्रहण की हैं जहां वह आज है। सृजनात्मक चिंतन में कुछ बाधाएं हैं—पूर्वाग्रह, कार्यात्मक स्थिर अवस्था, सीखी गई लाचारी, 'सही जवाब' ढूंढने की आदत, तार्किक चिंतन, नियमों को मानना, व्यवहारिक बनना, काम करते रहना, नया काम या जिम्मेदारी लेने को तैयार न होना, गंभीर व्यक्ति बनना, अस्पष्टता से बचना, मानना कि गलत बुरा है, सृजनात्मक बनने में विश्वास न रखना।

अपनी सृजनात्मकता जागृत करने की प्रक्रिया वैसी ही है जैसी आध्यात्मिक ज्ञान ढूंढने वालों की रास्ते के लिए खोज। व्यक्ति पहले से सृजनात्मक है परन्तु उन्हें यह देखने के लिए सभी भ्रम त्यागने होंगे।

#### 4.5.3.5 सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने के तरीके

बच्चों के जीवन में शिक्षक और अन्य कई लोग सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा देकर अंतर ला सकते हैं। सबसे सामान्य रास्ते जिनसे सृजनात्मकता को बढ़ावा दे सकते हैं, निम्नलिखित हैं :

- एक व्यापक एवं समृद्ध ज्ञान का विकास



- स्वतंत्रता को बढ़ावा देकर
- उपमा के उपयोग को प्रोत्साहन
- जिज्ञासा को प्रोत्साहन
- सकारात्मक प्रभाव बढ़ाकर



टिप्पणी



### प्रगति जाँच-3

1. एडवर्ड डि बोनो के 6 सोचने के हैट में से नीले रंग का हैट क्या प्रदर्शित करता है?

.....  
 .....  
 .....

2. सृजनात्मक चिंतन के विभिन्न चरणों के नाम लिखो।

.....  
 .....  
 .....

## 4.6 चिंतन के आधार पर निर्णय लेने के लिए बच्चे का सशक्तिकरण

इस दुनिया में हर प्राणी निर्णय करता है। उसके जीवन के हर पल में निर्णय लिए जाते हैं। क्या पहनना है, क्या खरीदना है, क्या खाना है, क्या बताना है, क्या नहीं ले जाना, क्या नहीं प्रयोग करना, क्या नहीं देखना... इनके उत्तर निर्णय लेने के परिणाम हैं। निर्णयों की प्रभाविता एवं दक्षता इनकी गुणवत्ता निर्धारित करती है। जीवन के हर आयाम पर व्यक्ति को निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। यदि निर्णय बेहतर होंगे तो जीवन सहज और सफल होगा।

### 4.6.1 निर्णय लेना

निर्णय लेना कई कार्य करने के तरीकों या विकल्पों में चुनाव करने की प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में यह एक ऐसी प्रकार की समस्या समाधान प्रक्रिया है जिसमें हमें कई विकल्प मिलते हैं और उनमें से एक को चुनना है। एक आदर्श तर्कसंगत निर्णय कर्ता निम्न पर विचार करेगा—

- प्रत्येक विकल्प द्वारा उपजे प्रतिफलों का मूल्य या उपयोगिता
- ऐसे नतीजों की वास्तव में घटित होने की संभावना



टिप्पणी

निर्णय लेने का आधार होगा अनुमानित उपयोगिता, प्रत्येक प्रतिफल मिलने की संभावना व मूल्य का उत्पाद।

#### 4.6.2 निर्णय लेने को प्रभावित करने वाले कारक

निर्णय लेने को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं :

खोज/अनुमान लगाना, निर्धारण और प्रतिबद्धता में वृद्धि। हयूरिस्टिकस (खोज/अनुमानी) मानसिक 'अंगूठे के नियम' हैं जो हमें तेजी से और प्रभावी ढंग से निर्णय लेने और फैसले करने में सहायता करते हैं। हयूरिस्टिकस पिछले अनुभवों से निकाले जाते हैं और जल्दी प्रभावी ढंग से काफी अच्छे विकल्प बनाने में सहायक हैं। तीन सामान्य रूप से प्रयोग किए जाने वाले हयूरिस्टिकस हैं : उपलब्धताहयूरिस्टिकस; प्रतिनिधिकता हयूरिस्टिकस व समायोजन हयूरिस्टिकस।

निर्धारण एक और कारक है जो व्यक्तियों में निर्णय लेने को प्रभावित करता है। यह संबंधित सूचना के संभावित प्रतिफलों (लाभ या हानि) को प्रदर्शित करता है। यदि सूचना का प्रभाव हानि है तो लोग इसे विकल्प के रूप में नहीं लेंगे। मनुष्य में स्वाभाविक रूप से सकारात्मक जानकारी को अपनाने की प्रवृत्ति है। इसलिए निर्धारण का निर्णय लेने पर एक बड़ा प्रभाव हो सकता है।

प्रतिबद्धता में वृद्धि बुरे फैसलों को अपनाने के प्रति प्रतिबद्धता है चाहे उसके साथ जुड़ी हानि कितनी ही क्यों न बढ़ जाए।

#### 4.6.3 निर्णय लेने की प्रक्रिया के छः चरण

छः चरणों वाली निर्णय लेने की प्रक्रिया एक तर्क संगत निर्णय लेने की प्रक्रिया है। यह विभिन्न विकल्पों के बारे में सोचने, तुलना करने व उनका मूल्यांकन करने पर आधारित है। इसके चरण इस प्रकार हैं :

- परिस्थिति व ऐच्छिक प्रतिफल परिभाषित करना
- शोध करके विकल्पों की पहचान करना
- हर विकल्प व उसके होने वाले प्रभावों की तुलना व अंतर करना
- निर्णय लेना या विकल्प को चुनना
- एक क्रियाण्वन योजना बनाना व उसे प्रयोग करना
- परिणामों का मूल्यांकन करना

बच्चों को 'निर्णय लेना' सीखाने के लिए यह व्यापक रूप में स्कूलों में प्रयोग होती है। छः चरण वाली निर्णय लेने की प्रक्रिया नैतिक निर्णय लेने वाले मॉडलों से कम जटिल होती है। यह मॉडल संस्थाओं द्वारा प्रयोग किया जाता है ताकि उनके कर्मचारी अपने पद व जिम्मेवारियों के अनुकूल निर्णय लेने में सशक्त बनें।





#### 4.6.4 बच्चों में बेहतर निर्णय लेने में चिंतन कैसे मदद करती है

हमेशा सही और आदर्श निर्णय लेने की संभावना एक मृगतृष्णा है। परंतु इन दिशानिर्देशों से बेहतर निर्णयों की संख्या में बढ़ोतरी होगी।

उपलब्ध सूचना के आधार पर व सूचना जो आसानी से हमारे मस्तिष्क में आ जाती है पर आधारित निर्णय जरूरी नहीं कि सही हों। इसलिए अंधाधुंध स्मरण के आधार पर लिए निर्णयों पर विश्वास न करें क्योंकि हमें उपलब्धता की संभावना के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिंतन निर्णय लेने के लिए सबसे सही सूचना देती हैं।

परिस्थितियों पर कभी उनके फेस वेल्यु यानि दिखाई देने के हिसाब से न गौर करें। हमेशा सभी संभावनाओं पर प्रश्न करने की हिम्मत करें और सभी शक दूर करें। आलोचनात्मक चिंतन यह पक्का कर लेगी कि निर्णय लेना आपके हक में काम करे।

**लचीलापन**—आप का मूल शब्द होना चाहिए। क्योंकि निर्णय लेने में काफी प्रयास करना पड़ता है इसलिए किसी के अपने निर्णयों के प्रति निष्ठा होने की संभावना है। यदि आपके निर्णय को बेहतर परिणाम पाने के लिए परिवर्तित करना पड़े तो ऐसा करने के लिए आपको तैयार होना चाहिए। आलोचनात्मक चिंतन व्यक्ति को प्रारंभिक निर्णय पर टिके रहने से रोकती है और इस प्रकार गंभीर परिणामों से बचने में मदद मिलती है।

निर्णय लेते समय व्यक्ति को सभी उपलब्ध विकल्पों में बारे में सोचना चाहिए। यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि जो विकल्प सामने दिख रहे हैं, बस वही उपलब्ध हैं। ऐसी परिस्थितियों में आलोचनात्मक चिंतन व सृजनात्मक चिंतन काम आती हैं।

अच्छा सोचने वाला एक अच्छा नागरिक है। क्योंकि बच्चे कल के नागरिक हैं, उनका सही निर्णय लेने के लिए सशक्तिकरण करना यह पक्का कर देगा कि दुनिया उनके हाथों में सुरक्षित है। एक तर्कसंगत निर्णय लेने की क्षमता बच्चे जीवन का सामना करने, सहपाठी दबाव को काबू करने और जीवन को सर्वोत्तम ढंग से जीने लायक बना देगी।



#### प्रगति जाँच-4

1. तर्कसंगत निर्णय लेने की प्रक्रिया के चरणों को लिखो।

.....

.....

.....

#### 4.7 कक्षा के बच्चों में प्रश्न पूछने के कौशल को विकसित करवाना

जो हम चाहते हैं, उसे पाने के लिए हम सब प्रश्नों का प्रयोग करते हैं। प्रश्न हमारे संचार





टिप्पणी

व्यवस्था का एक अनिवार्य भाग है जो मनुष्य ने विकसित किया है और हमारे जैसी मिलकर (झुण्ड में) रहने वाली प्रजाति के अस्तित्व के लिए सहायक है जहां सूचना का आदान-प्रदान करने की आवश्यकता है।

“बच्चों को जवाब देने से अच्छा है हम उन्हें प्रश्न पूछना सिखा दें, तब वे उत्तरों की खोज स्वयं कर लेंगे।

#### 4.7.1 प्रश्न कौशल क्या हैं?

प्रश्न कौशल का तात्पर्य है किसी की परिस्थितियों, वस्तुओं, अवधारणाओं, विचारों से संबंधित प्रश्न पूछने व जवाब देने की क्षमता। प्रश्न खुद से बन सकते हैं और दूसरों से भी। कुछ निम्न-स्तरीय प्रश्न होते हैं, कुछ उच्च स्तरीय। निम्न स्तरीय प्रश्नों में व्यक्ति को अपनी स्मृति में दर्ज सूचना का पुनः स्मरण करना होता है। वे व्यक्ति की विषय संबंधी ज्ञान पर क्रिया करते हैं। उच्च स्तरीय प्रश्नों में सूचना का प्रसंस्करण करना होता है न केवल पुनः स्मरण करना। वे व्यक्ति की सूचना को समझने, प्रयोग करने, विश्लेषण करने, संश्लेषित करने और मूल्यांकन करने की क्षमता पर कार्य करते हैं। वर्णन करने संबंधी प्रश्नों में व्यक्ति को देख कर वस्तु का वर्णन करना होता है जिसमें चित्रों, प्रदर्शनों, नक्शों, ग्राफों, या तालिकाओं का प्रयोग होता है। तुलना करने वाले प्रश्नों में व्यक्ति को दो या अधिक वस्तुओं या विचारों का परीक्षण करना होता है, और कथनों व चित्रों के माध्यम से समानताएं व अंतर बताने होते हैं। प्रश्न संसृत भी होते हैं और भिन्न भी संसृत प्रश्नों का केवल एक सही उत्तर होगा जबकि भिन्न प्रश्नों में एक से अधिक उपयुक्त उत्तर हो सकते हैं।

#### 4.7.2 बच्चों में प्रश्न कौशल का विकास

प्रश्न बोलने व सुनने का एक अनिवार्य भाग है और इसलिए उन्हें बहुत छोटी उम्र में ही सिखा देना चाहिए। पूर्व-विद्यालय और विद्यालय के अनुभवों में ये कौशल विकसित होते रहते हैं और छोटे बच्चे मौखिक रूप से प्रश्नों के उत्तर देते हैं जैसे—यह क्या है? जब कोई व्यक्ति उनके साथ खेलते हुए एक बाल का रंग या किसी वस्तु को छूकर या इशारा करके पूछता है—“रेत कहां है? यह विवादास्पद है कि कब केवल सुनने और ‘रेत’ शब्द पहचानने से ध्यान इस ओर जाता है कि प्रश्न पूछा गया है और इसका उत्तर देना है। बच्चे के संचार कौशलों की गुणवत्ता स्पष्ट रूप से निर्भर करती है उसके प्रारंभिक संबंध और पर्यावरण पर जिसमें वे बड़ा हुआ है। आलोचनात्मक चिंतन के विकास के लिए प्रश्न पूछने की आदत व शंका होने पर पूछना मूल आवश्यकता है।

#### 4.7.3 शिक्षा के क्षेत्र में प्रश्न पूछने की रणनीतियों का प्रयोग

प्रश्न पूछने की रणनीतियां शिक्षकों को कक्षा के प्रतिभागीता क्रियाकलापों को योजनाबद्ध करने में, गृहकार्य डिजाइन करने में, और परीक्षा देने में मदद करती हैं। ये किसी विषय/कोर्स के लक्ष्य व उद्देश्यों को उनके वास्तविक घटकों से मिलान करने में भी मदद करती हैं। प्रश्न पूछने की रणनीतियों के और कार्य हैं—प्रेरित करना, रुचि उत्पन्न करना, पहले की गलतफहमियों को



पहचानना, मूल्यांकन करना, चिंतन का मार्गदर्शन करना, अनुशासन में रखना, प्रबंधन करना, नियंत्रण करना, निष्क्रिय विद्यार्थियों को भागीदारी के लिए प्रेरित करना, ताकत और कमजोरियों की पहचान करना, समझना कि बच्चे अवधारणाएं कैसे विकसित करते हैं, बच्चों में चिंतनशील चिंतन की आदत का विकास, बच्चों की रुचियों में अंतर्दृष्टि, बच्चों को पूछने के लिए प्रेरित करना, बच्चों को स्वयं अर्थ समझने में सहायता करना, बच्चों को यथार्थवादी उम्मीदें लगाने में सहायता करना, सूचना का संक्षिप्तीकरण करना, अवधारणाओं में संबंध स्थापित करना, बच्चों को फीडबैक (प्रतिक्रिया) देना, उन्हें सुनने के लिए सुराग देना आदि। बच्चों के लिए प्रश्न पूछने की रणनीतियां मदद करती हैं—वर्गीकरण करने में, परीक्षा के प्रश्नों का पूर्वानुमान लगाने में ताकि अधिक प्रभावी तैयारी हो सके। ये समूह अध्ययन में भी सहायक है जिसमें बच्चे एक दूसरे का विषय ज्ञान टैस्ट करते हैं व विशेष विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये बच्चों की स्पष्टीकरण, पुनःव्यवस्था करने और नई सूचना को सही प्रकार समझाने में भी सहायक हैं। प्रश्न पूछना स्वमूल्यांकन व स्व-मानीटरिंग में भी सहायक है।

#### 4.7.4 प्रश्न पूछने के लाभ

प्रश्न और प्रश्न पूछने की तकनीकें शिक्षार्थी की उपलब्धता, अभिवृत्तियां व सोचने के कौशलों को भी प्रभावित करती हैं। प्रश्न का स्तर उसी स्तर के उत्तर की मांग करता है। यदि उच्च स्तर के प्रश्नों के साथ प्रतीक्षा समय भी दिया जाए, पुननिर्देशन व जांच तकनीकें भी बताएं तो उपलब्धि स्तर में वृद्धि हो सकती है।

प्रश्न पूछने की रणनीतियों का एक लाभ है कि वे लचीली व व्यापक रूप लागू की जा सकती हैं। वे विभिन्न विषयों, विभिन्न प्रकार की सूचनाओं, विभिन्न स्तर की क्षमताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाली जा सकती हैं।

प्रश्न पूछने की रणनीतियां शिक्षकों व शिक्षार्थियों दोनों द्वारा समान रूप से प्रयोग की जा सकती हैं। शिक्षार्थी उन्हें प्रयोग करने के लिए किसी की मदद ले सकते हैं या स्वयं अपने कौशल विकसित कर सकते हैं।

#### 4.7.5 कक्षा में बच्चों में प्रश्न पूछने के कौशलों को बढ़ावा देने के दिशा निर्देश

- विश्वास का वातावरण बनाएं और प्रश्नों को प्रोत्साहन दें।
- भिन्न प्रश्नों को प्रोत्साहन दें।
- 'हां' या 'न' उत्तर वाले प्रश्नों की संख्या घटाएं
- चर्चा को सही उत्तर के साथ बंद न करें
- प्रश्न पूछने व उत्तर लेने में कम से कम 5 सैकंड का प्रतीक्षा समय दें।
- रुकने के लिए अच्छा समय प्रदान करें।
- संवेदनशील सुनने की तकनीकों का विकास करें।





टिप्पणी

- 'चुप रहने' के समय को विकसित करें।
- विकास स्तर के अनुकूल प्रश्नों की प्रशंसा करें।
- अच्छे प्रश्न पूछने के कौशलों को आदर्श बनाएं।
- बच्चों को पाठ में से क्विज या छात्र कार्य पर आधारित अपने प्रश्न विकसित करने के लिए प्रेरित करें।
- उत्साहवर्धक तरीके से जवाब दें
- चर्चा के विषय रुचिकर रखें

#### 4.8 चिंतन कौशल विकसित करने में विद्यालय और शिक्षक की भूमिका

शिक्षा मानव विकास की प्रक्रिया है। सोचने की शक्ति बढ़ाने से बौद्धिक व मानसिक विकास संभव है। चिंतन प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक को अपने शिक्षार्थियों और उपकरणों को समझने का प्रयास करना चाहिए। सोचने की शक्ति को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण और निर्देश योजनाबद्ध व व्यवस्थित किए जाते हैं। निम्न उपकरण सोचने की शक्ति को बढ़ावा देने में प्रयोग किए जाते हैं :

- शिक्षण और निर्देशन के उद्देश्य
- पाठ्यक्रम विकास
- पाठ्यपुस्तकें व निर्देशन सामग्री का विकास
- शिक्षण की विधियां एवं तकनीकें
- शिक्षण के मॉडल
- मूल्यांकन और निदान
- उपचारात्मक शिक्षण एवं निर्देशन

##### 4.8.1 शिक्षक बच्चों में चिंतन-कौशल को कैसे उत्प्रेरित कर सकते हैं

- ऐसी शिक्षण रणनीतियां प्रयोग करें जो चिंतन कौशलों के विकास व विषय वस्तु में पारंगत होने में सहायक हों
- जब शिक्षार्थी किसी प्रकार के कार्य करने में सफल हो जाएं तो उनका ध्यान उन सोचने के कौशलों पर करवाएं जिनका उन्होंने प्रयोग किया है।
- शिक्षार्थियों को चिंतन करने के लिए प्रेरित करें कि उन्होंने क्या किया है जो प्रभावी है और वे इन क्रियाओं को नाम दें।





- रणनीतियों को आदर्श बनाने के लिए ऊंचा बोलकर सोचें, या बच्चों से पूछें कि जब उन्होंने स्वयं किसी चिंतन कौशल को सफलतापूर्वक प्रयोग किया तो उन्होंने जो किया, वह क्यों किया।
- शिक्षार्थियों को प्रेरित करें कि जब वे सोचें तो अपने आपसे बात करें। प्रारम्भिक स्तर पर वे ऊंचा बोले और धीरे-धीरे शांति से खुद से बात करें कि वे क्या कर रहे हैं।
- शिक्षार्थियों को मूल कौशल सीखने में सहायता करें। ताकि वे समय निकाल कर चिंतन कौशलों पर ध्यान केंद्रित करें न कि कार्य के मूल कौशलों में ही उलझे रहें।
- कई चिंतन कौशलों की स्वभाविक शर्तों को पहचानें। शिक्षार्थियों को समझने में सहायता करें कि इन कौशलों को प्रयोग करते समय 'कब प्रयोग करना है' भी सीखें न कि केवल 'कैसे प्रयोग करना है'।
- ज्ञान के स्थानांतरण को प्रेरित करें। दिए गए पाठ के विषय के भीतर व बाहर जुड़ाव पर बल दें। विभिन्न मौकों पर अर्जित की गई जानकारी के एकीकरण को प्रोत्साहन दें।
- शिक्षार्थियों ने अपनी समझ का मूल्यांकन कितना सही किया है इस पर भी प्रतिक्रिया (फीडबैक) दें न कि केवल कितना समझा है पर।
- केवल रणनीतियों के ज्ञान पर बल न दें बल्कि इस पर भी गौर करें कि उन्हें प्रयोग करना क्यों मूल्यवान है और उन्हें कैसे प्रयोग करें।
- इतना जान लें कि शिक्षार्थी चिंतन रणनीतियों के ज्ञान का स्थानांतरण मूल परिस्थिति से ज्यादा दूर तक नहीं कर पाते जब तक कि उन्हें इसके लिए सहायता न मिले। "याद करो कब... अब चलो" नियम इन कौशलों के सामान्यीकरण में सहायता करता है।
- शिक्षार्थियों को 'विधियों की मॉनीटरिंग और गहराई जिस तक उन्हें सूचना का प्रसंस्करण करना है' में सहायता करने के लिए संकेत प्रदान करें।
- बाहरी संकेतों पर अध्याधिक निर्भरता से बचें। हालांकि प्रारम्भिक अवस्थाओं में चिंतन कौशल विकसित करने के लिए संकेतों की आवश्यकता हो सकती है, परम लक्ष्य स्व-नियंत्रण ही है।
- चिंतन कौशलों के संज्ञानात्मक घटकों के अतिरिक्त भावात्मक या व्यक्तित्व के पहलुओं पर भी ध्यान केंद्रित करें।
- ध्यान रखें कि चिंतन कौशलों पर ध्यान कहीं शैक्षिक कार्यों को समर्पित सीमित अधिगम संसाधनों की आवश्यकता के लिए प्रतिस्पर्धा सीखने से ध्यान विचलित न करे।
- शिक्षार्थियों को उच्च स्तरीय क्रियाकलापों में मिलकर काम करने के लिए प्रेरित करें ताकि वे विभिन्न चिंतन कौशलों को एक दूसरे से सीखकर विभिन्न चिंतन रणनीतियों की तुलनात्मक प्रभाविता का मूल्यांकन कर सकें।



टिप्पणी

### 4.8.2 बच्चों के चिंतन कौशल विकसित करने के लिए प्रयोग की जाने वाली कक्षा तकनीकें

प्रमाण दर्शाते हैं कि 'मस्तिष्क जिम' प्रकार के क्रियाकलाप चिंतन कौशलों के विकास का उपयोगी आधार बनाते हैं। ऐसे क्रियाकलाप बच्चों के प्रारंभिक वर्षों से प्रयोग किया जा सकते हैं। ये क्रियाकलाप बच्चों को भिन्न तरीकों से सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

शिक्षार्थियों की ग्रहण की गई मानसिक प्रक्रियाओं के विश्लेषण के लिए आवश्यक मौखिक उपकरण प्रदान करना 'चिंतन' को सुधारने का एक तरीका है। प्राथमिक विद्यालय के प्रारंभिक वर्षों से शिक्षक शिक्षार्थियों को कार्य आधारित क्रियाएं जो उनके चिंतन कौशल विकसित करने में सहायक हैं, करने में प्रेरित कर सकते हैं। जैसे ही शिक्षार्थियों में अपने विचार व्यक्त करने का आत्मविश्वास बढ़ता है, शिक्षक उनमें चिंतन कौशल विकसित करने के लिए प्रश्न पूछने की तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं।

'सोचने के हैट' भी कक्षा के लिए एक उपयोगी अवधारणा है जो एक विषय के बारे में विभिन्न प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करता है। विभिन्न विषय क्षेत्रों में बच्चों की चिंतन को बढ़ावा देने के लिए कई विशेष शिक्षण तकनीकों की पहचान की गई है। उदाहरण के लिए 'अलग को बाहर करो' एक शिक्षण तकनीक है जो विभिन्न विषयों में बच्चों की मूल अवधारणाओं की समझ को पहचानती है। यह तकनीक ज्ञान जो बच्चे ने प्राप्त किया है और उसकी शब्दावली में अंतर दर्शाती है। यह उपागम चिंतन और तर्क को बढ़ावा देता है।

अवधारणा को मानचित्रण में लिखना होता है और यह चिंतन को दृश्यमान कर देता है। केंद्रीय विचार का रेखांकन करके नए व संबंधित विचारों को सोचना इसमें शामिल है।

शैक्षिक साफ्टवेयर भी शिक्षक की भांति सीधी पूछताछ को प्रश्न पूछकर बढ़ावा देता है, संकेत प्रदान करता है और खोज के रास्ते सुझाता है।

वह एक संदर्भ के रूप में भी काम करता है जब शिक्षार्थी चर्चा करते हैं, विचार खोजते हैं जिससे 'सिमुलेशन' के प्रति चिंतन की प्रेरणा मिलती है। चिंतन और अधिगम के मध्य बड़ी वार्ता के रूप में प्रयोग करें तो कम्प्यूटर बच्चों में चिंतन कौशल विकसित कर सकता है। शिक्षक के लिए चुनौती है कि वह कम्प्यूटर के प्रयोग के तरीके ढूंढे ताकि बच्चों की चिंतन को बढ़ावा मिले।

जब बच्चों को प्रभावी सोचने की आदत पड़ जाती है तो उनका अधिगम समृद्ध बनता है और वे भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर रूप से तैयार होते हैं।

### 4.9 सारांश

"पूरा विज्ञान रोजमर्रा के चिंतन के शोधन के अतिरिक्त कुछ नहीं है" –अल्बर्ट आइंस्टाइन  
चिंतन क्षमता को विकसित करने के लाभ अनेक हैं। अपने चिंतन कौशलों का विकास करके





व्यक्ति उपलब्धियां हासिल कर सकता है, सफल बन सकता है, सामाजिक जीवन में चमक सकता है, भावात्मक, सामाजिक वित्तीय परिपक्वता हासिल कर सकता है आदि। अपनी चिंतन क्षमताओं को विकसित करके व्यक्ति अपनी आक्रामक प्रवृत्तियों, गुस्सा व अन्य नाकारात्मक प्रवृत्तियों को सृजनात्मक व रचनात्मक तरीके से बदल सकता है। डा. एडवर्ड डि बोनो ने पता लगाया है कि जब स्कूली बच्चों को प्रभावी ढंग से सोचना सिखाया गया तो उनका बुरा स्वभाव व आक्रामक प्रवृत्तियां काफी हद तक कम हो गईं। क्लीनिकल मनोवैज्ञानिकों ने भी पाया कि जब 'न्यूरोटिक' व्यक्तियों को प्रभावी ढंग से सोचना सिखाया, उनकी 'न्यूरोसिस' में काफी कमी आई। शोधकर्ताओं ने प्रमाणित किया है कि चिंतन एक कौशल है जिसे प्रशिक्षण एवं अभ्यास से बढ़ाया जा सकता है। इसलिए यह शिक्षकों और बड़ों का उत्तरदायित्व है कि वे बच्चों में हर संभव तरीके से चिंतन कौशलों को पोषित करने का प्रयास करें ताकि महान विचारकों के साथ एक बेहतर दुनिया का सृजन किया जा सके।

## 4.10 प्रगति जाँच के उत्तर

### प्रगति जाँच-1

1. ज्ञान, बोध और प्रयोग निम्न स्तर के या मूल चिंतन कौशल हैं, जबकि विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन उच्च स्तर के चिंतन कौशल हैं।

### प्रगति जाँच-2

1. संवेदी मोटर अवस्था, पूर्व परिचालन अवस्था, मूर्त (टोस) परिचालन अवस्था, औपचारिक परिचालन अवस्था
2. CoRT के चिंतन उपकरण हैं : C & S (परिणाम व अगली कड़ी), AGO (उद्देश्य, लक्ष्य, उद्देश्य); OPV (दूसरे लोगों के विचार); APC (विकल्प, संभावनाएं एवं रास्ते); PMI (अच्छे, बुरे, रुचिकर विचार); FIP (पहली महत्वपूर्ण प्राथमिकता) और CAF (सभी कारकों पर गौर करें)।

### प्रगति जाँच-3

1. नीले रंग का हैट प्रक्रिया नियंत्रण, सोचने के बारे में सोचने पर ध्यान केंद्रित करता है।
2. तैयारी, उष्मायन, सृजनात्मकता, मूल्यांकन, पुनरावृत्ति

### प्रगति जाँच-4

1. परिस्थिति व ऐच्छिक प्रतिफल परिभाषित करना, शोध करके विकल्पों की पहचान करना, हर विकल्प व उसके होने वाले प्रभावों की तुलना व अंतर करना, निर्णय लेना व विकल्प को चुनना, एक क्रियाण्वन योजना बनाना व उसे प्रयोग करना, परिणामों का मूल्यांकन करना।





टिप्पणी

#### 4.11 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

फ्लीथम माइक : हाउ टु क्रिएट एंड डेवेलप व थिंकिंग क्लासरूप कैवीग्लीओली ऑलीवर एण्ड हैरिस इआन; रीचिंग आऊट टु ऑल थिंक्स, नेटवर्क प्रैस

कैवीग्ली ओली ऑलीवर : हैरिस इआन और टिंडन बिल: थिंकिंग स्किलस एंड आई क्यू, नेटवर्क प्रेस

मारगन टी क्लीफोर्ड, किंग ए रिचर्ड, वेज आर जॉन और शॉपलर जॉन: इंट्रोडक्शन टु साइकोलॉजी, 7वां एडीशन (1993), टाटा मेक ग्रा हिल एडीशन

बेरन आर.ए. : साइकोलॉजी, तीसरा संस्करण (1996), प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड

शर्मा आर.ए.; फण्डामेंटलस ऑफ एजूकेशनल साइकोलॉजी, (2002) सूर्या प्रकाशन, मेरठ एडी, पी. और शेयर, एम. (2002) लर्निंग इंटेलिजेंस, बकिंगघम, ओपन यूनिवर्सिटी प्रैस ब्लूम, बी. और क्रैथवॉल, डी.आर. (1956) टेक्सोनोमी ऑफ एजूकेशनल आब्जेक्टिवस, हैण्डबुक 1;

काग्निटिव डोमेन, न्यूयार्क: डेविडमेकके बुजान, टी. (1974/1993); यूज युअर हैड, लंडन: बीबीसी पब्लिकेशन और देखें [www.imindmap.com](http://www.imindmap.com)

कैवीग्लीओली ओ. और हैरिस आई. (2000) मैपवाइस: एक्सलरेटिड लर्निंग थ्रू विजिबल थिंकिंग, नेटवर्क एजूकेशनल प्रेस

क्लैक्सटन जी. (2002) बिल्डिंग लर्निंग पॉवर; हेल्पिंग यंग पीपल बिकम बैटर लर्नर्स, टी एल ओ, ब्रिस्टॉल

कोफील्ड, एफ., मॉस्ले, डी, हॉल, ई. और एकलेसटन, के (2004) शुड वी बी यूसिंग लर्निंग स्टाइलस. वट रिसर्च हेस टु से टु प्रेक्टिस, लंडन; लर्निंग स्किलस एण्ड डेवेलपमेंट एजेन्सी

डि. बोनो, ई (1999) सिक्स थिंकिंग हैटस, लंदन, पेंथविन

DFEE (1999) द नेशनल करीकुलम, हैण्डबुक फॉर प्राइमरी टीचर्स इन इंग्लैंड, लंदन QCA ([www.nc.uk.net](http://www.nc.uk.net))

DFEE (2004) प्राइमरी नेशनल स्टूटेजी ([www.standards.dfes.gov.uk](http://www.standards.dfes.gov.uk)) फिशर, ऑर. स्टोरीज़ फॉर थिंकिंग (1996), फस्ट पोएम्स फार थिंकिंग (2000) वेल्स्यूज़ फॉर थिंकिंग (2001) आक्सफोर्ड, नेश पोलॉक



- फिशर, आर. (2003) टीचिंग थिंकिंग; फिलोसॉफिकल इन्कुआरी इन द क्लासरूम, लंदन: कॉन्टीनुअम
- फिशर, आर. (2005) (दूसरा संस्करण) टीचिंग चिल्ड्रन टु थिंक, शेल्टनहैन, स्टेनले थोरनेस गोलमैन डी. (1995) इमोशनल इंटेलीजेन्स, न्यू यार्क, बानटम
- गार्डनर एच (1993); मल्टीपल इंटेलीजेन्सिस; थ थिओरी इन प्रेक्टिस, बेसिक बुक्स, न्यू यार्क टिगिन्स, एस. नॉमफील्ड, बी. एण्ड लीट, डी (2001) थिंकिंग थ्रू प्राइमरी टीचिंग कैम्ब्रिज: क्रिस किंगटन
- लिपमैन, एम. (2003) (दूसरा संस्करण) थिंकिंग इन एजूकेशन, कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रैस
- मैक्गिनीज़ सी. (1999) फ्राम थिंकिंग स्किलस टु थिंकिंग क्लासरूमस, ए रिव्यू एण्ड इवेल्यूएशन ऑफ एप्रोचेस फॉर डेवेलपिंग प्यूपिल्स थिंकिंग; लंदन, DFEE, (रिसर्च रिपोर्ट RR 115)
- पिआजे, जे. (1953) द ओरिजिन्स ऑफ इंटेलीजेन्स इन चिल्ड्रन, लंदन, रॉलेज एंड कीगन पॉल स्मिथ, ए. (2002) द ब्रेन बिहांड इट, स्टेफोर्ड, नेटवर्क एजूकेशन प्रैस
- वेगरिफ, आर (2002) लिटरेचर रिव्यू इन थिंकिंग स्किलस, टेक्नोलॉजी एण्ड लर्निंग [www.nestafuturelab.org](http://www.nestafuturelab.org)
- फिशर, आर. 'थिंकिंग स्किलस', इन आर्थर जे. ग्रेनगर, टी. एंड ब्रे डी (एडस) लर्निंग टु टीच इन प्राइमरी स्कूल, रॉलेज फाल्मर "अनकवरिंग स्टूडेंट्स" थिंकिंग अबाउट थिंकिंग यूसिंग कन्सेप्ट मैप्स"—एक पेपर AERA कान्फेरेंस मार्च 2008 के लिए तैयार किया गया।
- कल्टीवेटिंग ए कल्चर ऑफ थिंकिंग इन म्यूसियम्स, रॉन रिचहार्ट, जर्नल ऑफ म्यूसिअम एजूकेशन 32, न.2 (समर 2007); 137-54
- स्कूल्स नीड टु पे मोर अटेन्शन टु "इंटेलीजेन्स इन द वाइल्ड" डेविड एन. पर्किन्स, हावर्ड एजूकेशन लैटर (मई/जून 2000)
- डेविड एन पर्किंस एण्ड अदर्स, "इन्टेलीजेन्स इन द वाइल्ड"; ए डिस्पोजीशनल न्यू ऑफ इंटलेक्चुअल ट्रेट्स, एजूकेशनल साइकोलॉजी रिव्यू 12, न.3 (2000). 269-93
- शरी टिशमन, "वाए टीच हैबिट्स ऑफ माइंड?" इन डिस्कवरिंग एण्ड एक्ससप्लोरिंग हेबिट्स ऑफ माइंड, (एड) आर्थर एल कॉस्ता एण्ड बेना कैलिक (अलेक्जेन्ड्रिया, वी.ए. ASCD, 2000); 41-52
- रॉन रिचहार्ट एण्ड डेविड एन परकिनस, लाइफ इन द माइंडफुल क्लासरूम: नरचरिंग द





टिप्पणी

डिस्पोजीशन ऑफ माइंडफुलनेस, "जर्नल ऑफ सोशल डशूज 56, न.1 (2000), 27-47

शारी टिशमन एंड पेट्रीशिया पालभर, "वर्क्स ऑफ आर्ट आर ए गुडथिंग टु थिंक एबाऊट" ए स्टडी ऑफ द इम्पेक्ट ऑफ द आर्टफुल थिंकिंग प्रोग्राम आन स्टूडेंट्स कन्सेप्ट्स ऑफ थिंकिंग इन इवेल्यूएटिंग द इम्पेक्ट ऑफ आर्ट एंड कल्चुरल ऐजुकेशन, पेरिस; सेंटरपॉम्पिडू 89-101

शारी टिशमन "द ऑब्जेक्ट ऑफ देयर अटैन्शन" एजुकेशन लीडरशिप, फरवरी 2008 65 (5) pp 44-46

सूज़न बराहल. "थिंकिंग एबाउट थिंकिंग: प्रीसर्विस टीचर्स स्ट्रेगथन देयर थिंकिंग आर्टफुली", फाई डेल्टा कम्पन, 90 (4); pp 298-302

डेविड एन परकिन्स, स्मार्ट स्कूलस: बैटर थिंकिंग एंड लर्निंग फार एवरी चाइल्ड (न्यू यार्क फ्री प्रेस, 1995)

डेविड एन. परकिन्स; द इंटेलीजेंट आई: लर्निंग टु थिंक बाइ लुकिंग एट आर्ट (सान्ता मॉनिका, CA: द गेटी सेंटर फॉर ऐजुकेशन इन द आर्ट्स, 1994)

रॉन रिचहार्ट, इन्टेलेक्चुएल करेक्टर, वाट इट इज़, वाए इट मैटरस, एण्ड हाऊ टु गैट इट (सेन फ्रांसिस्को, CA, जोसी-बॉस, 2002)

शारी टिशमन, डेविड एन परकिन्स, ईलीन, जे. द थिंकिंग क्लासरूम: टीचिंग एंड लर्निंग इन ए कल्चर ऑफ थिंकिंग (नीधम, एम.ए., एलिन एंड बेकन, 1995)

टीना गोजर, लॉरा हॉविक, शारी टिशमन एंड डेब्रा वाइस, आर्ट वर्क्स फॉर स्कूलज़: ए करीकुलम फॉर टीचिंग थिंकिंग इन एण्ड थ्रू आर्ट्स (लिंकन, एमए, डि कॉर्डोवा म्यूजिअम एण्ड स्कल्पचर पार्क, 2002)

<http://www.simerr.educ.utas.edu.au/numeracy/thinking.strategies....>

<http://www.muskingum.edu/>

#### 4.12 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. अपनी कक्षा में सृजनात्मकता के स्तर को देखने के लिए कोई एक सृजनात्मक चिंतन की तकनीक का प्रयोग करें।
2. ब्लूम के वर्गीकरण पर आधारित अपने विषय पर एक प्रश्न पत्र बनाएं और इस पर अपनी कक्षा में चर्चा करें।



3. कक्षा में चिंतन कौशलों को बढ़ावा देने के लिए पहले एक पूर्व-परीक्षण और फिर कुछ रणनीतियों का प्रयोग करें। पर्याप्त समय के पश्चात एक बाद का परीक्षण करें और देखें कि समय के साथ चिंतन में वृद्धि होने से क्या बच्चों की उपलब्धता में कोई वृद्धि हुई है?

अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली 2011

- जॉहन मेन्डर, एम.ए., क्लासरूम टीचिंग, न्यूइनस एजुकेशनल पब्लिशिंग कंपनी, लंदन, 1950
- स्कनर, सी.ई., एजुकेशनल साइकोलॉजी, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1962





## इकाई-5 आत्म प्रत्यय का विकास

### संरचना

#### 5.0 प्रस्तावना

#### 5.1 अधिगम उद्देश्य

#### 5.2 बच्चों में स्वयं की अवधारणा का विकास

5.2.1 अवधारणाएं और स्वयं की अवधारणा कैसे बनती है।

5.2.2 स्वयं-अवधारणा को प्रभावित करने वाले कारक

#### 5.3 बच्चों में मूल्यों का विकास

5.3.1 मूल्य विकास में अनुशासन की भूमिका

#### 5.4 बच्चों में अभिवृत्तियों का विकास

5.4.1 अभिवृत्ति का अर्थ

5.4.2 अभिवृत्ति के अवयव

5.4.3 बच्चों में अभिवृत्ति का विकास

5.4.4 बच्चों में अच्छी अभिवृत्तियों के विकास में शिक्षक की भूमिका

5.4.5 पांच प्रभावीशिक्षक अभिवृत्तियां

#### 5.5 अनुभूति का महत्त्व व बच्चों में इसका विकास

5.5.1 बच्चे में अनुभूति का विकास

5.5.2 विकसित हो रहे बच्चे में अनुभूति का महत्त्व

5.5.3 ज्ञान, स्मृति और अनुभूति

5.5.4 अनुभूति के विकास में खेलकूद का महत्त्व

#### 5.6 अभिप्रेरणा

5.6.1 छोटे बच्चों में अभिप्रेरणा की विशेषताएं

5.6.2 अभिप्रेरणा का विकास

5.6.3 अभिप्रेरणा को बढ़ावा देना

#### 5.7 सारांश

#### 5.8 स्वयं परीक्षण के उत्तर

#### 5.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

#### 5.10 अन्त्य इकाई अभ्यास



## 5.0 प्रस्तावना

बच्चा जब जन्म लेता है तो उसे कोई अनुभव नहीं होता। यह सब जानते हैं। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है, वह नए-नए अनुभव प्राप्त करता है। वृद्धि दो प्रकार की होती है—शारीरिक वृद्धि और मनोवैज्ञानिक वृद्धि। समय के साथ शारीरिक वृद्धि होती रहती है, जैसे कद, भार का बढ़ना। यह बच्चे को दिए गए भोजन की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। प्रेम, स्नेह, अनुशासन आदि मनोवैज्ञानिक या मानसिक वृद्धि में सहायता करते हैं। ये सब स्वयं अवधारणा प्रभावित करते हैं। शिक्षक के रूप में आपने देखा होगा कि बच्चों में स्वयं अवधारणा का स्तर एक समान नहीं है। उनमें व्यक्तिगत भिन्नताएं हैं। एक शिक्षक के नाते आपको यह समझना होगा और बच्चों को उनकी स्वयं-अवधारणा को सुधारने में मदद करनी होगी। इस पाठ में हम विभिन्न कारकों के बारे में पढ़ेंगे जो स्वयं-अवधारणा के विकास को प्रभावित करते हैं।

## 5.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- बता सकेंगे कि स्वयं अवधारणा कैसे बनती है।
- स्वयं अवधारणा विकसित करने की शर्तें बता पाएंगे।
- स्वयं अवधारणा को प्रभावित करने वाले कारकों के नाम बता देंगे।
- बच्चों में मूल्यों व नैतिक विकास को वर्णन कर सकेंगे।
- मूल्यों के विकास में अनुशासन की भूमिका बता पाएंगे।
- अभिवृत्तियों के विकास व अच्छी अभिवृत्तियों के विकास में शिक्षक की भूमिका का ब्यौरा दे पाएंगे।
- अनुभूति के महत्त्व व बच्चों में इसके विकास को समझा पाएंगे।
- बच्चों में अभिप्रेरणा की विशेषताएं; आंतरिक अभिप्रेरणा, हठधर्मी, चुनौतियों का चुनाव और निर्भरता के बारे में बोल पाएंगे।
- अभिप्रेरणा के विकास व बढ़ोतरी की विधियों का प्रदर्शन कर पाएंगे।

## 5.2 बच्चों में स्वयं अवधारणा का विकास

### 5.2.1 अवधारणाएं और स्वयं अवधारणाएं कैसे बनती हैं

अवधारणाओं को हमारे मस्तिष्क में बनी छवियां माना जाता है। वे बच्चों को दुनिया कार्यात्मक





## टिप्पणी

इकाइयों के रूप में समझने में सहायता करती है। अवधारणा सभी प्रकार के अधिगम की मूल इकाई है। बचपन से बुढ़ापे तक मनुष्य नई अवधारणाएं सीखता है और पुरानी अवधारणाओं को दैनिक जीवन में नई परिस्थितियों में प्रयोग करता है। उम्र, अनुभव व बुद्धि के आधार पर व्यक्ति अवधारणा-निर्माण के स्तर में भिन्न होते हैं। अवधारणा निर्माण की प्रक्रिया एक बड़े, भिन्नभिन्नाते, खिले, भ्रम से उत्पन्न होता है जिसमें बच्चा पैदा होता है। बच्चा कुछ जैविक विरासत के साथ पैदा होता है और बाहरी दुनिया को अपनी ज्ञानेन्द्रियों से अनुभव करता है जो ज्ञान के द्वार हैं। कुछ बच्चों में अवधारणाएं पूरी और सही प्रकार से विकसित होती हैं, कुछ में आंशिक रूप से विकसित होती हैं और कुछ में गलत प्रकार से। क्योंकि संस्कृति कुछ क्षमताओं के विकास में प्रभाव डालती है, इसलिए सांस्कृतिक भिन्नताओं से व्यक्तिगत भिन्नताएं विकसित होती हैं। अवधारणाओं के विकास के लिए कम उम्र महत्वपूर्ण है और उसके लिए एक प्रेरक वातावरण आवश्यक है। जब बच्चे के अभिभावक अनपढ़ होते हैं तो वे बच्चों से उस प्रकार बात नहीं कर पाते जिससे वे समझ सकें। इसलिए विकास की दृष्टि से बच्चे के घर का वातावरण स्कूल, पास-पड़ोस का वातावरण बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है। जैसे-जैसे बच्चे आसपास की दुनिया को समझने लगते हैं, वे धीरे-धीरे विभिन्न अवधारणाएं सीखने लगते हैं। अनेक प्रकार की अवधारणाएं जो बच्चे सीखते हैं, वे हैं जीवन, मृत्यु, शरीर के कार्य, स्थान, भार, संख्या, समय, लिंग संबंधी भूमिकाएं, सामाजिक जागरूकता, सौंदर्य, स्वयं आदि। अवधारणाओं का विकास निर्भर करता है बच्चे को बचपन में मिले अवसरों और प्रेरणा पर। उदाहरण के लिए जिस बच्चे को बचपन में ही कई देशों में घूमने का अवसर मिला हो, वह समझता है कि दुनियाभर में लोग रहते हैं जिनकी अपनी भाषाएं और संस्कृति है। जिस बच्चे को यह ज्ञान न मिले हो, उसके लिए इस अवधारणा को समझना मुश्किल है। इसलिए सब बच्चों में समझ व अवधारणाओं का विकास नहीं होता उनकी विभिन्न अवधारणाओं की समझ का स्तर भी अलग-अलग होता है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं और स्कूल जाते हैं, यह अंतर कम होता जाता है, क्योंकि उन्हें समान अधिगम परिस्थितियां मिलने लगती हैं।

शारीरिक विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व का विकास भी होता है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है उसका बचपन में बना आधार फैलने लगता है और अधिक लोगों से प्रतिक्रिया के फलस्वरूप बढ़ता जाता है। माता-पिता, भाई-बहन और अन्य संबंधी बच्चे की पहली सामाजिक दुनिया हैं। वे बच्चों के बारे में कैसा महसूस करते हैं और उनसे किस प्रकार बर्ताव करते हैं, ये बहुत महत्वपूर्ण कारक हैं जो बच्चे की स्वयं अवधारणा बनाते हैं और व्यक्तित्व पैटर्न का मूल हैं। जैसे बच्चा बढ़ता है और स्कूल व पड़ोस में मित्र मंडली को मिलता है, वे उसके व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करने लगते हैं। इन लोगों की अभिवृत्तियां, उनका बच्चे से बर्ताव करने का ढंग, सब बच्चे की स्वयं अवधारणा पर प्रभाव डालते हैं। यह प्रभाव उसकी शुरुआती नींव के अनुकूल हो सकता है, या परिवर्तित हो सकता है या शुरु की अवधारणाओं के जो घर में बनी हैं, प्रतिकूल भी हो सकता है।

शुरु की मित्र मंडली की अभिवृत्तियां, परिवार के प्रमुख सदस्यों की अभिवृत्तियां सब बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि एक बार जो स्वयं-अवधारणा की नींव बन जाती है, उसे बदलना मुश्किल होता है। इसके अलावा जब मित्र मंडली और परिवार के सदस्यों में बच्चे के बारे में एक राय





बन जाती है, एक सोच की आदत बन जाती है जैसे कि यह मददगार है, परेशान करता है, शरारती है, गलत काम करता है आदि तो वे इसी सोच या अभिवृत्ति को बनाए रखते हैं और इसमें परिवर्तन मुश्किल ही होता है।

बचपन में बच्चे के स्वयं-अवधारणा के विकास को आकार देने में बच्चे के घर का माहौल और परिवारिक परिस्थितियों का हाथ होता है क्योंकि बच्चे की शुरुआती अधिगम क्रियाएं काफी हद तक इसी समय होती हैं। बच्चों का अपने परिवार से सामान्य रिश्ता होना बहुत जरूरी है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है माता-पिता का नजरिया। माता-पिता अपने बच्चों के रूप, क्षमताओं, उपलब्धियों आदि के बारे में कैसा महसूस करते हैं, इसका बच्चों की सोच व स्वयं-अवधारणा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे को घर में प्रशिक्षित करने का तरीका भी बच्चे के स्वयं-अवधारणा के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सख्त सत्तावादी अनुशासन और अक्सर सजा देना व्यक्तियों में सत्ताधारी व्यक्ति के खिलाफ असंतोष उत्पन्न करता है। माता-पिता की बच्चों के प्रति आकांक्षाएं भी महत्वपूर्ण हैं और बच्चे के स्वयं-अवधारणा के विकास को प्रभावित करती हैं। जब माता-पिता की आकांक्षाएं अवास्तविक रूप से उच्च हो तो बच्चा विफल होगा, बर्बाद होगा। यहां हीन भावना व अपर्याप्ता की भावनाओं की नींव बनती है। वे अपने आप को बेकार और 'किसी काम के नहीं' समझने लगते हैं।

परिवार में बच्चों की क्रमिक स्थिति भी व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करती है। यानि क्या वह पहला बच्चा है या दूसरा। आदि। विशेष परिस्थितियों में जहां बच्चे को उसके परिवार के स्थान के अनुसार व्यवहार मिलता है, उसके स्वयं-अवधारणा के विकास को प्रभावित करता है। अलग-अलग बच्चों को जन्म के क्रम के अनुसार अलग-अलग तरह से प्रशिक्षित किया जाता है। एक और कारक जिसका महत्वपूर्ण प्रभाव है, वो है भाई-बहनों में आपसी प्रतिस्पर्धा; आपस में सफलता, असफलता की तुलना।

बचपन में बच्चे जाति, धर्म, प्रजाति आदि कारकों की जानकारी नहीं रखते। परन्तु जब वे बड़े होते हैं तो ये मुद्दे कहीं न कहीं उनके जीवन में उभरते हैं। जब बच्चा समाज में अधिक लोगों के साथ प्रतिक्रिया करता है तो ये मुद्दे और प्रखर हो जाते हैं। विभिन्न लोगों से परस्पर क्रिया बच्चे की पृष्ठभूमि पर निर्भर करती है और उसे अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों तक ले जाती है। जब ये अनुकूल होती हैं तो उनमें सकारात्मक स्वयं-अवधारणा का विकास होता है। जब मित्र मंडली उसकी उपेक्षा करती है या अस्वीकार करती है तो नकारात्मक स्वयं-अवधारणा का विकास होता है। यहां बच्चे की प्रवृत्ति अपनी सुविधा क्षेत्र ढूंढने की बन जाती है जिसमें बच्चे को अपने जैसों का साथ मिले जो उसे अपने समुदाय में ही मिलता है। यहां भेदभाव की भावना का विकास शुरू हो जाता है। एक शिक्षक के नाते आपसे बच्चों को सही दिशा की ओर मार्गदर्शन करने की उम्मीद की जाती है ताकि समय पर सुधार हो सके और भेदभाव का भावना न विकसित हो।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे लिंग-औचित्य समझना शुरू हो जाते हैं। जब वे ऐसी अभिवृत्तियां विकसित करते हैं जो लैंगिक रूप से उपयुक्त हैं, उन्हें बाकी सब पसंद करते हैं और ये व्यक्तित्व की अनुकूल विशेषताओं में शामिल हो जाते हैं। लड़के-लड़कों की भांति





टिप्पणी

उपयुक्त व्यवहार दिखाते हैं और लड़कियां लड़कियों की तरह। जब वे ऐसा नहीं करते तो इसे प्रतिकूल व्यवहार समझा जाता है। ऐसा लड़कियों के साथ अधिक होता है।

विभिन्न कारकों के कारण पर्यावरण असुरक्षा जैसे मृत्यु, जुदाई, तलाक या सामाजिक गतिशीलता बच्चों की स्वयं-अवधारणा को काफी हद तक प्रतिकूल दिशा में प्रभावित करते हैं। ऐसा इसलिए कि इन कारकों के कारण वे अपनी मित्रमंडली से भिन्न हो जाते हैं। माता-पिता की पदोन्नति या पदावनति दोनों स्वयं-अवधारणा को भिन्न रूप से प्रभावित करते हैं। इसलिए बच्चे को वृद्धि के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान करना आवश्यक है।

अनुकूल या प्रतिकूल स्वयं अवधारणा का विकास बचपन में जीवन की घटनाओं पर निर्भर करता है। प्रतिकूल स्वयं अवधारणा का विकास तब होता है जब माता-पिता उनसे अवास्तविक अकांक्षाएं रखते हैं, जब मित्र मंडली के अन्य सदस्य मेलजोल करने लगते हैं और वह अपने तक ही सीमित रहता है, जब उसकी तरफ समाज का रवैया प्रतिकूल होता है, आदि। इन कारकों के कारण बच्चे का अपने प्रति रवैया भी प्रतिकूल हो जाता है। माता-पिता सोचते हैं कि बच्चे समय के साथ इस प्रतिकूल स्वयं-अवधारणा से छुटकारा पा लेंगे। पर, सच्चाई यह है कि जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है, यह प्रतिकूल स्वयं अवधारणा बढ़ती जाती है और अधिक हद हो जाती है। जो भी कारण हों ये प्रतिकूल स्वयं-अवधारणाएं बचपन में आसानी से बन जाती हैं। खुशी निर्भर करती है कि परिवार बच्चे के साथ कैसा व्यवहार करता है। कहा जाता है कि खुशी के तीन 'A' हैं—Acceptance यानि स्वीकार करना, Affection यानि स्नेह और Achievement यानि उपलब्धि। खुशी के लिए बच्चे की मूल-आवश्यकताओं की पूति करनी जरूरी है, और यह बच्चे की अनुकूल स्वयं-अवधारणा में प्रतिबिंबित होगा।

### 5.2.2 स्वयं अवधारणा को प्रभावित करने वाले कारक

स्वयं अवधारणा के विकास को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं :

1. **शारीरिक स्थिति**—अच्छी सेहत से हमेशा उचित और स्वस्थ वृद्धि होती है। बुरा स्वास्थ्य या शारीरिक दोष बच्चों को दूसरे मित्रों से दूर कर देता है। यह लाचारी और कमजोरी बच्चे में हीन-भावना का विकास करता है।
2. **शरीर का गठन**—जब बच्चे अपने सामान्य आकार तक नहीं बढ़ पाते, वे अपनी उम्र के बच्चों से बराबरी नहीं कर पाते। मोटे बच्चों के साथ भी ऐसा ही होता है। बाकी बच्चों से इस प्रकार भिन्न होना उनमें हीन भावना का विकास करता है।
3. **नाम और उपनाम**—उपनाम मजाक में शुरू होते हैं। परंतु कभी-कभी वे पक जाते हैं और बच्चे इसमें अपनी बेइज्जती महसूस करते हैं। यदि उपनाम शारीरिक व व्यक्तित्व से संबंधित है तो वह हीन-भावना उत्पन्न करता है।
4. **विद्यालय का वातावरण**—अधिकतर शिक्षक बच्चों के साथ अच्छी समझ बना लेते हैं। फिर भी, कुछ शिक्षक ऐसे अनुशासन का प्रयोग करते हैं जिसे बच्चे अनुचित समझते हैं। इससे बच्चों में शिक्षक के प्रति और अपने प्रति भी अनादर की भावना का विकास होता है।





5. **सामाजिक स्वीकृति**—मित्र मंडली द्वारा स्वीकार होने या न होने से बच्चे का व्यक्तित्व प्रभावित होता है और इसका प्रभाव स्वयं-अवधारणा पर भी पड़ता है। बच्चे जो सबसे अधिक लोकप्रिय हैं या जो सबसे कम लोकप्रिय हैं, इस द्वारा प्रभावित होने हैं बजाय कि उनके जो दोनों की बीच आते हैं।
6. **सफलता या असफलता**—बच्चों से उनकी उम्र के हिसाब कुछ कार्य करने की अपेक्षा की जाती है। ये कार्य उनकी उम्र के अधिकतर बच्चे कर लेते हैं। परन्तु कुछ कारकों से कुछ बच्चे ऐसा नहीं कर पाते। सफलता आत्मविश्वास व स्वयं स्वीकारिता का भावना विकसित करती है। असफलता अपर्याप्ता की भावना विकसित करती है। जब सफलता की दर अधिक होती है, इसका स्वयं अवधारणा पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। लगातार असफलता का बच्चे के व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
7. **लिंग**—हमारे देश में लड़कियां जल्दी ही हीन भावना से ग्रस्त हो जाती हैं क्योंकि उन्हें कुछ ऐसी ही भूमिकाएं निभाने के लिए मजबूर किया जाता है। इससे स्व-मूल्यांकन में कमी आती है। समाज भी इसमें अपना योगदान देता है। इसलिए शिक्षकों को प्रयास करना चाहिए कि बच्चों को यह समझाएं कि लड़कों या लड़कियों में कोई भेद नहीं है और वे समान हैं।
8. **बुद्धि**—यदि बच्चों की बुद्धि सामान्य से कम है तो उनके व्यक्तित्व पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बहुत जल्दी बच्चे यह महसूस कर लेते हैं कि वे सामान्य से कम हैं और हीन-भावना का विकास आरंभ हो जाता है। इसी कारण वे शर्म महसूस करते हैं और अकेले रहना शुरू कर देते हैं। ऐसा भी संभव है कि वे आक्रामक बन जाएं।
9. **दूसरे कारक**—परिवार के सदस्यों, क्रमिक स्थिति, बच्चे के प्रशिक्षण की विधियां, जातीय समूह, गतिशीलता, पर्यावरण आदि, सब अवधारणाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कक्षा में शिक्षक को इन सभी कारकों की भूमिका के बारे में पता होना चाहिए और वे देखें कि बच्चों में अच्छे स्वयं-अवधारणाओं के विकास में किस प्रकार सहायता कर सकते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए उसे शिक्षार्थियों को अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करना होगा जैसे हाथ धोना, सफाई रखना, कंघी करना, दांत साफ करना (दिन में दो बार) आदि। वे बच्चों की खाने की आदतों को भी देखें और बच्चों को जंक फूड खाने से रोकें। वे बच्चों के उपनाम रखने की प्रथा को रोकें, बच्चों में एकता और आपसी समझ विकसित करवाएं। जब बच्चे परीक्षा में फेल हो जाएं तो शिक्षक को व्यक्तिगत रूचि लेकर कारण पता लगाना चाहिए। अधिकतर असफलता का कारण घर में समन्वय के कमी होती है जिससे अधिगम सही नहीं हो पाता। यदि शिक्षक स्नेही, समझदार और प्यार करने वाला हो तो आधा काम उसे ही बन जाता है। बाकी आधे के लिए उसे कुछ प्रयास करने होंगे। अपने प्रयासों में उसे लिंग संतुलन बनाना होगा, लिंग भेदभाव रोकना होगा, सामान्य और उससे कम बुद्धि वाले बच्चों के सामने उच्च बुद्धि वाले बच्चे की अधिक प्रशंसा न करें। जब कभी बच्चों के साथ समान व्यवहार किया जाता है तो सामान्य और उसके कम बुद्धि वाले बच्चे जल्दी ही उच्च उपलब्धि स्तर प्राप्त करते हैं। यदि उनके साथ भेदभाव किया





टिप्पणी

जाता है और उनकी असफलता सब बच्चों के सामने दर्शाई जाती है तो उनमें आत्म सम्मान की कमी आती है और यह ठीक नहीं है।

### प्रगति जाँच-1

1. स्वयं अवधारणा कैसे बनती है? समझाएं।  
.....  
.....  
.....
2. स्वयं अवधारणा को प्रभावित करने वाले कारक कौन-कौन से हैं? एक शिक्षक बच्चों में स्वयं अवधारणा के विकास में सुधार किस प्रकार करवा सकता है?  
.....  
.....  
.....

## 5.3 बच्चों में मूल्यों का विकास

एक जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक नीत्शे ने 1880 में पहली बार 'वैल्यूज' यानि 'मूल्य' शब्द का प्रयोग किया जिसका तात्पर्य था नैतिक मान्यताएं और अभिवृत्तियां जो व्यक्तिगत व व्यक्तिपरक हैं। प्रत्येक समाज में कुछ अच्छी तरह परिभाषित और व्यक्त मूल्य होते हैं जो समाज के सदस्यों तक पहुंचाए जाते हैं। मूल्य वे हैं जो लोग जीवन में महत्वपूर्ण समझते हैं, जो अच्छे हैं या सार्थक हैं। वे अधिकतर जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा अर्जित किए जाते हैं। मूल्य व्यवस्था हर समाज में भिन्न होती है। ये मूल्य 'करो', 'न करो', या 'सही', 'गलत' आदि से बने होते हैं। मूल्यों की कई श्रेणियां होती हैं। ये हैं :

- व्यक्तिगत मूल्य
- सामाजिक मूल्य
- नैतिक मूल्य
- आध्यात्मिक मूल्य
- सांस्कृतिक मूल्य
- सार्वभौमिक मूल्य

बच्चे जब पैदा होते हैं तो न वे नैतिक होते हैं और न ही अनैतिक। दूसरे शब्दों में उनके कोई



नैतिक मानक नहीं होते। धीरे-धीरे, जैसे वे बड़े होते हैं, वे अपने माता-पिता से और बाद में अध्यापकों व मित्रों से व समाज से उनकी उम्मीदों के अनुसार आचरण संहिता सीख जाते हैं। नैतिक विकास की नींव शिशुकाल में रखी जाती है और धीरे-धीरे जैसे बच्चे बड़े होते हैं, यह विकसित होकर उनके व्यवहार को प्रभावित करती है। बच्चों से किन्हीं मानकों के अनुसार व्यवहार की उम्मीद कोई नहीं रखता। परन्तु एक गंभीर समस्या यहां यह है कि बच्चे बहुत जल्दी सीख लेते हैं कि जब वे कोई कार्य दूसरों को गुस्सा दिलाने का करते हैं तो उन्हें अधिक ध्यान मिलता है।

शिशुकाल में नैतिक विकास निम्न स्तर का होता है। यह इसलिए कि छोटे बच्चों में इतना बौद्धिक विकास नहीं होता कि वे सही, गलत के अमूर्त सिद्धांतों को समझ पाएं। वे धीरे-धीरे विशेष परिस्थितियों से वह सीखने लगते हैं जो वे वृद्धि के दौरान अनुभव करते हैं। जब हम बच्चों को कहते हैं कि 'यह करो' या 'यह न करो' तो उनका व्यवहार 'सही', 'गलत' के अनुसार न होकर उनकी उस समय की जरूरत पर निर्भर करता है। बच्चे 'गलत' को तब समझते जब वे बार-बार गलत करने पर दंड भोगते हैं। बच्चे सामाजिक अपेक्षाओं को इस उम्मीद में मानते हैं कि अच्छा काम करने पर उन्हें इनाम मिलेगा। इसलिए इनाम व दंड दो कारक हैं जिनके प्रभाव से बच्चे नैतिक मूल्यों को समझने लगते हैं।

कभी-कभी लोगों के एक ही व्यवहार के लिए भिन्न नियम होते हैं। उदाहरण के लिए जब भाई बहन को मारता है तो मां उसे दंड दे सकती है कि यह व्यवहार गलत है। परन्तु इसी व्यवहार पर पिता हंस देता है जो बच्चे को यह महसूस करवाता है कि उसका व्यवहार हास्यपद था। अब बच्चा उलझन में पड़ जाता है। धीरे-धीरे वह अपनी बहन को पिता के सामने धमकाने लगता है और मां के सामने चुप रहता है।

7 से 12 वर्ष की उम्र में माता-पिता से सीखी सही और गलत की कठोर धारणा संशोधित हो जाती है और बच्चे नैतिक उल्लंघन के दौरान विशेष परिस्थितियों को देखते हैं कि ऐसा किन हालातों में हुआ। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, एक बदलाव आता है। बच्चे उन मानकों द्वारा प्रभावित होते हैं जिनके कारण बड़ों की पहचान बनती है। वे इन 'गिरोह मानकों' को मानते रहते हैं जब तक किशोरावस्था को लांघ न लें।

इसके बाद वे अपने मानकों को व्यस्क व्यक्तियों के मानकों के समान ले आते हैं।

### 5.3.1 मूल्यों के विकास में अनुशासन की भूमिका

अनुशासन की भूमिका बच्चों को उनकी उम्र के लिए बनाई गई अपेक्षाओं के अनुकूल व्यवहार करना सिखाना है। अपने शिशुकाल के दौरान बच्चे घर व पड़ोस में विशेष परिस्थितियों में सही विशिष्ट प्रतिक्रियाएं करने लगते हैं। जब सख्त अनुशासन अपाया जाता है जिसमें हर गलत काम पर दंड मिलता है तो छोटे बच्चों को भी व्यवहार के विशेष पैटर्न में जबरदस्ती ढाला जा सकता है। गलत व्यवहार के लिए दंड और उपयुक्त व्यवहार के लिए स्नेह और अनुमोदन का इनाम शिशुकाल में मूल्यों और नैतिक मानकों की शिक्षा की शुरुआत है।

अनुशासित करना समाज का तरीका है जिसके द्वारा बच्चों को समाज द्वारा स्वीकृत नैतिक





## टिप्पणी

व्यवहार सिखाया जाता है। इसका लक्ष्य बच्चों को बताना है कि क्या सही है और क्या अस्वीकृत है और उन्हें इन्हीं मानकों के अनुसार व्यवहार करने के लिए प्रेरित करना। बचपन में यह जोर देना चाहिए कि बच्चों को केवल उन गलत कार्यों के लिए दंडित किया जाय जो जानबूझ कर किए गए हों, जिनके बारे में उन्हें पता हो कि क्या करना चाहिए फिर भी वे गलत कर रहे हों। बच्चों को समाज द्वारा स्वीकृत ढंग से व्यवहार सीखने के लिए प्रेरणा हेतु इनाम का प्रयोग किया जाता है। इनाम प्रेरणा को मजबूती देते हैं। इसके लिए तीन प्रकार के अनुशासन प्रयोग किए जाते हैं। वे इस प्रकार हैं :

**सत्तावादी अनुशासन**—एक कहावत है—छड़ी का प्रयोग न करो तो बच्चे को बिगाड़ हो। इसमें माता-पिता, अभिभावक, शिक्षक आदि नियम बनाते हैं और बच्चों को बताते हैं कि इन्हें मानना है। यह बताने का प्रयास नहीं किया जाता कि ये नियम क्यों बनाए गए हैं और बच्चों ने उन्हें क्या मानना है। यदि बच्चे उन नियमों को मानने में असफल होते हैं तो उन्हें दंड दिया जाता है।

**अनुमोदक अनुशासन**—यह सत्तावादी अनुशासन के खिलाफ उन व्यक्तियों का विद्रोह है जिन्हें बचपन में इसे सहना पड़ा। यहां मानना यह है कि बच्चे अपने व्यवहार के परिणामों से स्वयं सीख जाएंगे किस तरह सामाजिक रूप से मंजूर व्यवहार किया जाए। परिणाम स्वरूप बच्चों को नियम नहीं सिखाए गए। वे जानबूझ कर नियम तोड़ने पर भी दंडित नहीं किए गए न ही उन्हें सामाजिक रूप से मंजूर व्यवहार करने पर इनाम दिया गया।

**लोकतांत्रिक अनुशासन**—ये मुख्यतः इस बात पर बल देते हैं कि बच्चे का यह जानने का अधिकार है कि नियम क्यों बनाए गए और उन्हें अपने विचार प्रकट करने का मौका दिया जाए। बच्चे नियम समझते हैं और उन्हें मानते हैं। यह दंड को गुनाह के अनुसार दिया जाता है यह मानकर कि दंड और गलत व्यवहार संबंधित हैं। इसी प्रकार तारीफ और सामाजिक मान्यता इनाम के रूप में दी जाती है। वैज्ञानिक रूप से यह साबित हुआ है कि तीन तरह के अनुशासनों का बच्चों पर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। बच्चों के व्यवहार, अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व में ये परिवर्तन दिखाई दिए हैं।

### प्रगति जाँच-2

1. मूल्यों के विभिन्न प्रकारों का स्पष्टीकरण करें।

.....

.....

.....

2. मूल्यों के विकास में अनुशासन की भूमिका स्पष्ट करें।

.....

.....

.....



## 5.4 बच्चों में अभिवृत्तियों का विकास

### 5.4.1 अभिवृत्ति का अर्थ

अभिवृत्तियां हम सबके जीवन में महत्वपूर्ण अंतर लाती हैं। हमारी सफलता और असफलता हमारे कार्य व क्षमताओं के प्रति हमारी अभिवृत्तियों पर निर्भर करती है। अभिवृत्तियां व्यक्ति की कुछ चुने हुए लोगों, समूहों या संस्थाओं के समायोजन को प्रदर्शित करती हैं। पर्यावरण के किसी पहलू की ओर अभिवृत्ति विकसित करते हुए व्यक्ति प्रतिक्रिया करने में तत्परता दिखाता है। इस प्रकार अभिवृत्ति विशेष परिस्थितियों में एक विशेष तरीके से प्रतिक्रिया करने के लिए तैयारी या तत्परता की अवस्था है। फ्रीमैन से इसे इस प्रकार परिभाषित किया है—“विशेष परिस्थितियों, व्यक्तियों, वस्तुओं या विचारों से सुसंगत तरीके से प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्त तत्परता जो सीखी गई है और व्यक्ति के सामान्य व्यवहार का हिस्सा बन गई है।” अभिवृत्तियों का अवलोकन नहीं किया जा सकता, उनका प्रकट व्यवहार द्वारा अनुमान लगाया जा सकता है।

### 5.4.2 अभिवृत्ति के घटक

अभिवृत्ति के घटक व्यवहार में झलकते हैं। व्यवहार के तीन अवयव हैं, यानि की संज्ञानात्मक अवयव या जो ज्ञान व मान्यताओं से बना है।

1. हमारे अभिवृत्ति ज्ञान पर निर्भर करती है जो तार्किक व तर्कसंगत है।
2. अभिवृत्ति का दूसरा अवयव भावनाएं है। अभिवृत्तियां हमेशा भावनाओं और संवेदनाओं से जागृत होती हैं। भावनाएं जैसे कुछ लोगों को पसंद करना और कुछ को नापसंद करना हमारी संवेदनाओं पर आधारित होती हैं। संवेदनाएं जो इकट्ठी व एकीकृत हो जाती है उन्हें सकारात्मक कहते हैं और जो विभारित और बिखर जाती हैं, उन्हें नकारात्मक कहते हैं। ज्ञान और संवेदनाएं एक व्यक्ति को कार्य करने के लिए उकसाती हैं।
3. अभिवृत्ति का तीसरा अवयव है व्यवहार। यह दूसरों की भावनाओं का अर्थ और दूसरों को समझने में मदद करता है।

### 5.4.3 बच्चों में अभिवृत्तियों का विकास

बच्चों की अभिवृत्तियां पहले घर, फिर स्कूल व मित्र मंडली में विकसित होती हैं। समाज से प्रक्रिया करते समय हुए व्यक्तिगत अनुभव भी अभिवृत्ति के विकास में सहायता करते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, उनमें उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति व सूचना की उपलब्धि (किसी व्यक्ति या परिस्थिति के बारे में ज्ञान) के आधार पर अनुकूल या प्रतिकूल अभिवृत्तियां बनती हैं। कम ज्ञान पर आधारित अभिवृत्तियां उस विषय पर अधिक ज्ञान मिलती पर परिवर्तित हो जाती हैं। ये सब समूहों की संख्या से जुड़ी हैं। बच्चे भी समूहों से जुड़े हैं जैसे परिवार समूह, मित्र समूह, धार्मिक, जातीय, सांस्कृतिक एक वर्ग समूह। प्राथमिक समूह जैसे परिवार, मित्र व





टिप्पणी

विद्यालय में सहपाठी आदि में अभिवृत्तियों के विकास को प्रभावित करने की क्षमता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्राथमिक समूह सदस्यों को सूचना के स्रोतों से अवगत करवाते हैं, उन पर समूह के नियमों का पालन करने के लिए अधिक दबाव डालते हैं। इसी कारण सदस्यों में वस्तुओं व लोगों के प्रति एक जैसी अभिवृत्तियां विकसित होती हैं। एक बार ये अभिवृत्तियां बन जाएं तो वे स्थाई होती हैं और परिवर्तन का विरोध करती हैं।

#### 5.4.4 बच्चों में अच्छी अभिवृत्तियों के विकास में शिक्षक की भूमिका

शिक्षकों द्वारा प्रयोग किए गई प्रभावी अभिवृत्तियां व कार्य अंत में बच्चों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाती हैं। पहले के शैक्षिक अनुभवों का परीक्षण करके शिक्षक इस बात पर चर्चा कर सकते हैं कि शिक्षार्थियों की एक कक्षा में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। पांच अधिकतर चर्चित अभिवृत्तियां व कार्य हैं : शिक्षक द्वारा वास्तविक देखभाल एवं दया, कक्षा की जिम्मेदारी में हिस्सा लेने की इच्छा, बच्चों में भिन्नता के प्रति गंभीर संवेदनशीलता, सभी बच्चों को अर्थपूर्ण अधिगम अनुभव प्रदान करने की प्रेरणा, और बच्चों की सृजनात्मकता को उत्तेजित करने का उत्साह। शिक्षक तैयार करने की जिम्मेदारी उच्च शैक्षिक संस्थानों में चल रहे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मानी जाती है। फिर भी, जब तक स्नातकपूर्व शिक्षार्थी शिक्षण कार्यक्रम में नाम लिखवाते हैं, उन्हें पहले ही कई शिक्षकों का अनुभव प्राप्त हो जाता है या उन्हें झेल चुके होते हैं। क्योंकि इन शिक्षार्थियों ने शैक्षिक अवसरों की यह दौलत अर्जित कर ली होती है, वे अपनी पहली कक्षाओं में प्रभावी शिक्षकों की अभिवृत्तियां व कार्य पहचानते हैं और एक विश्वसनीय संसाधन के रूप में काम आ सकते हैं। शिक्षकों के पास अपने शिक्षार्थियों के जीवन पर अमिट छाप छोड़ने का अवसर होता है। विद्यालय अनुभव बच्चों के अपने बारे में विचारों को (स्कूल के अंदर व बाहर) ढाल सकते हैं, आकार दे सकते हैं व प्रभावित कर सकते हैं। स्कूल की इन स्मृतियों में बच्चों के मस्तिष्क में जीवन पर्यन्त प्रभाव डालने की क्षमता है जो उनके वर्तमान व भविष्य के फैसलों को प्रभावित कर सकता है। बच्चों को यह महसूस करने में देर नहीं लगती कि किस प्रकार शिक्षक 'एक लंबे और बोर करने वाले वर्ष' और 'एक रोमांचक व चुनौतीपूर्ण वर्ष' बनाने के लिए जिम्मेवार है।

#### 5.4.5 पांच प्रभावी शिक्षक अभिवृत्तियां

**पहली अभिवृत्ति :** देखभाल एवं दया का प्रदर्शन

यह शिक्षकों के व्यक्तित्व से संबंधित है। एक अच्छा शिक्षक संवेदनाओं और भावनाओं को बांट सकता है जैसे उत्साह, स्नेह, धैर्य, निराशा और अस्वीकृति आदि। उसके अलावा, वह बच्चों की वास्तविक रुचियां भी बांटने में इच्छुक होनी चाहिए। उसे बच्चों को देखभाल करनी चाहिए। शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य स्पष्ट संप्रेषण होना चाहिए।

**दूसरी अभिवृत्ति :** जिम्मेदारी बांटना

शिक्षक को कठोर नहीं होना चाहिए। जैसे शिक्षक जिम्मेदारी के लिए अच्छे अवसर प्रदान करता





है, उसे बराबर स्वतंत्रता के अवसर भी प्रदान करने चाहिए। शिक्षक को पूर्णतः नियमानुसार नहीं चलना चाहिए। लचीलापन और जिम्मेदारी की बांट शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के लिए एक सकारात्मक वातावरण में उन्हें घनिष्ठ संबंध बना कर कार्य करना चाहिए।

**तीसरी अभिवृत्ति :** संवेदनशीलता से भिन्नता को स्वीकारना

शिक्षक को सहानुभूति और छात्रों को समझने के महत्व का अभ्यास करना चाहिए। विभिन्न समुदायों, पृष्ठभूमियों से आए बच्चों से व्यवहार करते समय उसे संवेदनशीलता, स्वीकृति व प्रोत्साहन को गंभीरता से लेना चाहिए। उसे फँसले करने, बच्चों का विश्लेषण करने आदि से बचना चाहिए और बच्चों को जैसे वे हैं, वैसे ही समझना चाहिए। उसे बच्चों में सर्वोत्तम गुणों को निखारना चाहिए और सबके साथ व्यक्तित्व रूप से बच्चों की तारीफ करनी चाहिए। शिक्षक प्रत्येक बच्चे के साथ बिताए समय का जिसमें उसने उनसे बात की है, उन्हें सुना है और उन्हें महत्वपूर्ण व मूल्यवान महसूस करवाया है, का रिकार्ड रखना चाहिए।

**चौथी अभिवृत्ति :** व्यक्तिगत निर्देश को बढ़ावा देना।

शिक्षक को हर बच्चे को अवसर प्रदान करने चाहिए जो उसके लिए अर्थपूर्ण हों। उन्हें अपना समय याद करना चाहिए जब वे शिक्षार्थी थे और उन्हें अधिगम में सफलता के लिए किसने मदद की, उनके शिक्षकों ने क्या विधियाँ अपनाई थीं, उन अच्छे परिणामों को सराहना और अब उनका प्रयोग करना। उन्हें उन शिक्षकों को भी याद करना चाहिए जिन्होंने उन्हें भाग नहीं लेने दिया और ऐसी अभिवृत्तियों का अभ्यास करने से दूर रखा। शिक्षक के लिए यह भी जरूरी है कि वह बच्चों की योग्यताओं पर कार्य करें और उनकी कमजोरियों को नजरअंदाज करें। मुख्याध्यापक दूसरे अध्यापकों को सकारात्मक आत्मविश्वास और आत्मसम्मान में बढ़ावा करने के लिए प्रेरित करें।

**पांचवी अभिवृत्ति :** सृजनात्मकता को प्रोत्साहन

यह अभिवृत्ति बच्चों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के महत्व पर बल देती है। शिक्षक को पाठ व क्रियाकलापों संबंधी विचार व सुझावों को सुनना चाहिए। प्रभावी शिक्षक बच्चों के कल्पनात्मक होने की सराहना करते हैं और अधिगम के लिए कई उपागमों का प्रयोग करते हैं। जब शिक्षक बच्चों की रुचियों, कौशल, और आवश्यकताओं के अनुसार पाठ को डिजाइन करते हैं तो बच्चे प्रशंसा पाते हैं और व्यक्तिगत रूप से प्रेरित होते हैं। अधिगम को नुकसान पहुंचाने वाले कारक हैं ग्रेड पर बहुत अधिक बल और प्रश्नों के एक ही सही उत्तर के लिए अत्याधिक जोर। फलस्वरूप बच्चे सही उत्तर पाने तक ही चिंतित होते हैं और पता लगा लेते हैं कि शिक्षक क्या सुनना चाहता है। सृजनात्मकता के सीमित अवसर मिलने पर बच्चे अधिगम प्रक्रिया में रुचि खो देते हैं। प्रतिस्पर्धा ऐसे मानसिक बोझ उत्पन्न करती है कि वह अधिगम में रुकावट डालती है क्योंकि बच्चे केवल ग्रेड पाने व शिक्षक को खुश करने के लिए ही कार्य करते हैं। कुछ शिक्षक बाहरी प्रेरणा या ईनाम आदि का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार बच्चों की सीखने की इच्छा कम हो जाती है और उपलब्धि स्तर भी गिर जाता है। कई शिक्षकों ने महसूस किया है कि मनोरंजक कक्षा का वातावरण बच्चों में आंतरिक प्रेरणा जगाने के लिए अधिक प्रभावी है।





टिप्पणी

कई अध्ययन वर्णित करते हैं कि शिक्षण एक अत्यंत मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है और मानते हैं कि प्रभावी कक्षा का वातावरण बनाए रखने, बच्चों को प्रेरित करने, और फैसले लेने की शिक्षक की क्षमता उसके व्यक्तिगत गुण और बच्चों से व्यक्तिगत संबंध बनाने पर निर्भर करती है। इसलिए शिक्षक की प्रभावी अभिवृत्तियां और कार्य बच्चों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। यह भी माना जाता है कि अभिवृत्तियों का शिक्षक के व्यवहार और कार्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अभिवृत्तियां और मान्यताएं गुणों के एक समूह का सब-सेट हैं जो मानसिक अवस्थाओं (जिन्हें माना जाता है कि व्यक्ति के कार्यों को नियंत्रित करती हैं) का नाम, परिभाषा और संचरना तथा सामग्री का वर्णन करते हैं। प्रभावी अभिवृत्तियों द्वारा शिक्षार्थी और शिक्षक आपसी सम्मान व विश्वास का संबंध विकसित करते हैं।

## 5.5 अनुभूति का महत्त्व व बच्चों में इसका विकास

अनुभूति शब्द का अर्थ है ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा अपने वातावरण को जानने की प्रक्रिया। उद्दीपन वातावरण में उपस्थित हमारे आस-पास की वस्तुओं से आता है पर ये वस्तुएं नहीं हैं। उद्दीपन और वस्तुएं एकदम अलग हैं। उदाहरण के लिए जब आप घाटी में एक नदी देखते हैं तो नदी आपकी आंखों में नहीं आती बल्कि नदी की सतह से प्रकाश परावर्तित होकर आंखों तक पहुंचता है। जब प्रकाश झिलमिलाता है तो हमें पानी की सतह हवा से हिलती नजर आती है। आपको एक धीमी गुंजन सुनाई देती है जो धीरे-धीरे तीव्र होती जाती है, आपको पता लग जाता है कि एक हवाई-जहाज आ रहा है। यहां हवाई जहाज की आवाज या नदी से परावर्तित प्रकाश सब हमारी ज्ञानेन्द्रियां इन उद्दीपनों को ग्रहण करती हैं तो हमें इन वस्तुओं की अनुभूति होती है। यह हमारी आसपास की दुनिया की अनुभूति है तो हमें विभिन्न तरीकों से व्यवहार करवाती है। इस प्रकार अनुभूति एक मूल कारक है जो बच्चों व व्यस्कों के व्यवहार का तरीका निर्धारित करती है।

### 5.5.1 बच्चे में अनुभूति का विकास

अनुभूति की क्षमता के बिना एक विकास कर रहे बच्चे यह जानना मुश्किल हो जाएगा कि वह कौन है और इस दुनिया में कैसे फिट हो रहा है। अनुभूति के विकास से संबंधित एक क्रांतिक काल का उदाहरण है तीन वर्ष की उम्र में भ्रंशापन। यह जाना जाता है कि यदि भ्रंशापन तीन वर्ष तक ठीक हो जाए तो द्विनेत्री दृष्टि विकसित हो जाती है। परंतु तीन वर्ष के बाद द्विनेत्री दृष्टि कभी विकसित नहीं होती।

### 5.5.2 विकसित हो रहे बच्चे में अनुभूति का महत्त्व

बाल-विकास से संबंधित कारकों की एक विस्तृत श्रृंखला में अनुभूति को बेहद महत्वपूर्ण कहा गया है। इसके अलावा, समय और स्थान में हम कहां है, यह जानने की क्षमता बच्चों के लिए अनिवार्य है ताकि वे आगे बढ़ सकें। बाल विकास में अनुभूति के महत्वपूर्ण होने के अन्य कारण इस प्रकार हैं :



- समाजीकरण
- ज्ञान अर्जन
- भाषा अर्जन
- भावनात्मक प्रतिक्रिया
- स्मृति
- आत्म संरक्षण
- हाथों व आंखों का समन्वय
- आत्म जागरूकता का आभास

### 5.5.3 ज्ञान, स्मृति एवं अनुभूति

अनुभूति विकास के बिना न तो बच्चा नया ज्ञान प्राप्त कर पाता है और न ही जो सीखा है उसे याद कर पाता है। इसका कारण है कि बच्चे को ज्ञान का भंडारण करने के लिए अनुभूति की आवश्यकता होती है। इसलिए बच्चे के विकास के मीलपत्थर पार करने व शिक्षा के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए अनुभूति विकास आवश्यक है। मित्रता के लिए दूसरे व्यक्ति से प्रतिक्रिया करने की क्षमता की जरूरत होती है और संबंधों की स्थापना करने व बनाए रखने की कुंजी अनुभूति ही है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, अनुभूति विकास बच्चे के हाथों व आंखों के समन्वय के लिए अत्यंत आवश्यक है। सामाजीकरण और ज्ञान व भाषा अर्जन में भी यह महत्वपूर्ण है। बच्चे के विभिन्न परिस्थितियों और संवेदनाओं के प्रति व्यवहार अनुभूति द्वारा प्रभावित होते हैं और यह स्मृति व आत्म-जागरूकता के लिए आवश्यक है।

### 5.5.4 अनुभूति विकास में खेल-कूद का महत्त्व

बच्चों में अनुभूति के विकास में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है—खेलने की गुंजाइश। खेलकूद के पार-सांस्कृतिक अध्ययनों न पाया है कि खेल-कूद बच्चे के अधिगम व विकास को बढ़ावा देते हैं। खेल-कूद के महत्त्व के प्रति माता-पिता की अनुभूति उनके सामाजिक सांस्कृतिक नियमों द्वारा निर्धारित होती है, जैसे खेल-कूद को बढ़ावा मिलेगा या उनकी उपेक्षा की जाएगी। हैरानी के बात यह है कि खेल-कूद को सक्रिय रूप से हतोत्साहित किया जा सकता है और माता-पिता इसकी अनुमति नहीं देते। स्वभाविक रूप से अधिकतर बच्चों को खेलने में मजा आता है। खेल को बच्चे की पूर्व-प्रारंभिक शिक्षा से जोड़ना बच्चों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

खेल के विषय में विकासात्मक सिद्धान्त और अनुसंधान का एक लंबा इतिहास है। मनोविश्लेषण सिद्धांतकार खेल को बच्चों की भावात्मक समस्याएं सुलझाने में प्रयोग करते हैं। जीन पिआजे





## टिप्पणी

ने खेल और बुद्धि की वृद्धि में संबंध स्थापित किया। उसके अनुसार खेल अधिगम के वाहन के रूप में काम करता है। लेव वाइगोस्की (एक मनोवैज्ञानिक) के अनुसार खेल बच्चों के विकास और अधिगम के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। वह मानता है कि खेल के दौरान विकास होता है क्योंकि खेल एक समीपस्थ विकास का क्षेत्र बनाता है। वाइकोस्की के सिद्धांत के अनुसार, एक अधिक उन्नत साथी के साथ (व्यस्क माता-पिता हो सकते हैं) खेलने से बच्चे में कौशलों के विकास तथा आत्मविश्वास बढ़ता है। वाइगोस्की के लिए, खेल भाषा-विकास, स्मृति, तार्किक चिंतन, उच्च स्तर की सोच व सामाजिक कौशलों के विकास के लिए लाभप्रद है।

बाल विकास के लिए खेल का महत्व अंतहीन और विशाल है। हम जानते हैं कि बच्चों का मस्तिष्क विकास बाल विकास के सभी क्षेत्रों के साथ जुड़ा हुआ है। शुरुआती वर्षों में मस्तिष्क विकास और खेल में एक महत्वपूर्ण कड़ी पाई गई है जो यह सुझाता है कि अच्छी किस्म के खेल मस्तिष्क में न्यूरोन कनेक्शनों को तेजी से बढ़ाते हैं। जिन्सबर्ग और संचार पर कमेटी, और बाल और परिवार स्वास्थ्य के मनोवैज्ञानिक पहलू पर कमेटी ने पाया है कि बच्चे अपनी दुनिया को खेल द्वारा पुनः निर्मित व खोज सकते हैं। उनका तर्क है कि “खेल बच्चों में नई दक्षताएं विकसित करता है जो उनका आत्मविश्वास और लचीलापन बढ़ाता है जिससे वे भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।” उन्होंने यह भी कहा कि खेल द्वारा, विशेषकर अनिर्देशित खेल या मुक्त खेल, बच्चों को सामाजिकरण कौशल विकसित करने के मौके देते हैं (जैसे समूह कार्य, सांझा करना, बातचीत, टकराव का निपटारा, और आत्म-वकालत)। उनके अनुसार यदि खेल बच्चों द्वारा ही निर्धारित होते हैं तो बच्चों में जीवन-कौशल विकसित होते हैं जो उनके भविष्य के लिए जरूरी है (जैसे निर्णय लेना, अपनी गति का पता रखना, अपनी रूचि का क्षेत्र खोजना) यह पाया गया कि खेल और कई मूलभूत कौशलों और जटिल संज्ञानात्मक गतिविधियों के बीच संबंध है जो शुरू के बाल विकास व अधिगम के लिए उल्लेखनीय हैं। उन्होंने पाया कि ये कौशल बच्चों की नींव मजबूत करते हैं और बच्चों को स्कूल में और उसके बाद प्रभावी रूप से सीखने में मदद करता है। इसलिए खेल बाल-विकास और शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक है।

बाल विकास के लिए खेलकूद द्वारा माता-पिता की प्रतिक्रिया और बच्चों के साथ संबंध बनाना महत्वपूर्ण है। इसलिए यह सुझाव दिया जाता है कि सभी देश खेलकूद को अपनी ECD पॉलिसी (पूर्व बाल्यवस्था विकास की पॉलिसी) में शामिल करें। एक उपयुक्त पॉलिसी बनाने के लिए सांस्कृतिक रूप से सार्थक, शोध आधारित प्रमाणों की व जागरूकता विकसित करने वाले कार्यक्रम की आवश्यकता है।



### प्रगति जाँच-3

1. एक विकासशील बच्चे में अनुभूति का क्या महत्व है?

.....  
.....





2. समझाइए कि खेलकूद अनुभूति विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण है।

## 5.6 अभिप्रेरणा

बच्चे हर कार्य जो वे करते हैं, उससे सीखते हैं। वे स्वभाविक रूप से जिज्ञासु होते हैं, वे पता लगाना चाहते हैं, खोज करना चाहते हैं। यदि उनके अन्वेषण खुशी या सफलता लाते हैं, वे अधिक सीखना चाहेंगे। इन शुरुआती वर्षों में वे अधिगम के प्रति ऐसी अभिवृत्तियां बना लेते हैं जो जीवन पर्यन्त चलती हैं। जिन बच्चों को इन वर्षों में सही समर्थन और प्रोत्साहन मिल जाता है वे अपने जीवन में सृजनात्मक व साहसिक शिक्षार्थी बनते हैं। जिन बच्चों को इस प्रकार का समर्थन व प्रोत्साहन नहीं मिलता उनका अपने जीवन में बिलकुल अलग नजरिया विकसित होता है। कई कारक, बाहरी तथा आंतरिक बच्चों के विकास को प्रभावित करते हैं। इनमें से एक सबसे प्रभावी आंतरिक कारक है—बच्चे की अभिप्रेरणा। यह अभिप्रेरणा दो प्रकार की हो सकती है—आंतरिक या बाहरी। यह अधिकतर माना जाता है कि शैक्षिक परिस्थितियों में आंतरिक अभिप्रेरणा बेहतर है।

### 5.6.1 युवा बच्चों में अभिप्रेरणा की विशेषताएं

बच्चे बहुत से काम इसलिए करते हैं क्योंकि वे उन्हें करना चाहते हैं। एक खिलौने का या पहनने के लिए कमीज का चुनाव 'आंतरिक अभिप्रेरणा' का परिणाम है। बच्चा अपनी पसंद का चुनाव करता है और दोनों बातों का आनंद लेता है—चुनाव करने का और अपने खिलौने से खेलने या कमीज को पहनने का। क्योंकि इस क्रिया में अभिप्रेरणा जागृत होती है, यह अधिकतर लंबे समय तक चलती है क्योंकि बच्चा क्रिया को करते रहना चाहता है। बच्चे कुछ क्रियाकलापों में संलग्न होते हैं क्योंकि बड़े उन्हें करने को कहते हैं या किसी अन्य पार्टी को खुश करने के प्रयास में। ये क्रियाएं बाहरी अभिप्रेरणा से होती हैं। जब बच्चा बाहरी रूप से अभिप्रेरित होता है तो इनाम को भी बाहर से आना होता है, किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा, और लगातार देना होता है ताकि बच्चा क्रिया कलाप करने के लिए अभिप्रेरित होता रहे। बच्चे के लिए बाहरी अभिप्रेरणा बनाए रखना मुश्किल होता है क्योंकि इसके बाहर बल पर निर्भर रहना पड़ता है।

क्योंकि आंतरिक अभिप्रेरणा के क्रियाकलाप अधिक फायदेमंद होते हैं, बच्चे इस तरह के क्रियाकलापों से अधिक सीखते हैं और इस अधिगम को अधिक देर तक बनाए रखते हैं। आंतरिक रूप से अभिप्रेरित बच्चे अपने अधिगम व विकास में अधिक भाग लेते हैं। दूसरे शब्दों





टिप्पणी

में आंतरिक रूप से अभिप्रेरित बच्चे के अधिगम और सूचना बनाए रखने की संभावना अधिक है जब वह मानता है कि वह खुद को खुश कर रख रहा है। माता-पिता भी इस आत्मविश्वास की भावना को विसित करने के लिए बच्चे की खेल-कूद की क्रियाओं में मार्गदर्शन कर सकते हैं व उन्हें कई अन्य विकल्प भी दे सकते हैं। एक असंरचित खेल बच्चे की अभिप्रेरणा, अधिगम और विकास का अनिवार्य तत्व है।

### 5.6.2 अभिप्रेरणा विकसित करना

कई व्यावहारिक विशेषताएं उच्च प्रेरणा की संकेतक हैं। यहां कुछ महत्वपूर्ण कारक व कुछ तरीके इन विशेषताओं को विकसित करने में बच्चे की सहायता के लिए दिए गए हैं :

हठ एक कार्य के साथ काफी लंबी अवधि तक रहने की क्षमता है। जहां बहुत छोटे बच्चे एक क्रिया पर एक घंटे तक भी नहीं टिक सकते, वहीं युवा बच्चों के टिके रहने की समयावधि में काफी अंतर है। एक अत्याधिक अभिप्रेरित बच्चा काफी लंबे समय तक कार्य में लगा रहेगा वहीं एक प्रेरणा रहित बच्चा शीघ्र सफलता न मिलने पर जल्दी ही हार मान लेगा। बच्चे चुनौतीपूर्ण कार्य में सफलता मिलने से हठ सीखते हैं। हठ विकसित करने के लिए ऐसा चुनौतीपूर्ण कार्य देना चाहिए जो बहुत मुश्किल न हो।

चुनौती का चुनाव अभिप्रेरणा की दूसरी विशेषता है। जो बच्चे एक चुनौती का सामना करने में सफल हो जाते हैं, वे दूसरी चुनौती का स्वागत करते हैं। ये अभिप्रेरित शिक्षार्थी ऐसा कार्य चुनते हैं जो थोड़ा मुश्किल हो परंतु उपयुक्त चुनौती देता हो। जब वे ऐसा कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लेते हैं तो उन्हें उच्च स्तर का संतोष प्राप्त होता है। प्रेरणा रहित बच्चे (जिन्हें शीघ्र सफलता नहीं मिलती) कुछ आसान कार्य लेते हैं जिसमें एकदम सफलता मिल जाए। इस प्रकार की आसान सफलता से बच्चे निम्न स्तर का संतोष प्राप्त करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उनका कार्य बहुत कम चुनौती प्रदान करता है। शिक्षक के लिए बच्चों को उपयुक्त चुनौती वाला कार्य ढूंढने में सहायता करना और साथ ही मनपसंद कार्य चुनने की छूट देना अपने आप में एक चुनौती है।

व्यस्कों पर निर्भरता की मात्रा अभिप्रेरणा का एक और संकेत है। मजबूत आंतरिक प्रेरणा वाले बच्चों को हम समय व्यस्कों की मदद व देखरेख की आवश्यकता नहीं होती। जिन बच्चों में अभिप्रेरणा का स्तर निम्न होता है या जो बाहरी रूप से अभिप्रेरित होते हैं, उन्हें लगातार व्यस्कों के ध्यान की आवश्यकता होती है और वे स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर सकते। स्वतंत्रता गुणवत्ता शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, इसलिए व्यस्कों पर निर्भरता बच्चे की स्कूल में सफलता पाने की क्षमता को कम कर देती है। माता-पिता बच्चों में स्वतंत्र अभिप्रेरणा की संभावना उन्हें ऐसे खिलौने व क्रियाकलाप प्रदान करके बढ़ा सकते हैं जो उनकी स्वाभाविक सृजनात्मकता व जिज्ञासा के अनुकूल हों। अक्सर ये सबसे सरल, सबसे बुनियादी, खेलने की चीजें होती हैं जैसे ब्लॉक, प्लास्टिक के बने छोटे-छोटे लोग, खिलौना कार, क्रैआन और पेपर आदि। ये चीजें बच्चों को अपनी दुनिया खोजने के लिए प्रोत्साहित करती हैं न कि व्यस्कों को खुश करने के लिए उन पर निर्भर रहने में।





अभिप्रेरणा स्तर का आखिरी संकेत है—भावना। जो बच्चे स्पष्ट रूप से अभिप्रेरित होते हैं उनमें भावनाओं का सकारात्मक प्रदर्शन होता है। वे अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं और क्रियाकलाप में खुशी प्रकट करते हैं। बिना अभिप्रेरणा के बच्चे शांत, उदास व बोर होते नज़र आते हैं। वे अपने कार्य में आनंद का अनुभव नहीं करते और अक्सर शिकायत करते हैं। एक शिक्षक के नाते आप बच्चे के मूड के सर्वोत्तम जज हैं।

### 5.6.3 अभिप्रेरणा को बढ़ाना

युवा बच्चों को पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए लक्ष्य होना चाहिए—अभिप्रेरणा विकास को समर्थन देना ताकि इष्टतम शैक्षिक विकास के लिए एक उचित आधार बन जाए। शिक्षकों को बहुत सारे बाहरी इनामों का प्रयोग बहुत सावधानी से करना चाहिए क्योंकि ये बच्चे की अभिप्रेरणा विकास में गंभीर रूप से दखल दे सकते हैं। किसी उपलब्धि के लिए प्रशंसा उपयुक्त है परंतु यह सुनिश्चित कर लें कि बच्चा कार्य इसलिए कर रहा है क्योंकि उसे वह कार्य करने में रुचि है न कि इसलिए कि उसे लगता है ऐसा करने से आप उसकी तारीफ करेंगे। दिक्कतें तब उत्पन्न होती हैं जब बच्चे के वातावरण में व्यस्क व अन्य बाहरी मानकों को लागू करने व आंतरिक इनाम व्यवस्था की जगह बाहरी बल जो इनाम (कैडी, धन, अत्यधिक प्रशंसा) से विस्थापित कर देते हैं। बच्चे तभी सफलता महसूस करते हैं जब उन्हें उनकी उपलब्धियों के लिए कोई इनाम देता है। अपनी आंतरिक अभिप्रेरणा खो सकते हैं और तभी सफल होना महसूस करते हैं जब कोई उन्हें सफल घोषित करता है।

ऐसी परिस्थितियों में बच्चे स्वयं-मूल्य की भावना विकसित नहीं कर पाते और अपने मूल्य को दूसरों के मानकों के अनुसार जज करते हैं। आपके बच्चे को यह पूछने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए—“क्या मैंने ठीक किया?” उसे पता होना चाहिए और अपनी सफलता में आत्मविश्वास होना चाहिए।

कई रणनीतियां हैं जिन्हें शिक्षक प्रयोग करके बच्चों को अधिक आंतरिक रूप से अभिप्रेरित रख सकता है।

ऐसा वातावरण प्रदान करके (आयु उपयुक्त खिलौनों, क्रियाकलापों आदि) जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से खोज करने व अपने कार्यों का प्रभाव (खिलौने जिन्हें हिलाने पर टोस परिवर्तन दिखाता है) देखने की अनुमति देता है।

बच्चों को कार्य करते समय पर्याप्त समय देना व हठ की अनुमति देना। जब बच्चे किसी क्रियाकलाप में गंभीरता से काम कर रहे हों तो सुनिश्चित करें कि वे बिना किसी रुकावट के उसे समाप्त करें। मदद करने की स्वभाविक इच्छा को रोकें। बच्चों की आवश्यकता के प्रति एक सुसंगत, उम्मीद अनुसार तरीके से जवाब दें और उन्हें जितना हो सके उतना स्वतंत्र बनाएं। सब बच्चों को स्पष्ट रूप से परिभाषित सीमाओं की ज़रूरत है। खेलकूद के समय को व्यवस्थित व संरचित होने की आवश्यकता नहीं है। बच्चों और बड़ों को इकट्ठे खोज करने व प्रतिक्रिया करने के कई मौके प्रदान करें। बच्चों और बड़ों का एक क्रियाकलाप में इकट्ठे कार्य करना





## टिप्पणी

महत्वपूर्ण है। यह आपको अवलोकन करने, मॉडल (नकल) करने व प्रोत्साहित करने में सहायक है।

ऐसी परिस्थितियां प्रदान करें कि बच्चों को एक स्वीकृत चुनौती मिले। बच्चे के लिए थोड़ी मुश्किल क्रियाएं उन्हें अधिक अभिप्रेरित करेंगी और सफलता मिलने पर मजबूत सफलता की भावना प्रदान करेंगी। पहले यह कुछ परीक्षण और त्रुटि के अनुसार चलेगा। बच्चों को अपनी सफलता का मूल्यांकन करने के अवसर दें। यह कहने के बजाए कि मुझे लगता है तुमने अच्छा कार्य किया है। उनसे पूछें कि उन्हें क्या लगता है, उनका कार्य कैसा है? आप यह प्रश्न पूछते हुए 'आप क्या सोचते हो?' कभी गलत नहीं हो सकते।

अधिक इनामों का प्रयोग न करें। वे बच्चे की अपने मूल्य को पहचानने की क्षमता को कमजोर करते हैं। प्रशंसा और इनाम बच्चे के प्रयासों और हठ पर आधारित होने चाहिए न कि वास्तविक उपलब्धि पर।

बच्चों की नजर में दुनिया एक बहुत बढ़िया स्थान है। बच्चों को अपनी दुनिया पता लगाने दें, खोजने दें। हर कोने में युवा मस्तिष्क को हैरान व उत्तेजित करने वाले अनुभव इंतजार कर रहे हैं, उन्हें केवल आवश्यकता है थोड़े निर्देशन की और बहुत सारी स्वतंत्रता की। बच्चों को उनके अपने कार्यों के लिए प्रशंसा या इनाम देने की आवश्यकता नहीं है जब वे अपने वातावरण को स्वयं नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे कार्यों के परिणामस्वरूप मिली सफलता और सफल होने का आभास अपने आप में ही इनाम है। अत्याधिक प्रशंसा व इनाम अनावश्यक हैं और वास्तव में बच्चों की अभिप्रेरणा और सीखने के इच्छा के लिए नुकसानप्रद हो सकते हैं। याद रखें कि अभिवृत्तियां और आदतें (अधिगम के प्रति) जो शुरू के वर्षों में बन जाती हैं, भविष्य के अधिगम के लिए मूड सेट करती हैं।

### प्रगति जाँच-4

1. युवा बच्चों की क्या विशेषताएं हैं?

.....  
.....  
.....

2. बच्चों में अभिप्रेरणा कैसे बढ़ाएं

.....  
.....  
.....



## 5.7 सारांश

इस इकाई में हमने पढ़ा अवधारणा निर्माण क्या है, किस प्रकार विभिन्न अवधारणाओं की समझ से स्वयं-अवधारणा की समझ बनती है। हमने अवधारणाओं के बनने में सहायक कारकों और स्वयं-अवधारणा विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में सीखा।

शिक्षकों के रूप में यह बहुत जरूरी है कि स्वयं अवधारणा की वृद्धि को बढ़ाने के लिए स्वयं अवधारणा विकास की प्रक्रिया को समझा जाए। बच्चों में सही मनोवैज्ञानिक वृद्धि को बढ़ाने के लिए हमें मूल्यों, अनुभूतियों व अभिप्रेरणा के सही विकास को बढ़ावा देना होगा। यह सुनिश्चित करने के लिए हमें पता होना चाहिए कि ये सब क्या हैं और इन्हें कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है। शिक्षकों द्वारा अनुशासन के सही प्रयोग से बच्चों में उपयुक्त मूल्यों का विकास किया जा सकता है। नैतिक विकास की भांति बच्चों में अभिवृत्तियों का विकास भी पहले तब शुरू होता है जब शिशु दूसरी चीजें सीखने लगता है। अभिवृत्तियों का विकास घर में, घरेलु वातावरण में परिवार के सदस्यों व निकट मित्रों से प्रतिक्रिया के दौरान होता है। बाद में मित्र मंडली व समाज के सदस्यों से प्रतिक्रिया बच्चों की आवश्यकताओं व सूचना के स्रोतों की पूर्ति करते हुए अनुकूल व प्रतिकूल अभिवृत्तियों को प्रभावित करती है। शिक्षकों को स्वयं पर व बच्चों पर भरोसा करने का जोखिम उठाना होगा। उन्हें स्वतंत्र अधिगमकर्ता बनाने की आवश्यकता है ताकि अधिगम होने की अधिक संभावना हो। प्रभावी शिक्षक सामान्यतः अपने शिक्षार्थियों की देखभाल करते हैं, पसंद करते हैं, स्वीकारते हैं व उन्हें महत्व देते हैं। ऐसे शिक्षक दया का प्रदर्शन करते हैं, जिम्मेवारी में सांझा करते हैं, भिन्नताओं को स्वीकारते हैं, व्यक्तिगत निर्देशन को बढ़ावा देते हैं और सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं। इन पांच अभिवृत्तियों व कार्यों के ज्ञान से उनमें प्रभावी शिक्षक होने की क्षमता आएगी और वे पूर्व शिक्षार्थियों द्वारा प्यार से याद किए जाएंगे।

ज्ञान, स्मृति और खेलकूद विभिन्न अनुभूतियों के विकास में बहुत जरूरी हैं। जीन पिआजे और वाइगोस्की ने बुद्धि और अनुभूति के विकास में खेलकूद के महत्व के बारे में बहुत कुछ कहा है। शिक्षकों के लिए यह जानना जरूरी है कि बच्चे कक्षा में बेहतर समझते हैं अगर वे शिक्षण में खेल पर आधारित विधियों का प्रयोग करें। यदि शिक्षक अपना मन बना ले तो वह समझ सकता है कि खेल को कैसे प्रयोग करना है और वह विभिन्न विषयों और अवधारणों को कक्षा की परिस्थितियों में खेल द्वारा पढ़ा सकता है। शिक्षकों द्वारा माता-पिता को बच्चों को नियमित रूप से खेलने की अनुमति देने पर बल देना भी आवश्यक है ताकि वे सीख पाएं और उनकी अनुभूति में सुधार हो। अधिगम में खेलकूद ही नहीं, अधिगम के लिए अभिप्रेरणा भी बहुत महत्वपूर्ण है। यदि बच्चे कुछ करना चाहते हों तो पढ़ाना आसान हो जाता है। यदि बच्चों को कोई और कुछ करने को कहे और उन्हें वह कार्य करने में रुचि न हो तो सीखना व सीखने के लिए अभिप्रेरित करना मुश्किल हो जाता है। शिक्षकों को बहुत सारे बाहरी इनामों का प्रयोग करने में सावधान रहना चाहिए क्योंकि यह बच्चे की अभिप्रेरणा के विकास में बाधा डाल सकते हैं। सफलता या उपलब्धि के लिए प्रशंसा उपयुक्त है पर सुनिश्चित कर लें कि बच्चे ने रुचि लेकर कार्य किया है या शिक्षक से प्रशंसा पाने के लिए किया है।





टिप्पणी

## 5.8 प्रगति जाँच के उत्तर

1. कक्षा में एक सरल अभ्यास करो। कक्षा को एक जैसे छोटे समूहों में बांटें और उन्हें कुछ कार्य दो। अलग-अलग दिखावे की अभिवृत्तियां प्रयोग करके पता लगाएं किस समूह ने सर्वोत्तम कार्य किया है।
2. बच्चों को उनकी मूल्यों की समझ का इष्टतम स्तर पर प्रयोग करना सिखाएं और उनके द्वारा प्रयोग के स्तर का अवलोकन करें।
3. बच्चों के अभिवृत्तियों के स्तर को मापने के लिए विभिन्न मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग करें।

## 5.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- <http://www.usca.edu/essays/vol132005/gourneau.pdf>
- हरलॉक (1953) डेवेलपमेंटल साइकोलॉजी, ए लाइफ स्पैन एप्रोच, टाटा मेक ग्रा हिल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली, इंडिया
- डंडापानी, एस. (2010) ए टेक्स्ट बुक ऑफ एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी, अनमोल पब्लिकेशनस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, इंडिया
- पी. नटराज (1995) साइकोलॉजी, सरीनिवासा पब्लिकेशन, मैसूरु, कर्नाटका, इंडिया

## 5.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. बच्चों में स्वयं-अवधारणा के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में समझाएं। एक शिक्षक के रूप में उचित स्वयं-आवधारणा के विकास हेतु कक्षा में आप बच्चे का मार्गदर्शन कैसे करेंगे?
2. बच्चों में अच्छी अभिवृत्तियों के विकास के लिए मार्गदर्शन करने में एक शिक्षक की भूमिका क्या होगी?
3. बच्चों में अभिप्रेरणा को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक-कक्षा की परिस्थितियों में क्या रणनीतियां अपना सकता है?



---

## इकाई-6 बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करना

---

### संरचना

- 6.0 प्रस्तावना
- 6.1 अधिगम उद्देश्य
- 6.2 सृजनात्मकता की संकल्पना व प्रकृति
- 6.3 सृजनात्मकता सोच के चरण
  - 6.3.1 सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले कारक
- 6.4 पाठ्यक्रम व पाठ्येतर गतिविधियों द्वारा सृजनात्मकता विकसित करने की रणनीतियां
  - 6.4.1 विचार मंथन (माथा पच्ची)
  - 6.4.2 गुणों की सूची बनाना व परिवर्तित करना
  - 6.4.3 सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण सामग्री
  - 6.4.4 कुछ और विचार
  - 6.4.5 प्रश्न पूछना
  - 6.4.6 कुछ और क्रियाकलाप
- 6.5 सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए अधिगम सामग्री का विकास
- 6.6 सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में आईसीटी की भूमिका
- 6.7 सृजनात्मकता का मूल्यांकन
- 6.8 सारांश
- 6.9 प्रगति जाँच के उत्तर
- 6.10 इकाई अंत परीक्षण के उत्तर
- 6.11 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 6.12 अन्त्य इकाई अभ्यास

---

### 6.0 प्रस्तावना

---

पिछली इकाई में आपने स्वयं, इसका अर्थ और महत्त्व के बारे में पढ़ा। इस इकाई में आप जानेंगे-सृजनात्मकता, इसकी प्रकृति और बच्चों में यह कैसे विकसित की जा सकती है। यह 'स्वयं' का ही भाग है। आपने 'सृजनात्मकता' शब्द कई बार सुना और प्रयोग किया होगा।

सृजनात्मकता सभी बच्चों में पाई जाती है परंतु भिन्न रूपों में और भिन्न मात्रा में। देखा गया





टिप्पणी

है कि बच्चे स्वयं को विभिन्न तरीकों से व्यक्त करते हैं—नए उत्तर देते हैं, उपकरणों के असामान्य उपयोग बताते हैं आदि। इसलिए ऐसे बच्चों को पहचान कर उनमें सृजनात्मकता का विकास करना ताकि वे समाज की प्रगति में योगदान दे सकें, महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

किसी समाज का विकास उसके लोगों की सृजनात्मकता पर निर्भर करता है। अधिकतर आविष्कार व अन्वेषण लोगों की सृजनात्मकता के कारण ही उत्पन्न हुए। एक समाज द्वारा उसके बच्चों के सृजनात्मक विकास के लिए दी गई सुविधाएं उस समाज के इतिहास लोकाचार पर निर्भर करती हैं। वैज्ञानिकों, कवियों व अन्य लोगों की सृजनात्मकता सब अच्छी तरह से जानी जाती है। इस इकाई में आप सृजनात्मकता के बारे में व बच्चों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के बारे में और पढ़ेंगे।

## 6.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- सृजनात्मक लोगों की विशेषताएं पहचान सकेंगे।
- शिक्षार्थियों में भिन्न प्रकार की सृजनात्मकता पहचान सकेंगे।
- अधिक सृजनात्मक व्यक्ति और कम सृजनात्मक व्यक्ति में अंतर कर पाएंगे।
- दिए गए विचारों के समूह में से सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कर पाएंगे।
- सृजनात्मकता विकसित करने के लिए क्रियाकलापों की सूची बनाएंगे।
- बच्चों में सृजनात्मकता बढ़ाने हेतु कौशल विकसित कर सकेंगे।
- बच्चों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए क्रियाकलाप विकसित करेंगे।

## 6.2 सृजनात्मकता की संकल्पना और प्रकृति

आपने बच्चों को ज्ञान वस्तुओं या शब्दों के स्थान पर मजेदार शब्द, अजीब संरचनाओं और असामान्य विचारों का प्रयोग करते देखा होगा। याद करें एक बच्चे का पोटेटो और टोमेटो के संयुक्त शब्द 'पोमेटो' का प्रयोग करना। इस पर भी गौर करें:

दक्षिण भारत का एक नाटककार जब छोटा था तो उसने एक कुत्ते को उल्टा पकड़ लिया और अपने पिता को कहा कि इसके आगे सिर झुकाओ। जब उसके पिता नाराज हो गए और बच्चे से पूछा कि ऐसा क्यों कर रहे हो तो उसने कहा, "कल आपने कहा था कि कुत्ते को (Dog) उल्टा करो तो भगवान (God) बन जाता है।" उसके पिता को इस बात पर बहुत हंसी आई।

इस प्रकार के सृजनात्मक बच्चे अधिक चौकस, संयमी, मजा पसंद करने वाले, और हास्यास्पद





बातें करने से न कतराने वाले होते हैं। अधिकतर बच्चे जन्म से ही सृजनात्मक होते हैं परंतु बड़े होते-होते इसे खोने लगते हैं। डेविस के अनुसार पांच वर्ष की उम्र के 90% बच्चे उच्च सृजनात्मक होते हैं और 25 वर्ष की उम्र के लोगों में केवल 2% ही सृजनात्मक होते हैं। उम्र सृजनात्मकता को नाकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। एक व्यस्क जिसने बचपन में शरारतों का मजा लिया हो, जवानी में मजेदार शब्दों का प्रयोग किया हो, किशोर बच्चों से अच्छे व्यवहार की अपेक्षा करता है क्योंकि अब वह विचारों का आनंद लेने के बजाय मूल्यांकन करने लगता है। सृजनात्मकता अन्य लोगों से या अपने बराबर वालों से अलग होने की, नवचारी, असामान्य होने की क्षमता है। यह नई प्रतिक्रियाओं, नए जवाब, नए संबंध स्थापित करने की क्षमता है। बच्चा दो या अधिक असंबंधित शब्दों या विचारों को जोड़कर नए उत्तर बना सकता है। उपकरणों का नए तरीके से उपयोग करके भी बच्चे अपनेआप को अभिव्यक्त कर सकते हैं। आप अपनी कक्षा में बच्चों द्वारा दिए गए मजेदार उत्तरों का स्मरण कर सकते हैं। उदाहरण के लिए एक शिक्षक ने पूछा कि तीसरी आंख अगर हो तो कहां हो? बच्चे ने कहा छोटी अंगुली के सिरे पर। इसी प्रकार बच्चों से कहा गया कि एक नई मशीन के बारे में सोचो। एक लड़की ने कहा कि वह पौधे बनाने वाली मशीन चाहती है। आपने ऐसे कई उदाहरण अपनी कक्षा में और आसपास देखे होंगे।

मनोवैज्ञानिकों ने पाया कि ये बच्चे सामान्य से हटकर हैं जो कई बार मानदंडों और परंपराओं का पालन नहीं करते, कभी-कभी असामान्य विचार प्रकट करने की हिम्मत करते हैं जो उनके बराबर वालों या अन्य व्यक्तियों ने सोचे नहीं होते। सृजनात्मकता को कभी-कभी समस्या समाधान करने की क्षमता भी समझा जाता है जिसमें मौलिकता की विशेषता होती है। जब एक ट्रक माल से लदा हुआ सड़क के ऊपर एक पुल नीचे फंस गया और लोग उसे बाहर निकालने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे तो एक युवा लड़के ने सुझाव दिया कि टायरों की थोड़ी-थोड़ी हवा निकाल दें तो ट्रक नीचे आ जाएगा और आसानी से निकल जाएगा।

हास्य सृजनात्मकता का महत्वपूर्ण भाग है। यदि आप पहली बार चुटकुला सुनाते हो या अपना विचार एक नई परिस्थिति में प्रयोग करते हो तो यह आपकी सृजनात्मकता है। यदि आप इसकी मैग्जीन या इंटरनेट से नकल करते हो तो यह सृजनात्मकता नहीं है। लोग भले ही हंसे और आपका धन्यवाद करें। हेयकू कविताएं और लिमरिक्स व्यक्ति की सृजनात्मकता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। किसी किताब की नकल करना और दूसरों के विचारों की नकल करना सृजनात्मकता का विपरीत है। नकल मारना सृजनात्मकता के खिलाफ है। जहां अधिकतर लोग दब्बू रहकर संतुष्ट रहते हैं, कुछ लोग उनसे भिन्न होने की हिम्मत करते हैं। जब गॉस को 1 से 100 तक की संख्याओं का जोड़ बताने को कहा तो शिक्षक ने सोचा कि वह इसके लिए समय लेगा। परंतु जब युवा गॉस ने कुछ ही देर में उत्तर दे दिया तो शिक्षक हैरान हो गया। उत्तर इस प्रकार था। 50 और 100 को अलग-अलग रख दो, 1 और 99=100, 2 और 98=100, इस तरह उसने संख्याओं को जोड़े बना लिए। इस तरह जितने जोड़े बने उस संख्या को 100 से गुणा कर दिया फिर 50 और 100 जमा कर दिए। इस प्रकार 1 से 100 तक की संख्याओं का जोड़ मिल गया।





टिप्पणी

## सृजनात्मकता के प्रकार

सामान्यतः सृजनात्मकता दो प्रकार की होती है: (a) मौखिक सृजनात्मकता और (b) गैर-मौखिक सृजनात्मकता। कविताएं, कहानियां, नॉवल आदि लिखना मौखिक सृजनात्मकता है। यहां तक कि चुटकुले सुनाना; हेयकू कविताएं लिखना भी इसी प्रकार की सृजनात्मकता है। पेंटिंग, चित्रकला, मूर्तिकला, कार्टून बनाना, कोलॉज, रंगोली आदि भी सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति है। सब्जियों में से पशुओं के चित्र बनाना, किसी उपकरण को बिल्कुल अलग स्थान पर प्रयोग करना गैरमौखिक सृजनात्मकता है।

**मौखिक सृजनात्मकता**—विचारों, सोच को बोलचाल की भाषा में व्यक्त करना, अलग-अलग भाषाओं में, अनुतान व बलाघात का प्रयोग करना, गायन, संगीत रचना, वाद्ययंत्र बजाना, अलग-अलग तरीकों से कहानी सुनाना, विज्ञापन फिल्म, वृत्तचित्र सबको मौखिक सृजनात्मक श्रेणी में रख सकते हैं। विचारों और सोच को 2 या 3 आयामी रूप में, मूर्तिकला, पेंटिंग, बागवानी, बोनसाई, नेक चंद के रॉक गार्डन, अमूर्त मूर्तिकला, मूर्ति, नाटक, नृत्य, एकालोप, लोक नृत्य, लोक संगीत, ईफल टॉवर, कुतुब मीनार, ताजमहल, कमल मंदिर, आदि की वास्तु कला, विभिन्न प्रकार की डिजाइन कला जैसे फैशन, फर्नीचर, कार, मशीनरी, कम्प्यूटर मोबाइल आदि गैर-मौखिक सृजनात्मकता की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।



### प्रगति जाँच-1

एक सही उत्तर चुनें :

- वेनलेक वेंकटेश्वर और लक्ष्मी के संयुक्त नाम का उदाहरण है।  
(a) मौखिक सृजनात्मकता (b) गैर-मौखिक सृजनात्मकता  
(c) सैद्धान्तिक सृजनात्मकता (d) प्रयोगिक सृजनात्मकता
- सृजनात्मकता का विपरीत है :  
(a) पुनःस्मरण (b) पहचान करना  
(c) दोहराना (d) नकल करना
- इनमें से सृजनात्मकता से अत्याधिक जुड़ा हुआ कौन है :  
(a) विनम्रता (b) मुखरता  
(c) मौलिकता (d) आवेगशीलता

## 6.3 सृजनात्मक सोच के चरण

सृजनात्मकता कोई जन्मजात क्षमता नहीं है। आज हमारे सामने जितने सृजनात्मक उत्पाद हैं वे इस कारण बन सके कि लोगों ने उन पर व्यवस्थित ढंग से सोचा है और कार्य किया है। उनके



पास अचानक रोशनी आती होगी जिसके बारे में वे निश्चित नहीं थे। उनकी सृजनात्मक सोच में कुछ चरण होते होंगे। यहां आर्किमिडीज का उदाहरण हमारी मदद करेगा। क्रासवर्ड पहेली को हल करना इन चरणों के समान ही है। हमारे में से कईयों ने आर्किमिडीज के बारे में सुना होगा कि कैसे वह युरेका, युरेका चिल्लाते हुए एथन्स की गलियों में दौड़ा था।

सृजनात्मक सोच में शामिल विभिन्न चरण इस प्रकार हैं :

- (क) **तैयारी**—सृजनात्मक व्यक्ति अपने सारे अर्जित ज्ञान को नए तरीके से समस्या सुलझाने में लगा देते हैं या ऐसे सृजन करने में लगाते हैं जो पहले कभी न हुआ हो (वस्तुओं, चीजों या सोच, विचार को मूर्त, दृश्य रूप में सफलतापूर्वक परिवर्तित करना)। यह पूर्व तैयारी या स्पष्ट मानसिक दृष्टि से ही प्राप्त करना संभव है।
- (ख) **केन्द्रित ध्यान**—केंद्रित मस्तिष्क का ध्यान और ऊर्जा एक विशेष कार्य या घटना में एकपूर्व निर्धारित लक्ष्य या अनिर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में लगाना यानि मस्तिष्क को ज्ञात से अज्ञात की ओर केंद्रित करना।
- (ग) **समस्या से पीछे हटना ( उष्मायन )**—आर्किमिडीस समस्या से पीछे हट गया और नहाने चला गया। हालांकि चेतन मस्तिष्क में तो उसने समस्या छोड़कर दूसरा काम करने की सोची परंतु अचेतन अवस्था में तो मस्तिष्क राजा द्वारा दी गई समस्या में ही लगा रहा।
- (घ) **फलैश**—आर्किमिडीज ने समस्या का हल अचानक ही पा लिया। जब उसने नहाने के टब से पानी को बाहर गिरते हुए देखा। वे फिर 'युरेका' चिल्लाते हुए एथन्स की गलियों में दौड़ा।
- (ङ) **सत्यापन**—हम में से कईयों को नहीं पता कि वही व्यक्ति अपनी प्रयोगशाला में वापिस आया, अलग-अलग घनों के साथ संघर्ष किया और अंत में आर्किमिडीज का सिद्धांत बना डाला। उसने प्रयोगशाला में घंटों, महीनों कार्य किया होगा इस सिद्धांत का पता लगाने के लिए।

महान वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, कवियों ने अपनी सृजनात्मकता को असहयोगी वातावरण में भी बनाए रखा। उन्हें कठोर सामाजिक नियंत्रण के विरुद्ध लड़ने की क्षमता के लिए बधाई दी जानी चाहिए। आओ इन सृजनात्मक लोगों के कुछ उदाहरण देखें जिन्होंने अपनी सृजनात्मक उष्मायन दर्शाते हुए सभी दबाने वाले तंत्रों का मुकाबला किया।

एडीसन को स्कूल से निकाल दिया था क्योंकि वह विज्ञान व गणित में पीछे था, कीट्स, शैली, एडगर राइस बुरोस वर्तनी की गलतियां कर रहे थे, जेम्स वॉट को आलसी और डरावना कहा गया, परंतु इन लोगों ने हमारे जीवन को जीने लायक बनाया है। इन लोगों को अपने हृदय से धन्यवाद दें जिन्होंने समाज या व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष किया जैसे मेरी क्यूरी, हेनरी कैवेन्डिश, रविन्द्रनाथ टैगोर व अन्य कई।





## टिप्पणी

## 6.3.1 सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले कारक

आमतौर पर शिक्षा के सभी शिक्षार्थी सृजनात्मकता की प्रकृति को समझने के लिए आनुवंशिकता व पर्यावरण के बारे में सोचते हैं। इसमें आनुवंशिकता से अधिक भूमिका पर्यावरण की है। कई बच्चे जन्म से सृजनात्मक होते हैं परंतु धीरे-धीरे बड़े होते हुए अपनी सृजनात्मक क्षमता खो देते हैं। यह पर्यावरण बनता है माता-पिता शिक्षक, पाठ्यपुस्तकों, परीक्षाओं, विद्यालय के वातावरण आदि से जो सृजनात्मकता को सकारात्मक के बजाय नाकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। यह मन की कठोर और संवेदनशील ढंग से कंडीशनिंग के कारण होता है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा पहचाने गए चार महत्वपूर्ण कारक जो सृजनात्मकता को प्रभावित करते हैं, वे हैं :

- (क) सृजनात्मक उत्पाद उपागम
- (ख) सृजनात्मक प्रक्रिया उपागम
- (ग) सृजनात्मक व्यक्ति उपागम
- (घ) सृजनात्मक स्थिति उपागम या प्रेस।

इन्हें 4P's भी कहते हैं।

आइए इन चारों कारकों की जांच करें :

- (क) सृजनात्मक उत्पाद मूल्यांकन के आसानी से उपलब्ध होते हैं और उन्हें शारीरिक रूप से सुना या देखा जा सकता है। यह पता लगाने के लिए कि कौन अधिक सृजनात्मक है, हमें अच्छे मूल्यांकन मापदंड चाहिए। सृजनात्मक उत्पाद की मौलिकता का मूल्यांकन दो नजरियों से हो सकता है—पहला व्यक्ति के नजरिए से व दूसरा समाज या दोनों के नजरिए से। इनका मूल्यांकन किया जा सकता है परंतु इन्हें समय विशिष्ट होना होता है। रेडियो, जो एक समय में बहुत महत्वपूर्ण था, आज नहीं है। टेप-रिकार्डर का जब आविष्कार हुआ तो यह बहुत मौलिक विचार था परंतु आज कुछ नहीं है। जो आज मौलिक है वह कल भी या अगले वर्ष या दस वर्षों बाद भी मौलिक होगा, ऐसा जरूरी नहीं है। हर विचार की अपनी जीवन अवधि होती है।
- (ख) लोग किस प्रकार सोचते हैं, सृजनात्मक प्रक्रिया है। सृजनात्मक सोच के चरण पहले भी बताए जा चुके हैं परन्तु एक शिक्षार्थी के लिए समय तय नहीं किया जा सकता। आज 'A' को प्रकाश दिखा है कल 'B' को दिखेगा। हर शिक्षार्थी की तैयारी दूसरे से भिन्न होती है जैसे उसने महाकाव्य, नॉवल, लघु कथाए पढ़ी होगी।

धाराप्रवाह जैसे सोचने की क्षमता, लचीलापन, मौलिकता आदि एक शिक्षार्थी से दूसरे शिक्षार्थी में भिन्न होती है। धाराप्रवाह को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है—मौखिक धाराप्रवाह, संघ धाराप्रवाह। लचीलापन एक और आयाम है जिसमें बच्चे आपस में भिन्न हैं। सृजनात्मकता के क्षेत्र में शोध कार्य संसृत सोच व भिन्न सोच में अंतर





तक ले जाती हैं। लोग सृजनात्मक ढंग से कैसे सोचते हैं, इसकी समझ को पाने के लिए 'सिमुलेशन' का प्रयोग किया गया है।

- (ग) सृजनात्मक व्यक्ति उपागम का अर्थ है यह जानना कि एक व्यक्ति कैसा है? कौन सृजनात्मक है? कौन सी व्यक्तित्व की विशेषताएं हैं जिन्होंने उसे सृजनात्मक होने में मदद की? सृजनात्मकता बुद्धि में भेद एक कारक है जिस पर कार्य किया गया है। सामान्य लोगों में इन दोनों के बीच सहसंबंध का गुणांक कम है। यह करीब 0.36 है जिसका तात्पर्य है कि निम्न परंतु सकारात्मक सहसंबंध है। जिन शिक्षार्थियों का IQ 120 से ऊपर है, सहसंबंध का गुणांक जीरो है। तो परिणाम यह निकलता है कि सृजनात्मक बनने के लिए आपको कुछ मात्रा में बुद्धि चाहिए परंतु उच्च बुद्धि जरूरी नहीं कि उच्च सृजनात्मकता की गारंटी दे।

व्यक्तित्व परीक्षणों से पता चला है कि सृजनात्मक पुरुष परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील होते हैं जो स्त्रियों की विशेषता है। इसी प्रकार सृजनात्मक महिलाएं अधिक जोखिम लेने के लिए तैयार रहती हैं जो कि पुरुषों की विशेषता है। यानि सृजनात्मक पुरुष स्वभाव में स्त्रियों जैसे व सृजनात्मक महिलाएं पुरुषों जैसी होती हैं।

अन्य विशेषताएं जो कई सृजनात्मक लोगों में समान हैं, इस प्रकार है : वे प्रभावी, आत्म विश्वास से परिपूर्ण, खुलकर बोलने वाले तेज बुद्धि वाले, अधिक ध्यान मांगने वाले, आक्रामक, आत्म-केंद्रित, प्रेरक, मौखिक अभिव्यक्ति में तीव्र, चिंताएं व शिकायतें व्यक्त करने में स्वतंत्र होते हैं।

वे स्वतंत्र, पारंपरिक मजबूरियों व संकोचों से मुक्त, बौद्धिक प्रयासों में स्थिर, मनोवैज्ञानिक सोच व लचीले होते हैं। इन व्यक्तित्व गुणों वाले सभी व्यक्ति सृजनात्मक नहीं होते परंतु कुछ व्यक्ति दूसरों की तुलना में विचारों व उत्पादों के निर्माण में बेहतर होते हैं।

- (घ) सृजनात्मक स्थिति उपागम एक और तरीका है जिससे सृजनात्मक लोग प्रभावित होते हैं। कुछ आम कारक जो याद रखे जाते हैं—बचपन में दुःखः, माता-पिता का बच्चे के प्रति असाधारण आदर, निर्णय लेने के लिए विचारों व ब्राह्मांड की खोज की जल्दी मंजूरी, माता-पिता व बच्चों में निकटता की कमी, व्यक्तिगत आचार संहिता विकसित करने पर जोर, एक देश से दूसरे देश, एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति, एक स्थान से दूसरे स्थान तक अक्सर घूमने का अनुभव जो अधिक स्वतंत्रता विकसित करता है, कुछ शर्मीलापन, अकेलापन, बचपन व किशोरावस्था में अकेलापन, व्यावसायिक पहचान जल्दी बनाने में दबाव की कमी आदि।

सृजनात्मक व्यक्तियों की अभिव्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होती है यानि यह अत्याधिक व्यक्तिपरक है। एक सृजनात्मक व्यक्ति किस प्रकार स्वयं को व्यक्त करेगा, यह पहले से बताना मुश्किल है क्योंकि उसकी सृजनात्मक क्षमता उसमें स्वभाव, मूड, मूल्यों और उनसे भी अधिक प्रेरणा के साथ जुड़कर एक उम्मीद नहीं कर सकते कि उनका बचपन दुखी रहा होगा। अच्छे व्यक्तित्व के गुणों का विकास, एक सृजनात्मक उत्पाद का निर्माण, ये अद्भुत स्थितियां हैं जिनसे सच होने की कल्पना नहीं की जा सकती।





टिप्पणी

## प्रगति जाँच-2

सही उत्तर छांटें।

1. सृजनात्मकता का अध्ययन करने वाले उपागमों को याद रखने के लिए उन्हें इस रूप में लिखा जाता है :  
(a) 4P उपागम (b) 4B उपागम (c) 4A उपागम (d) 4C उपागम
2. सृजनात्मक सोच के कितने चरण हैं?  
(a) 4 (b) 5 (c) 3 (d) 2
3. संसृत सोच को इस उदाहरण में सर्वोत्तम तरीके से व्यक्त किया जाता है।  
(a) स्कूल (b) निबंध (c) गृहकार्य (d) प्रमेय
4. यदि हर 3 वर्ष में माता-पिता का स्थानांतरण होता है, यह बच्चों के इस दृष्टि से फायदेमंद है—  
(a) बुद्धि (b) चिंतनशील सोच (c) सृजनात्मकता (d) तार्किक सोच

## 6.4 पाठ्यक्रम व पाठ्येतर क्रियाकलापों द्वारा सृजनात्मकता विकसित करने की रणनीतियां

शैक्षिक क्षेत्रों के संदर्भ में कक्षा में करवाए जाने वाले क्रियाकलापों को 'शैक्षिक' क्रियाकलाप कहते हैं। सामान्यतः ये पाठ्यक्रम विषयों जैसे विज्ञान, गणित, सामाजिक ज्ञान आदि का भाग होती हैं। पाठ्येतर क्रियाकलाप शिक्षकों द्वारा करवाए वे क्रियाकलाप हैं जो पाठ्यक्रम क्रियाकलापों के बाहर हैं जैसे खेल-कूद, वाद-विवाद, संगीत, क्लब क्रियाएं आदि। कई ऐसे क्रियाकलाप हैं जो पाठ्यक्रम व पाठ्येतर दोनों क्रियाकलापों का भाग हैं। किसी विशेष विषय को पढ़ाते समय करवाई गई माथापच्ची शैक्षिक हो सकती है। एक क्रियाकलाप शैक्षिक या सह-शैक्षिक हो सकता है और यह शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह इस कैसे करवाती है।

सृजनात्मकता विकसित करने के लिए अनेक क्रियाकलाप हैं। 1980 में बनाए गए एक अनुमान के अनुसार सृजनात्मकता विकसित करने के 700 तरीके हैं। इनमें दो प्रकार में बांटा जा सकता है: (i) तकनीकें और (ii) शैक्षिक सामग्रियां। तकनीकें व्यक्ति विशेष होती हैं और व्यक्ति से व्यक्ति में भिन्न होती हैं। शैक्षिक सामग्री को जीरोक्स करवा कर शोधकर्ता उसका मैनुअल पढ़कर शिक्षार्थियों के समूह पर प्रयोग कर सकता है। आओ दोनों के दो उदाहरण लें।

### 6.4.1 विचार मंथन ( माथा पच्ची )

यह तकनीक एलेक्स ओसबार्न द्वारा विकसित की गई। एक मनोवैज्ञानिक के रूप में उसने



अध्ययन किया कि लोग कैसे सोचते हैं। हम में से अधिकतर अपनी सोच का तुरंत मूल्यांकन करते हैं, विचार के जन्म लेने से काफी पहले। हम उन्हें छोड़ देते हैं यह सोचकर कि दूसरे लोग (आपके माता-पिता, भाई-बहन, सहयोगी या बॉस आदि) क्या सोचेंगे। इसलिए ओसबार्न ने सोच को दो अवस्थाओं में विभाजित किया है—(क) विचार की अवस्था (ख) मूल्यांकन अवस्था। विचार की अवस्था में उसने चार सिद्धांत दिए हैं :

1. मुक्त रूप से विहवल होने पर बल-विचार कैसे भी हो, अजीब, पागलपन, महंगा, व्यक्त करना।
2. आलोचना से बचना-स्वयं या दूसरों की आलोचना नहीं करनी।
3. गुणवत्ता, गुणवत्ता को जन्म देती है-विचारों की संख्या अधिक होने से अच्छे विचारों की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए अधिक संख्या में विचारों का स्वागत है।
4. लिपट लेने की अनुमति है-आप अपने विचारों को दूसरों के विचारों से जोड़ सकते हो।

अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों ने विचार की अवस्था के लिए हरी बत्ती व मूल्यांकन के लिए लालबत्ती का प्रयोग किया है। विभिन्न पृष्ठभूमि के 6-8 लोगों को एक गोले में बिठाकर स्वतंत्र रूप से, मुक्त होकर, बिना किसी से डरे, विचारों को व्यक्त करने के लिए कहा जाता है। प्रतिभागियों के जाने बिना ये विचार टेप-रिकार्डर द्वारा या किसी स्टेनोग्राफर द्वारा रिकार्ड कर लिए जाते हैं।

मूल्यांकन अवस्था में कई अधिकारी और कुछ प्रतिभागी सभी रिकार्ड किए गए विचारों पर कार्यान्वयन की दृष्टि से सोच-विचार करते हैं। इनमें कई विचार बिल्कुल नए होते हैं जिनके बारे में उस संस्था के अधिकारियों ने कभी सोचा नहीं होगा।

### 6.4.2 गुणों को सूचीबद्ध करना व परिवर्तित करना

सृजनात्मक सोच एक व्यवस्थित सोच है और विचार स्वर्ग से नहीं गिरते। इसलिए उनके गुणों की सूची बनाना और परिवर्तन व्यवस्थित ढंग से किए जाते हैं। हर विषय के कुछ गुण होते हैं जिनका अर्थ है गुणवत्ता, विशेषताएं या विशेषताओं की गुणवत्ता। एक कैलेण्डर के गुण हो सकते हैं उसका डिजाइन, रंग-संयोजन, कलात्मक व सुंदर तरीके से तथ्यों की प्रस्तुती (संख्याएं, महीनों के नाम, हर पेज पर विषय संबंधी चित्र जैसे वन्य जीवन, प्रकृति, त्योहार, बच्चे आदि। और आकार-कैलेण्डर नवाचार द्वारा कई आकारों में डिजाइन किए जा सकते हैं-गोलाकार, वर्गाकार, आयताकार या कोई अन्य आकार)।

यदि हम कैलेण्डर बनाते समय हम नवाचार और सृजनात्मकता का प्रयोग करें तो कई सुंदर, आकर्षक व रूचिकर विकल्प विकसित हो सकते हैं। एक हाथ से बने कैलेण्डर को स्वयं डिजाइन करने का प्रयास करो। इसे अपने तरीके से अपनी कल्पना व सृजनात्मक क्षमता का प्रयोग करके बनाओ।





टिप्पणी

### 6.4.3 सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण सामग्री

कई शोधकर्ताओं व सृजनात्मक मनोवैज्ञानिकों ने कई शिक्षण सामग्रियों का विकास किया है। कोविंगटन, कर्च फील्ड, टोरेंस, क्रापले और अन्य कई लोगों ने इस क्षेत्र में काम किया है। चलो उन पर समूहों में विचार करें ताकि वे इकट्ठे प्रयोग हो सकें। भारत में निरफराके, देशमुख, सुब्रामानिया पिल्ललाई, भास्कर, जेरिअल व अन्य ने शिक्षार्थियों में सृजनात्मक सोच को बढ़ाने के लिए कार्य किया।

- (क) **पहेली सुलझाना**—एडीसन के पुत्र चार्ल्स के अनुसार एडीसन को पहेलियां सुलझाना बहुत अच्छा लगता था। वह स्वयं को सृजनात्मक रूप से कई समस्याओं व विचारों के लिए खुला रखता था। अधिकतर पहेलियों का सुराग होता है। सुराग को पहचानकर सुलझाने से पहेली सुलझ जाती है। नहीं तो आप वही पुराने ढंग से सोचते रहेंगे और कभी भी हल नहीं कर पाएंगे। पीटर पॉपर और अन्य ने पहेलियों पर पुस्तकें लिखी हैं। भास्कराचार्य द्वारा “अमर लीलावती” भारतीय परिस्थितियों में पहेलियों का संकलन है। यहां आप “इलस्ट्रेटिड वीकली ऑफ इण्डिया” में आइज़ाक एसीमोव का पेज पुनः स्मरण कर सकते हैं।
- (ख) **पहेली सुलझाना**—एलेक्सेंडर, द ग्रेट ने भारतीय ऋषि को पहेलियां बनाने व सुलझाने की प्रतियोगिता में आमंत्रित किया। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में पहेलियां साहित्य का भाग रही हैं। दादियां, नानियां अपने पोते-पोतियों को पहेलियां हल करने को कहती थीं। भारत के सभी राज्यों में अपनी-अपनी भाषाओं में पहेलियां हैं। पहेली हल करना व पहेली बनाना, दोनों ‘सिनेक्टिक’ (एक सृजनात्मकता को बढ़ावा देने वाली तकनीक जो विदेश में विकसित हुई है) के दो सिद्धांतों के समान हैं। वे परिचित को विचित्र बना देते हैं और विचित्र को परिचित। अधिकतर पहेलियां उपमा के प्रयोग से बनी हैं, चाहे वे सीधी हों, सरल, प्रतीकात्मक या कल्पना हों।
- (ग) **भिन्न सोच के प्रश्न**—ये प्रश्न एक से अधिक उत्तर मांगते हैं। बच्चे ढेर सारे भिन्न उत्तर देंगे और वे सभी सार्थक होंगे। आज की परीक्षा व्यवस्था में हम एक ही उत्तर की अपेक्षा करते हैं, वह भी शिक्षक द्वारा लिखवाया हुआ।
- (घ) **रहस्य योजनाएं**—ये परिस्थितियां हैं जहां बच्चों को चोरी या खून से संबंधी समस्या को हल करने के लिए जासूस की तरह काम करना होता है। बच्चे इस प्रकार की समस्याएं सुलझाने में आनंद लेते हैं।
- (ङ) **परिणाम स्थितियां**—बच्चों को असंभव परिस्थितियां दी जाती हैं कि सोचो यदि ऐसा हुआ तो क्या परिणाम होंगे। बच्चे इन परिणामों को सोचने का आनंद लेते हैं और कुछ तो ऐसे-ऐसे परिणाम बताते हैं कि बड़े भी सुनकर दंग रह जाते हैं।
- (च) **कहानी लेखन**—यह सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रकार है जहां बच्चे दी गई कहानी या नावल का शीर्षक बताते हैं, कहानी का अंत बताते हैं, अधूरी कहानी को पूरा करते हैं या स्वयं पूरी कहानी लिखते हैं।



- (छ) **कविता लेखन**—यह भी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक प्रकार है जहां बच्चे दी गई कविताओं के असामान्य शीर्षक देते हैं, आधी लिखी कविता को पूरा करते हैं या स्वयं पूरी कविता लिखते हैं।
- (ज) **पहेली निर्माण**—बच्चे इस प्रकार की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को करने में आनंद लेते हैं जहां वे अधूरी पहेली को पूरा करते हैं पूरी पहेली को एक शीर्षक, वस्तु या नाम के लिए लिखते हैं।

#### 6.4.4 कुछ और विचार

नीचे सृजनात्मक सोच विकसित करने के लिए कुछ और विचार दिए गए हैं जिन्हें विभिन्न लेखकों ने प्रयोग करके देखा है:

- (क) कभी-कभी 3-4 वर्ण दिए जाते हैं और हर बच्चे को उन्हें पूरा करने के लिए कहा जाता है कि हर वर्ण से एक शब्द बनाओ ताकि उन शब्दों से एक वाक्य बन जाए।
- (ख) बच्चों को शीर्षक दिए जाते हैं जैसे समानता, लोकतंत्र, अहिंसा आदि और उन्हें उन शीर्षकों पर पेन्टिंग या पिकचर बनानी होती है।
- (ग) हर संस्कृति में परियां की कहानियां होती हैं जिनसे कल्पना का विकास होता है। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, और अन्य भाषाओं में ऐसी परी-कथाएं होती हैं। यहां विज्ञान कथाएं भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। जूलस वर्न, एल्डोस हक्सले, कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने विज्ञान-कथाएं विकसित की हैं।
- (घ) **विचार पकड़ने का तंत्र**—हम सब जानते हैं कि एक जागने की अवस्था है और एक सोने की। इन दोनों के बीच की अवस्था सृजनात्मक सोच के लिए बहुत उपजाऊ है। बच्चों को कहा जाता है कि वे अपने बिस्तर के पास एक छोटी कॉपी और पैन रखें। जैसे ही सोते समय कोई विचार आए, उसे कॉपी में लिख लें। इन विचारों के वे बाद में और सोच-समझ कर विकसित कर सकते हैं।

#### 6.4.5 प्रश्न पूछना

शिक्षकों और शोधकर्ताओं ने कई प्रश्न विकसित किए हैं, जिन्हें सृजनात्मकता विकसित करने में प्रयोग किया जा सकता है।

1. **पुनः परिभाषित करने वाले प्रश्न**—इस प्रकार के प्रश्नों में बच्चों को एक वस्तु, जंतु, व्यक्ति या घटना को पुनः परिभाषित करने के लिए कहा जाता है। ये प्रश्न एक नया दृष्टिकोण विकसित करते हैं और बच्चे असामान्य गुणों के प्रति जागरूक होते हैं और स्पष्ट से हटकर देखने लगते हैं।
 

(क) एक फाउंटैन पैन नल की तरह क्यों है?





टिप्पणी

- (ख) एक घड़ी कैलेंडर से कैसे भिन्न है?
- (ग) चेहरा और टीवी कैसे समान हैं?
2. **परिणाम आधारित प्रश्न**—ये प्रश्न इस प्रकार की परिस्थितियां या घटनाएं उजागर करती हैं जो पहले कभी नहीं हुई या कभी नहीं होंगी। ऐसे प्रश्न बच्चों को कल्पना करने व परिणाम लिखने के लिए कहते हैं अगर ये घटनाएं घटित हो जाएं।
- (क) मान लो पृथ्वी पर पेट्रोल बिलकुल समाप्त हो जाए।
- (ख) यदि गाना गाना कानून के विरुद्ध हो तो?
- (ग) मान लो सभी लोग पागल हो जाएं।
3. **काल्पनिक प्रश्न**—इस तरह के प्रश्नों में बच्चों को उपलब्ध डेटा (उनका अधिगम) से परे जाकर उन्हें अपनी व्यक्तित्व के गुणों के साथ संश्लेषित करना होगा।
- (क) यदि तुम किसी बैंक के मैनेजर होते?
- (ख) यदि तुम अचानक एक चींटी बन जाते?
4. **उत्तेजक प्रश्न**—बच्चों को एक गद्यांश पढ़ाकर उन्हें उससे संबंधित उत्तेजक प्रश्न पूछ सकते हैं। ये बच्चों को गद्यांश से आगे बढ़ कर कल्पना करने के लिए प्रेरित करते हैं।
- (क) अगर गांधीजी आज जीवित होते तो क्या करते?
- (ख) क्या आप समझते हैं कि आजकल के जमाने में भगवान कृष्ण सही प्रकार के नेता होते?
5. **नए संबंधों की मांग करने वाले प्रश्न**—कभी-कभी ऐसे प्रश्न हास्याप्रद या पागलों जैसे लगते हैं और बच्चों में हताशा उत्पन्न कर सकते हैं परंतु बाद में वे इनका आनंद लेते हैं।
- (क) क्या महीना एक मील है?
- (ख) क्या दिन एक सप्ताह है?
6. **भिन्न प्रश्न**—ये प्रश्न बच्चों को एक स्थाई पैटर्न (एक प्रश्न का एक उत्तर) तोड़ने के लिए तैयार करते हैं जिसमें वे एक प्रश्न के कई सार्थक उत्तर दे पाते हैं। ऐसी प्रासंगिक प्रक्रियाओं में समय को बाधक कारक नहीं बनने देना चाहिए।
- (क) एक मिट्टी में दबा शहर पता लगा। इस शहर के मिट्टी में दबने के क्या कारण हो सकते हैं?
- (ख) एक टैंक मगरमच्छों से भरा है। टैंक के बीचों-बीच एक पोल (डंडा) है। आपको एक रस्सी दी गई है जिससे आपने पोल के बीच एक गांठ बांधनी है।



7. चुनौतीपूर्ण मान्यताओं पर प्रश्न—ये प्रश्न बच्चों में दुनिया की एक कार्यात्मक समझ विकसित करने में सहायता करते हैं। लंबे समय से चली आ रही मान्यताओं पर प्रश्न पूछे जाते हैं। इन प्रश्नों द्वारा बच्चों के मस्तिष्क की कसरत होती है और एक नए दृष्टिकोण का विकास होता है।

(क) 'क्यों' वाले प्रश्न जैसे—हमें माता-पिता का आदर क्यों करना चाहिए?

(ख) नारों, ब्रांड नामों, लेबलों को चुनौती देने वाले प्रश्न।

8. भविष्य की समस्याएं सुलझाने वाले प्रश्न—इन प्रश्नों में बच्चे डिजाइन और पुनः डिजाइन करते हैं जिनसे काफी नवाचार का प्रयोग होता है। वे बच्चों को वस्तुओं को अलग ढंग से देखने व अलग तरीकों से सोचने का मौका देते हैं।

(a) एक मशीन से सुरंग बनाओ बिना सड़क पर यातायात को परेशान किए।

(b) एक सेब तोड़ने की मशीन

(c) एक बेहतर छतरी

(d) एक नई दूध की बोतल

जब हम ऐसे सवाल पूछते हैं, कक्षा में हलचल हो जाती है और शिक्षक को यह सह लेना चाहिए। उसे बच्चों को लिखने के लिए कहना चाहिए। अगर एक बच्चे ने ऊंचा कुछ बोला तो बाकी सोचना बंद कर देंगे। यह क्रिया इस प्रकार होनी चाहिए:

(a) लेखन मंच

(b) समूह बनाने का मंच (उत्तरों को बोर्ड पर लिखें)

(c) पुनः संयोजन मंच (बच्चों को सोच कर विचारों को पुनः संयोजित करने को कहना, विचार मंथन (माथा पच्ची) की लिफ्ट लें।

### 6.4.6 कुछ और क्रियाकलाप

निम्नलिखित गतिविधियां विभिन्न स्रोतों से ली गई हैं और इन्हें बच्चों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में प्रयोग किया जा सकता है। वे इस प्रकार हैं :

1. संवेदनशीलता प्रशिक्षण

(क) आप बादलों में क्या रूप देख रहे हो?

(ख) आप बिल्डिंग में कौन सी ध्वनियां सुन रहे हो?

(ग) दालों को छूकर उनके नाम बताने हैं।

(घ) जब आप भ्रमण के लिए जाते हो, कौन-कौन सी गंध महसूस करते हो।





## टिप्पणी

## बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करना

2. **अवलोकन**—बच्चों को एक पैन या रूमाल देकर अवलोकन की सूची बनवाओ। डा. सीबर्ग ने एक मोमबत्ती और एक जलती हुई मोमबत्ती को देखकर 52 अवलोकन लिखे।
3. **वर्गीकरण**—बच्चों को 1 से 100 तक की संख्याओं को वर्गीकृत करने के लिए कहना या उन्हें स्वयं को वर्गीकृत करने के लिए कहना।
4. **अनुप्रास**—बच्चों को एक ही वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों को छांटकर फिर उनसे वाक्य बनाने के लिए कहना। उदाहरण के लिए कालेज, कॉफी, क्लब कक्षा।
5. **बहु प्रयोग**—बच्चों को अखबार, खाली रिफिल आदि के सामान्य तथा असामान्य प्रयोगों की सूची बनाने के लिए कहें।
6. **काल्पनिक कहानी कहना**—गणेश, स्प्रिंक्स आदि की तरह बच्चों को मनुष्य, पशु, पक्षी के संयोजन की कल्पना करना, उसका चित्र बनाना, और उस पर कहानी लिखना कह सकते हैं कि वह कैसे उत्पन्न हुआ।
7. **आविष्कार**—बच्चों को एक नए पकवान के बारे में सोचने को कह सकते हैं। उन्हें कह सकते हैं कि वे सामग्री की सूची बनाएं, बनाने की प्रक्रिया लिखें, स्वाद बताएं और उसका एक नया नाम दें।
8. एक पहचान की वस्तु जैसे ईट, टीन का डिब्बा, एक क्लस्टर, एक सुई आदि के जितने संभव प्रयोग हो सकते हैं, उनकी सूची बनाएं।
9. बच्चों को उन संभव शब्दों की सूची बनाने को कहें जिन्हें वे हर विषय के लिए अनेक शीर्षक जैसे आकार, रंग, भावनाएं आदि के साथ जोड़ सकें।
10. बच्चों को सोचने के लिए कहें कि वे प्रकृति में रंग और भोजन की जितनी उपमाएं हो सकती हैं, लिखें। उदाहरण के लिए घास जैसे लेट्यूस के साथ है वैसे बर्फ दूध के लिए।
11. एक शब्द के लिए बच्चों को जितने संभव हों उतने समानार्थक शब्द बनाने को कहें और फिर विलोम शब्द लिखने को कहें।
12. बच्चों को कुछ स्कू और लकड़ी के टुकड़े मेक-केना सैट में डालकर नए आकार बनाने को कहें।
13. बच्चों को लकड़ी के तख्ते से धन और आधे धन काटने के लिए कहें। वे इन्हें पुनः जोड़कर कई आकार बना सकते हैं।
14. बच्चों को टेनग्राम या सात टुकड़ों की पहेली से अधिकतम संभव आकार बनाने को कहें।
15. बच्चों को लकीरें खींचकर नई-नई आकृतियां बनाने को कहें। (असंरचित संवेदना के लिए जैसे : 6. > O } X etc.)
16. अखबार व मैगजीन में दी गई क्रासवर्ड पहेलियों को हल करने के लिए कहें।



17. बच्चों को कहें कि वे दूर से जुड़े या नहीं जुड़े शब्दों को जोड़कर नए शब्द बनाएं।  
उदाहरण के लिए-वस्तुओं और पशुओं की सूची से नाम जोड़कर नए शब्द बनाना।
18. बच्चों को एक वर्ण लेकर उसके आगे-पीछे वर्णमाला से वर्ण जोड़कर नए शब्द बनाना।
19. दो नामों के भाग जोड़कर नया नाम बनाने के लिए कहना।  
उदाहरण के लिए—
  - (i) पोटेटो और टोमेटो – पोमेटो
  - (ii) सेन्डलवुड और टरमेरिक – सेन्टूर।
  - (iii) संजना और शोडाना – संशो
20. बच्चों को नई मशीन डिजाइन करने के लिए कहना।  
उदाहरण (i) कार्ड बांटने की मशीन (ii) पौधे लगाने की मशीन।
21. बच्चों को पुराने उपकरण व पदार्थ पुनः डिजाइन करने के लिए कहना।  
उदाहरण (i) डस्टर (ii) पैन
22. बच्चों को आसपास से लेबल, ब्रांड नाम पता लगाने को कहना जिन्हें स्वीकारा गया है बिना किसी प्रश्न के।  
जैसे— (i) ट्रकों पर पब्लिक कैरियर  
(ii) बसों के पीछे ध्वनि के हार्न।

## 6.5 सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए अधिगम सामग्री का विकास

जब शिक्षक सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में रुचि लेता है तो उसे बहुत धैर्य, खुला मस्तिष्क रखना होता है और उसे अपना गुस्सा, जलन, हताशा आदि को नियंत्रित करना होगा आदि।

कभी-कभी उसे बच्चों को सामने अभिनय भी करना पड़ता है जैसे वह भी हैरान हैं। बच्चों को सोचने के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता चाहिए, वे कैसे भी बैठें, दूसरे शब्दों में उसे कक्षा में अनुशासनहीनता बर्दाश्त कर लेनी चाहिए। टोरेंस और मेयर्स ने बच्चों में सृजनात्मकता बढ़ाने हेतु शिक्षकों के लिए कुछ सिद्धांत दिए हैं—

- (क) बच्चों के विचारों का सम्मान करें
- (ख) कल्पनाशील व असामान्य विचारों का सम्मान करें





टिप्पणी

बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करना

(ग) शिक्षार्थियों को दर्शाएं कि उनके विचारों का मूल्य है।

(घ) स्वयं शुरू किए गए अधिगम को प्रोत्साहित करें व उसका मूल्यांकन करें।

(ङ) कारणों और परिणामों के साथ मूल्यांकन को जोड़ें।

ये सिद्धान्त शिक्षकों द्वारा अधिगम सामग्री विकसित करते समय और गैर-सरकारी संस्थाओं के सदस्यों पर भी लागू होता है। उनके द्वारा विकसित निर्देशन सामग्री या क्रियाकलापों में निम्न विशेषताएं होनी चाहिए :

- क्रियाकलापों के कई संभावित उत्तर होने चाहिए।
- क्रियाकलाप खुले अंत वाली होनी चाहिए, यानि उसका एक उत्तर नहीं होना चाहिए।
- क्रियाकलापों में पकड़ होनी चाहिए ताकि बच्चों को सोच में लचीलापन मिल सके।
- क्रियाकलाप व्यक्तिगत क्षमताओं को विकसित करने के लिए हो सकते हैं जैसे प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता, जिज्ञासा, दृढ़ता, विस्तार और समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता।
- क्रियाकलाप भले ही तुरंत प्रयोग न हो पाएं, फिर भी कक्षा में उनका मूल्य (महत्त्व) है।
- आप कई पहेलियां, रहस्यमयी योजनाएं, और भिन्न सोच के प्रश्न एकत्र करके कक्षा में प्रयोग के लिए रख सकते हैं।
- क्रियाकलापों में कल्पना पर बल होना चाहिए और रूढ़िवादी व्यवहार पर जोर नहीं देना चाहिए।
- क्रियाकलाप सृजनात्मकता पर शोध कर रहे शोधकर्ताओं के मॉडलों पर आधारित हो सकते हैं।
- ये क्रियाकलाप पाठ के विस्तार का भाग हो सकते हैं।
- शिक्षक द्वारा कक्षा में काल्पनिक कहानियां अवश्य सुनाई जानी चाहिए ताकि उनमें नेता बनने की क्षमता का विकास हो।
- कोई भी क्रियाकलाप सृजनात्मकता बढ़ाने वाला क्रियाकलाप बन सकता है बशर्ते शिक्षक इसे अलग पहलू से देखे।
- सरल क्रियाएं सृजनात्मकता बढ़ाने वाली क्रियाएं बन सकती हैं यदि उनमें नए आयामों को जोड़ दिया जाए या कुछ भाग निकाल दिए जाएं।
- अपनी संस्कृति या कहानियों में से उन उपाख्यानों को एकत्र करें जिनमें कुछ प्रेरणा या सृजनात्मकता का रंग है।
- महाकाव्यों और संस्कृति के महान साहित्य से कहानियों की किताबें एकत्रित व संग्रहित की जा सकती हैं।



यहां एडवर्ड डि बोनो के पार्श्व सोच पर कार्य महत्वपूर्ण है। उसकी परिकल्पना थी कि हम बच्चों को सोचना नहीं सिखाते। भारतीय संदर्भ में यह और भी सही है क्योंकि हम रटने पर और परीक्षा पास करने पर जोर देते हैं। कक्षाएं पाठ सुनने के कक्ष बन गए हैं न कि जांच के केंद्र।

## 6.6 सृजनात्मकता बढ़ाने में आईसीटी की भूमिका

सृजनात्मकता विकास के लिए कई आईसीटी उपकरण उपलब्ध है जिन्हें शिक्षक प्रयोग कर सकता है। कुछ उपकरण तत्काल उपलब्ध हैं जैसे ब्लैक बोर्ड, पोस्टर, चार्ट, आडियो कैसेट प्लेयर, ओवर हैड प्रोजेक्टर, और कभी-कभी कम्प्यूटर। इनमें से प्रत्येक को ऊपर लिखे क्रियाकलाप प्रस्तुत करते समय प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए ब्लैक बोर्ड/चार्ट पर चित्र प्रस्तुत किया जा सकता है जिस पर बच्चों ने कहानी लिखनी है, एक अधूरी कहानी को आडियो कैसेट प्लेयर से सुनाया जा सकता है ताकि बच्चे उसको सुनकर पूरा कर सकें। कम्प्यूटर के पर्दे पर कई चित्र दिखाए जा सकते हैं जो कुछ अमूर्त हैं और बच्चों को उनकी व्याख्या करने के लिए कह सकते हैं। कई पहेलियां वेबसाइटों पर उपलब्ध हैं जिन्हें बिना किसी की सहायता के व्यक्तिगत रूप से हल किया जा सकता है। कम्प्यूटर पर चित्र द्वारा रहस्यमयी स्थितियां और भिन्न सोच के प्रश्न पूरे जा सकते हैं ताकि बच्चे समस्या को समझें और उसका सृजनात्मक हल ढूंढें। कम्प्यूटर पर रूपात्मक संश्लेषण पर कार्य हो सकता है जहां मापदंडों का विवरण निकाल कर, सूचनाओं को जोड़कर एक नया उत्तर बनाया जा सकता है। ये केवल कुछ सुझाव हैं और कई शिक्षक अपनी सृजनात्मकता के प्रयोग से तथा आईसीटी उपकरणों के प्रयोग से विकसित कर सकते हैं।

### प्रगति जाँच-3

- विचार मंथन (माथा पच्ची) का विकास ..... ने किया।
 

(a) कोविंगटन	(b) क्यूटेक फील्ड
(c) ओसबोर्न	(d) क्रॉपले
- पहेली निर्माण व टांकने की क्रिया ..... तकनीकों के समान हैं।
 

(a) सिनेक्टिक	(b) विचार मंथन
(c) गुणों को सूचीबद्ध करना व परिवर्तन करना	(d) पार्श्व सोच
- पहेली को सुलझाने के लिए ..... की ज़रूरत होती है।
 

(a) शब्द	(b) पकड
(c) गतिरोध	(d) स्कू





टिप्पणी

4. पहला मनोवैज्ञानिक जिसने सभी मनोवैज्ञानिकों का ध्यान 1950 में सृजनात्मकता की ओर करवाया .....
  - (a) क्रापले
  - (b) टॉरेंस
  - (c) गिलफोर्ड
  - (d) खाटेना
5. जो शिक्षक बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करना चाहते हैं को ..... करना होगा।
  - (a) बच्चों को नाराज
  - (b) अधिकारियों को नाराज
  - (c) अनुशासन का बर्दाश्त
  - (d) अनुशासनहीनता को बर्दाश्त
6. विज्ञान कथाएं शिक्षार्थियों में ..... विकसित करती हैं।
  - (a) तार्किक सोच
  - (b) कल्पना शक्ति
  - (c) निगमनात्मक सोच
  - (d) आगमनात्मक सोच

## 6.7 सृजनात्मकता का मूल्यांकन

गिलफोर्ड और टॉरेंस सृजनात्मकता का मूल्यांकन करने वाले पहले मनोवैज्ञानिक थे।

उन्होंने पाया कि कई क्षमताएं मिलकर सृजनात्मकता बनाती हैं। वे हैं :

1. प्रवाह—एक बड़ी संख्या में प्रतिक्रियाओं को सोचने की क्षमता।
2. लचीलापन—विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं के बारे में सोचने की क्षमता।
3. मौलिकता—एक चतुर और आसामान्य तरीके से सोचने की क्षमता
4. जिज्ञासा—जिज्ञासावश कई प्रश्न पूछने की क्षमता
5. दृढ़ता—समस्या सुलझाने का निरंतर प्रयास करते रहने की क्षमता बेशक लंबे समय से असफल होते रहें।
6. विस्तार—दी गई परिस्थिति या समस्या में विवरण जोड़ने की क्षमता समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता एक स्त्री संबंधी विशेषता है जबकि जोखिम उठाना एक पुरुष संबंधी विशेषता है। सृजनात्मक व्यक्तियों में ये दोनों विशेषताएं होती हैं। इन सभी विशेषताओं को मिलाकर बनती है सृजनात्मकता। केवल एक विशेषता से सृजनात्मकता नहीं बनती। वैज्ञानिक, कवि, वास्तुकार, विज्ञापन वाले लोगों में अन्य लोगों से अधिक सृजनात्मकता होती है।



इन विशेषताओं के आधार पर परीक्षणों द्वारा सृजनात्मकता का मूल्यांकन किया जा सकता है। अवलोकन द्वारा तथा “आप द्वारा की गई क्रियाएं” चेक लिस्ट द्वारा भी आकलन किया जा सकता है। एक प्रशिक्षित पर्यवेक्षक बच्चे को असाधारण उत्तर देते हुए, उपकरण का विकास करते हुए और ऐसे अन्य कार्य करते हुए देख सकता है। वह अधिक सृजनात्मक बच्चों को बाकियों से अलग कर सकता है।

**परीक्षण तकनीकें**—‘टॉरेंस टेस्ट ऑफ क्रिएटिव थिंकिंग’ का ऊपर दी गई क्षमताओं के आधार पर विकास किया गया है। गिलफोर्ड के परीक्षण “स्ट्रक्चर ऑफ इन्टेलेक्ट’ मॉडल पर आधारित हैं। भारत में बकर मैहदी और बी.के. पासी सृजनात्मकता परीक्षण विकसित करने वाले पहले व्यक्ति हैं। पासी के सृजनात्मकता परीक्षण में निम्न उप-परीक्षण हैं :

- समस्या पहचानने का परीक्षण**—इस परीक्षण में 4 प्रश्न हैं और शिक्षार्थियों को एक पोस्टकार्ड या चप्पल के दोष और समस्याएं लिखने को कहा जाता है।
- असामान्य उपयोग परीक्षण**—इस परीक्षण में 2 प्रश्न हैं और बच्चों को एक कपड़े के टुकड़े और एक बोतल के सामान्य व असामान्य प्रयोग लिखने को कहा जाता है।
- परिणाम परीक्षण**—इस परीक्षण में शिक्षार्थियों को असंभव स्थितियों के परिणाम लिखने को कहा जाता है उदाहरण के लिए (i) मान लो सभी लोग पागल हो जाएं (ii) मान लो सभी औरतें पुरुष बन जाएं आदि।
- जिज्ञासा परीक्षण**—इस परीक्षण में शिक्षार्थियों को एक तालमापी और सूचनापत्रक पर कई प्रश्न लिखने को कहा जाता है।
- दृढ़ता परीक्षण**—इस परीक्षण में शिक्षार्थियों को घन, आधे घन व घनाभों का सैट दिया जाता है। उन्हें इनसे कई भिन्न आकृतियां बनानी होती हैं।
- विस्तार परीक्षा**—शिक्षार्थियों को अधूरे चित्र दिए जाते हैं, उन्हें उनमें विवरण जोड़ने के लिए कहा जाता है।

अन्य शोधकर्ताओं ने भी कई परीक्षण टॉरेंस और गिलफोर्ड के परीक्षणों के आधार पर बनाए हैं।



#### प्रगति जाँच-4

- यदि कोई शिक्षार्थी विविध प्रतिक्रियाओं के बारे में सोचता है, यह क्षमता ..... कहलाती है।  
(a) प्रवाह (b) लचीलापन (c) मौलिकता (d) दृढ़ता
- एक चतुर, नया, असामान्य प्रतिक्रिया ..... कहलाती है।  
(a) प्रवाह (b) लचीलापन (c) मौलिकता (d) दृढ़ता
- सृजनात्मकता के परीक्षण विकसित करने वाले पहले शोधकर्ता ..... थे।





टिप्पणी

बच्चों में सृजनात्मकता का विकास करना

- (a) गिलफोर्ड और टर्मैन (b) टॉरिस और टर्मैन  
(c) गिलफोर्ड और कैटल (d) गिलफोर्ड और टॉरिस

4. यदि एक शिक्षार्थी चप्पल के 7 दोष बताता है और दूसरा 3 दोष, इस क्षमता को .....  
..... कहते हैं।

- (a) प्रवाह (b) लचीलापन (c) मौलिकता (d) दृढ़ता

## 6.8 सारांश

सृजनात्मकता नए उत्तर देने, नए संबंध बताने की क्षमता है। इसका उदाहरण सहित अर्थ बताया गया है। सृजनात्मकता के आकलन के लिए परीक्षण प्रयोग किए जाते हैं क्योंकि व अधिक संख्या में शिक्षार्थियों पर प्रयोग किए जा सकते हैं। ये परीक्षण हैं—समस्या पहचानने का परीक्षण, असामान्य प्रयोग परीक्षण, परिणाम परीक्षण, जिज्ञासा परीक्षण, दृढ़ता परीक्षण और विस्तार परीक्षण।

सृजनात्मक सोच प्रेरणा से मिलकर एक व्यवस्थित सोच है।

सृजनात्मकता के चरण समझने के लिए आर्किमिडीज का उदाहरण उत्कृष्ट है। ये चरण हैं—तैयारी, केंद्रित ध्यान, समस्या से दूर हटना (उष्मायन), फ्लैश और सत्यापन।

अध्यापक शिक्षक सुझाव दे सकता है कि आनुवंशिकता तथा पर्यावरण सृजनात्मकता को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण सृजनात्मकता को अधिक प्रभावित करता है। आसानी से याद करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने 4P's सूचीबद्ध किए हैं।

वे हैं : सृजनात्मक उत्पाद उपागम, सृजनात्मक प्रक्रिया उपागम, सृजनात्मक व्यक्ति उपागम, सृजनात्मक प्रस्तुति या स्थिति उपागम। सृजनात्मकता को बढ़ावा देने वाली विभिन्न तकनीकों व क्रियाकलापों की चर्चा की गई है। निर्देशन सामग्री के विकास हेतु सुझाव प्रदान किए गए हैं।

## 6.9 प्रगति जाँच के उत्तर

प्रगति जाँच-1

1. a 2. b 3. c

प्रगति जाँच-2

1. a 2. b 3. d 4. c

प्रगति जाँच-3

1. c 2. a 3. b 4. c 5. d 6. b



प्रगति जाँच-4

1. b      2. c      3. d      4. a

टिप्पणी

## 6.10 इकाई अंत परीक्षण के उत्तर

1. सृजनात्मक व्यक्ति की विशेषताएं लिखो।

सृजनात्मक व्यक्ति में अधिकतर विशेषताएं होती हैं जैसे प्रमुखता, आत्म-विश्वास, स्पष्टवादी, तीक्ष्ण बुद्धि, आक्रामक, आत्म-केन्द्रित, प्रेरक, मौखिक रूप से धारा प्रवाह, चिंताओं व शिकायतों को व्यक्त करने से मुक्त, स्वतंत्र और पारंपरिक मजबूरियों और अवरोधों से मुक्त।

2. तीन अभ्यास लिखे जिन्हें पार्श्व सोच विकसित करने में प्रयोग कर सकते हैं।

आपकी सूची में हो सकते हैं—(i) 'क्यों' वाले प्रश्न (ii) 'कहां' वाले प्रश्न और मान्यताओं को चुनौती देना।

3. विचार मंच के अन्तर्गत माने जाने वाले सिद्धांत बताओ।

विचार मंच में चार सिद्धांत हैं :

1. मुक्त रूप से विहवल होने पर बल
2. आलोचना से बचना
3. गुणवत्ता, गुणवत्ता को जन्म देती है
4. लिफ्ट लेने की अनुमति है।

4. सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में प्रयोग आने वाले प्रश्नों की सूची बनाओ। विविध प्रश्नों का विकास सामग्री में दिए गए सुझावों के अनुसार किया जा सकता है—जैसे पहेलियां; पज्जल, रहस्य योजनाएं, 'मान लो' प्रश्न

## 6.11 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- बकर रोमन एस (1962) 'यूअर की टू क्रिएटिव थिंकिंग', न्यूयार्क, हार्पर एण्ड रो पब्लिशर्स
- भास्कर एस (1990) 'द इफेक्टिव इन्सट्रक्शनल मेटिरियल ऑन वर्बल क्रियटिविटी', नई दिल्ली, उप्पल पब्लिशिंग हाउस
- डि बोनो (1970) 'लेटरलथिंकिंग' : ए टेक्टबुक ऑफ क्रियटिविटी, लंदन; वर्डलॉक एजुकेशनल लिमिटेड





टिप्पणी

- गिलफोर्ड, जे.पी. (1967) 'द नेचर ऑफ ह्यूमन इंटेलीजेंस', न्यूयार्क, मेक ग्रा हिल
- गिलफोर्ड, जे.पी. (1970) 'ट्रेस ऑफ क्रिएटिविटी' इन वरनॉन पी.ई. (एड) क्रिएटिविटी, इंग्लैंड, पेंगविन मॉडर्न साइकोलॉजी रीडिंग्स पासी., बी.के. 'पासी टेस्ट ऑफ क्रिएटिविटी (वर्बल एंड नॉन वर्बल)', नेशनल साइकोलॉजिकल कारपोरेशन, आगरा 1979
- टॉरेंस, इ.पी. 'गाइडिंग क्रिएटिव टेलेंट', प्रेन्टिस हॉल, इंग्लैंड, 1962
- विलियमस, एफ.ई. (एड) 'क्लास रूम आइडियास फॉर एनकरेजिंग थिंकिंग एण्ड फीलिंग' डी.ओ.के. पब्लिशर्स, बफैलो, न्यूयार्क, 1970

## 6.12 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. सृजनात्मक व्यक्ति की विशेषताएं लिखो।
2. तीन अभ्यास लिखो जिन्हें पार्श्व सोच विकसित करने में प्रयोग कर सकते हैं।
3. विचार मंच के अंतर्गत माने जाने वाले सिद्धांत बताओ।
4. प्रश्नों की सूची बनाओ जिन्हें सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में प्रयोग कर सकते हैं।
5. निम्नलिखित का प्रयास करें :
  - (a) अपने शहर/राज्य में प्रचलित पहलियों के सेट को एकत्र करो। इन्हें निर्देशन सामग्री के रूप में कक्षा में प्रयोग करो जैसा कि इस इकाई में बताया गया है।
  - (b) एक छोटी, अधूरी कहानी लिखो। इसे बच्चों को सुनाओ या आडियोटेप में रिकार्ड करके सुनाओ। बच्चों से कहानी को पूरा करने के लिए कहो। इस अभ्यास से पता लगाओ कि कैसे बच्चे भिन्न प्रकार से और सृजनात्मक तरीके से सोचते हैं।
  - (c) बच्चों को सोच कर लिखने को कहें 'क्या होगा यदि ---- व्हील चेयर पर है।' उत्तर का विश्लेषण करें।